सचित्र जीवन साखीयाँ

बाबा दीप सिंघ जी शहीद
बाबा बंदा सिंघ जी बहादर
भाई मनी सिंघ जी शहीद



डा. अजीत सिंघ औलख

सचित्र जीवन साखियाँ

बाबा दीप सिंघ जी शहीद
बाबा बंदा सिंघ जी बहादर
भाई मनी सिंघ जी शहीद

डा. अजीत सिंघ औलख



प्रकाशक:

भाई चतर सिंघ जीवन सिंघ

अमृतसर।

ISBN : 81-7601-943-9

प्रथम संस्करण 2010

भेटा : 120/-



प्रकाशक:

भाई चतर सिंघ जीवन सिंघ

बाजार माई सेवां, अमृतसर।

फोन : 91-183-2547974, 2557973, 5011003 फैक्स : 91-183-5017488

ई-मेल : csjssales@hotmail.com csjspurchase@vsnl.com

csjsexports@vsnl.com

वैबसाईट : www.csjs.com

Printed in India

मुद्रक: जीवन प्रिंटर्ज़, अमृतसर। फ़ोन : 91-183-2705003, 5095774

बाबा दीप सिंघ जी शहीद

जन्म

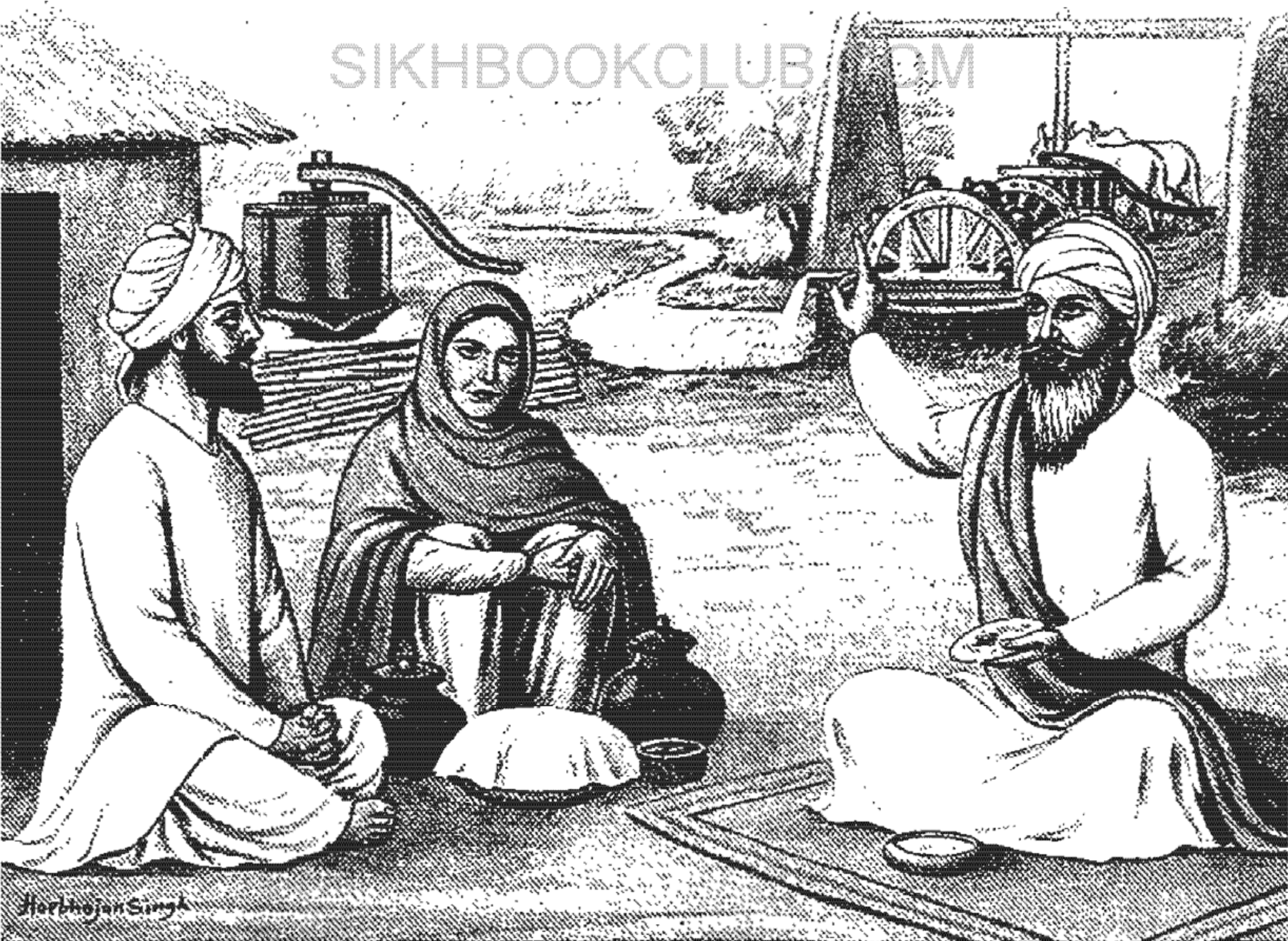
बाबा जी का जन्म, पिता भाई भगतू एवं माता जीऊणी के घर 26 जनवरी, 1682 को गाँव पहूविंड ज़िला अमृतसर में हुआ। आप माता-पिता के इकलौते पुत्र थे। आप जी के जन्म के बारे में कई कहानियाँ प्रचलित हैं। कहा जाता है कि भाई भगतू और माता जीऊणी के विवाह को पंद्रह साल बीत जाने के बाद भी कोई औलाद नहीं थी हुई। आप दोनों सदस्य गुरुमुख सिक्ख थे। इसलिए वे केवल गुरु तेग बहादर जी और उनके बाद गुरु गोबिन्द सिंघ को ही मानते थे। गुरसिक्ख होने के कारण वह प्रभु की रज़ा में रहकर ही खुश थे। इसलिए वे कब्रिस्तान, प्रेत, कब्रों एवं धागे-ताबीज वाले साधु-फकीरों को नहीं मानते थे। पर अधिक उम्र होने के कारण यह चिंता अवश्य करते थे कि उनकी कुल आगे कैसे चलेगी।

उनके पास काफी भूमि थी, जिस कारण किसी बात की कमी नहीं थी। अधिकतर दुधारू पशु रखने के कारण दूध घी की कोई कमी नहीं थी। उनका अपना निजी कुआँ था और कुएँ के समीप विश्राम करने के लिए उन्होंने एक बढ़िया झोंपड़ी भी बनाई हुई थी। झोंपड़ी की दाईं दिशा में लकड़ी का कुआँ था और उसकी बाईं दिशा में एक लकड़ी का बेलन स्थापित किया हुआ था। शिशिर ऋतु में वे बेलन चलाकर गुड़ बनाया करते थे। कई बार रात को गुड़ बनाते देर हो जाती तो भाई भगतू और उनका नौकर उस झोंपड़ी में ही रात काट लेते। सुबह उठकर नौकर चारा काट कर छकड़े पर रखकर गाँव को ले जाता। भैंसों को चारा डालकर भोजन करके छकड़ा जोड़कर वह पुनः वापिस आ जाता।

एक दिन भाई भगतू झोंपड़ी के बाहर धूप में बैठा था। बेलन के समीप छिले हुए गन्नों का गट्ठा पड़ा हुआ था और नौकर के न आने के कारण वह उसका इंतजार कर रहा था। पर दिल में वह बड़ी गहरी सोच में डूबा था कि यदि उसके घर भी पुत्र होता तो वह इन नौकरों पर निर्भर न रहता। वह सोच में लीन ही था कि एक सफेद दाढ़ी वाले गुरसिक्ख ने उनको आकर बड़े आदर से प्रणाम किया और कहने लगा, "महापुरुष! आप सतिगुरु के सिक्ख प्रतीत हो रहे हो, मगर चेहरे पर बड़ी उदासी छाई हुई है।" भाई भगतू संत जी को देखकर हैरान हो गया। वह तुरंत उठा और संत को प्रणाम करके कहने लगा, "यह हमारा अहोभाग्य है, आज सुबह-सुबह ही संतों ने दर्शन दिए हैं।" वह झोंपड़ी में से एक चादर लाया और आंगन पर बिछाकर संतों को बैठने के लिए विनती की। संत जी भी बड़े प्रेम से चादर पर बैठ गए।

तब तक माता जीऊणी रोटियाँ, दही और लस्सी लेकर पहुँच गईं। संत जी को बैठे देखकर वह अति प्रसन्न हुई और लस्सी की मटकी और रोटियाँ रखकर, उन्होंने संत जी को शीश नवाया और उनको भोजन करने का आग्रह किया। तब संत जी ने कोई बहाना न किया और स्पष्ट ही कह दिया, "भोजन करने ही तो यहाँ आया हूँ, बड़ी भूख लगी थी।" माता जीऊणी अति प्रसन्न हुई। उन्हें यूं लगा जैसे परमेश्वर ही मानव रूप में उनके कुएँ पर आ गया हो। वह

थाली तो कोई लाई नहीं थीं, इसलिए मकई की रोटियों पर साग के ऊपर माखन रखकर उन्होंने संत जी के हाथों पर रख दीं। फिर दही और लस्सी का कटोरा भरकर आगे रख दिया। संत बड़े प्रेम से भोजन करते गए और बीच-बीच कुछ बातें भी करते गए। वह कहने लगे, "क्या बात है अभी तक बेलन नहीं चलाया।" भाई भगतू ने बताया कि नौकर अभी गाँव से नहीं आया, जब आएगा तो फिर काम शुरु करेंगे। संत जी फिर कुएँ की ओर संकेत करके कहने लगे, "बच्चे कहाँ गए हैं, कुएँ पर कोई चहल-पहल दिखाई नहीं दे रही।" माता जीऊणी की आँखों में अश्रु भर आए, बड़ी उदास स्वभाव में वे बोलीं, "पन्द्रह साल विवाह को हो गए, प्रभु ने अभी पुत्र की देन प्रदान नहीं की।" यह बात सुनकर संत जी मुस्कुरा कर बोले, "इसमें उदास होने की क्या आवश्यकता है। गुरसिक्ख सदा ईश्वरेच्छा में रहते हैं। प्रभु के घर कोई कमी नहीं, आपके घर भी एक ऐसा पुत्र पैदा होगा, जो एक बड़ा शूरवीर योद्धा एवं विद्वान होगा। वह आपकी कुल का नाम सृष्टि रहने तक कायम रखेगा।" नौकर के पहुँच जाने पर वे बेलन चलाने ही लगे थे कि संत जी लुप्त हो गए। अगले साल उनके घर प्रभु ने एक पुत्र की देन प्रदान की, जिसका नाम उन्होंने 'दीप' रखा।



यात्रा आनंदपुर साहिब

पुत्र की देन मिलने पर भाई भगतू एवं माता जीऊणी प्रसन्न हो गए। उन्होंने अपने सच्चे गुरु का कोटि-कोटि धन्यवाद किया। घर में दुधारू पशु थे, खाने-पीने की कोई कमी नहीं थी, इसलिए दीप शीघ्र युवा हो गया। वह पाँच वर्ष की आयु से ही अपने पिता जी के साथ कामकाज में सहयोग देने लग गया। जब वह दस-बारह वर्ष का हुआ तो सुडौल शरीर एवं आरोग्य होने के कारण कबड्डी खेलता एवं मल्लयुद्ध में भाग लेता। उसकी हम-उम्र के बच्चे उसे अपना नेता मानते थे। पर घर के कामकाज में भी ढील नहीं आने देता था। अब स्वयं हल चलाता और कुएँ से फसलों को पानी देता और बेलन पर गन्ना पीसता। भाई भगतू को नौकर रखने की भी आवश्यकता नहीं थी, पर अपने इकलौते पुत्र से वह अधिक काम लेना नहीं चाहते थे। वह उसे गुरु-घर के साथ शामिल करना चाहते थे, इसलिए जितनी भी वाणी उन्हें मौखिक याद थी वह दीप को सुनाते और कंठ करवाते रहते। इस तरह दीप में गुरु प्रेम की चाह बढ़ती गई। उस समय ही 1699 की वैसाखी वाले दिन गुरु गोबिंद सिंघ जी ने खालसा पंथ की सृजना की। उन्होंने पाँच प्यारों को अमृतपान करवा कर तदन्तर स्वयं उनसे पान किया और बाद में हजारों सिक्खों को अमृतपान करवाया। खालसा के सृजना की खबर समूचे भारत में फैल गई। शासक एवं भूस्वामी उदास हो गए। उनको अनुमान हो गया कि अब निम्न जातियों के लोग, जो सदियों से उनकी सेवा कर रहे थे, अब उनके सन्मुख होकर तलवार चलाएँगे। यह खबर पहूविंड भी पहुँच गई। दीप ने भी खबर को सुना तो खुशी में झूम उठा। उसने पूरी बात अपने माता-पिता को बताई। वह कहने लगा, "गुरु जी ने आलौकिक खालसा पैदा किया है। वह जिसे भी अमृतपान करवाते हैं वह बकरी से शेर बन जाता है। हमारे गाँव के कुछ लोग इस वैसाखी पर आनंदपुर साहिब अमृतपान करने जा रहे हैं, हमें भी अवश्य जाना चाहिए।" दीप के माता-पिता उसकी बात सुनकर बहुत खुश हुए। भाई भगतू कहने लगा, "हमें चिरकाल हो गया गुरु के दर्शन किए, हमने तो अनेक वर्षों का अपनी कमाई का दसवाँ भाग भी नहीं भेजा। इसलिए अपना छकड़ा साथ ले चलते हैं और उस पर गेहूँ की बोरियाँ, गुड़ एवं घी इत्यादि रख लेंगे। कुछ वृद्ध औरतें भी ऊपर बैठ जाएँगी। तुम अपना घोड़ा साथ ले लेना।" दीप अपने पिता की बात सुनकर बहुत प्रसन्न हुआ। वह उसी समय अपने मित्रों-दोस्तों को आनंदपुर की यात्रा के बारे में बताने चला गया।

उस समय दीप की आयु लगभग अठारह वर्ष की थी। वह बड़ा पुष्ट हट्टा कट्टा युवक था। उसके लम्बे ऊँचे कद, चौड़ी छाती एवं सुडौल शरीर को देखकर लोग दंग रह जाते थे।

अपने घर की जिम्मेदारी उन्होंने पड़ोसियों को सौंप दी और कामकाज के लिए दो नौकर रख दिए। उन्होंने नौकरों को वेतन की पेशगी देकर प्रसन्न कर दिया।

कुछ दिनों के बाद ही तैयारियाँ शुरू हो गईं। अपने छकड़े को उन्होंने बढ़ई से ठीक

करवाया और पहियों को तेल दिया। फिर छकड़े पर गेहूँ की बोरियाँ, गुड़, घी इत्यादि लाद लिया और कुछ वस्त्र साथ रख लिए। अमृतपान के बारे में उनको श्रद्धालुओं ने बताया था कि दो कछहरे, एक कृपाण, एक कंघा, एक कड़ा और सिर पर पगड़ी होनी चाहिए। बाल और रोम काटना बिल्कुल निषेध है। भाई भगतू ने दीप के बाल तो शुरू से ही नहीं काटे थे, इसलिए वह सिर पर जूड़ा करता था। जब सब तैयारियाँ हो गईं तो माता जीऊणी एवं उनकी कुछ साथी औरतें छकड़े पर बैठ गईं। भाई भगतू छकड़ा चलाने लग गया, दीप एवं उसके कुछ साथी घोड़ों पर सवार साथ चल दिए। उन सभी के पास कृपाणें एवं नेज़े भी थे। दरिया ब्यास को पार करके वे दुआबे में पहुँच गए। वहाँ कुछ देर विश्राम करके भोजन किया और फिर चल पड़े। वे धीरे-धीरे अपने मार्ग चलते पाँचवें दिन आनंदपुर साहिब पहुँच गए।

सर्वप्रथम वे गुरु जी के दर्शनों को गए और शीश नवाया। दीप जब गुरु जी को शीश नवाने गया तो वह काफी समय गुरु जी की ओर एकटक देखता रहा। गुरु जी मुस्कुराए और कहने लगे, "गुरुमुख! क्या नाम है तेरा।" भाई दीप ने बड़ी नम्रता से कहा, "सच्चे गुरु, दीप।"



गुरु जी की सेवा में

वैसाखी से एक दिन पूर्व ही घोषणा कर दी गई कि जिस सिक्ख ने अमृतपान करना हो वह सुबह स्नान करके कछहरा, कंघा, कड़ा, कृपाण लेकर दीवान में जाकर अपना नाम पता लिखवा दे।

भाई भगतू, माता जीऊणी एवं दीप ने भी अपने नाम दीवान में जाकर लिखवा दिए।

वैसाखी वाले दिन आसा दी वार की समाप्ति के उपरांत कवि दरबार का आयोजन किया गया, जिसमें वीरतापूर्ण कविताएँ गाई गईं। फिर सभी सिक्खों को यह समझाया गया कि जिन्होंने अमृतपान करना हो वह दीवान हाल में पहुँच जाएँ और जैसे उनका नाम बोला जाए वे गुरु जी से अमृतपान करें। भाई भगतू, माता जीऊणी एवं दीप भी दीवान हाल में पहुँच गए। दीवान हाल में बैठे वे बड़ी श्रद्धा से प्रभु के नाम का जाप करते रहे और अपनी बारी की प्रतीक्षा करते रहे। जब उनके नाम बोले गए तो वे भी अमृतपान के लिए गुरु जी के पास पहुँच गए। जब दीप की बारी आई तो उसकी आँखें फिर गुरु जी के साथ दो चार हुईं। गुरु जी दीप के कद एवं अथाह श्रद्धा को देखकर फिर मुस्कुरा दिए।

जब तीनों ने अमृतपान कर लिया तो उनके नाम भाई भगत सिंघ, माता जीवन कौर एवं भाई दीप सिंघ हो गए। अब उन्होंने नवीन वस्त्र धारण किए हुए थे और गले में कृपाणें सुशोभित की हुई थीं। उनको स्वयं ही अनुभव हो रहा था जैसे सचमुच वे एक बकरी से शेर बन गए हों।

जब सभी ने अमृतपान कर लिया तो गुरु जी ने फिर सिक्ख रहत मर्यादा के बारे में समझाया। उन्होंने कहा, "सिक्खों को पाँच कक्कार– कंघा, कड़ा, कछहरा, कृपाण एवं केशों की रीत रखनी चाहिए। शरीर का कोई रोम नहीं कटवाना, तम्बाकू एवं मदिरा का सेवन नहीं करना, हलाली मांस नहीं खाना एवं पराई नारी को कुदृष्टि से नहीं देखना। इसके उपरांत कब्रगाह, समाधि, पत्थरों, मूर्तियों एवं तस्वीरों की पूजा नहीं करना । हर समय गुरु की वाणी का नाम जपना और बाँट कर खाना है।"

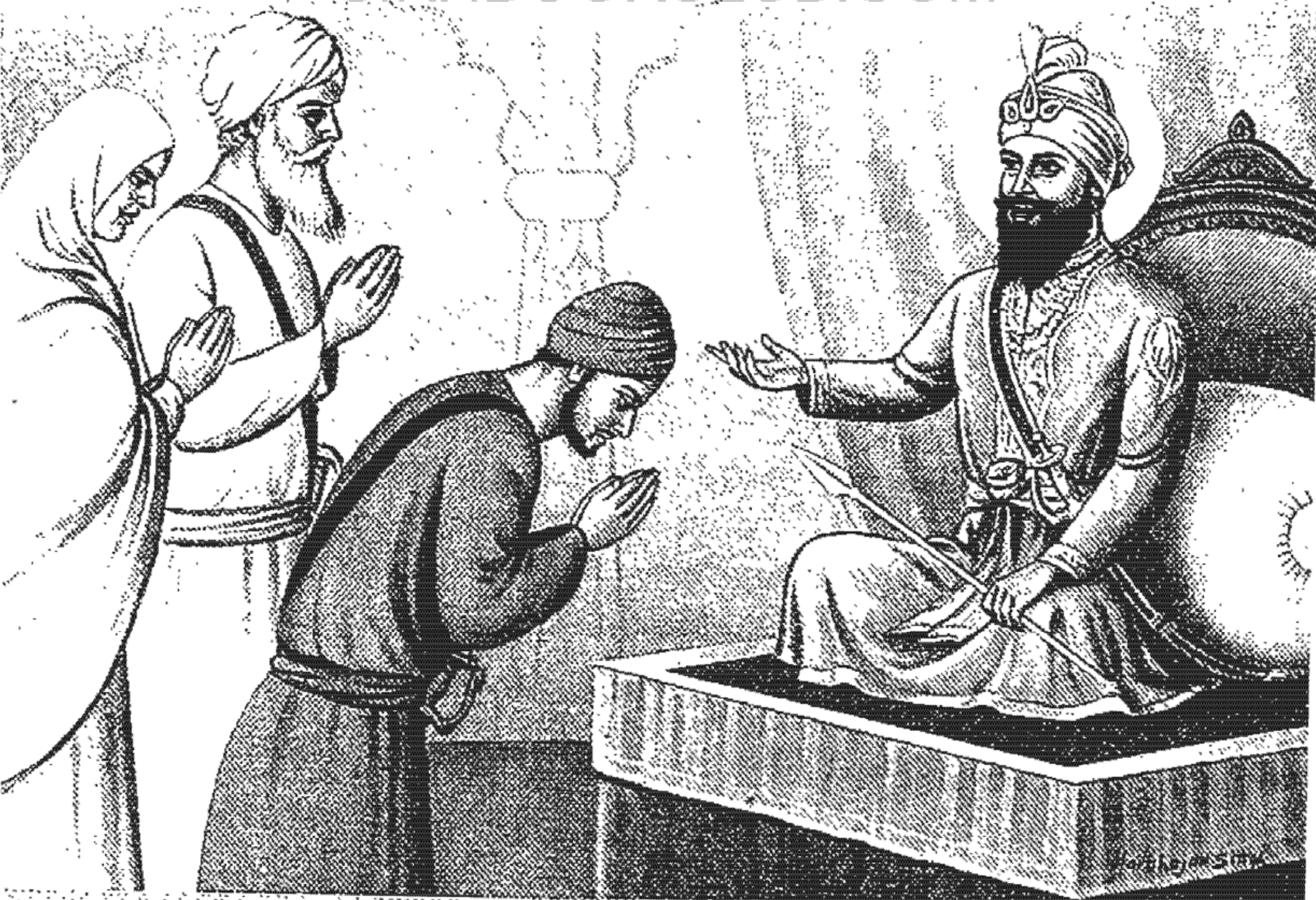
भाई भगत सिंघ, माता जीवन कौर और भाई दीप सिंघ कुछ दिन आनंदपुर साहिब ही ठहरे। वे वहाँ लंगर में सेवा करते और वहीं भोजन कर लेते। पर भाई दीप सिंघ गुरु जी की फौज को देखने जाता, उनके हथियारों का अध्ययन करता। उसे पता लगा कि वे सभी योद्धा अपना घर–बार छोड़कर आए थे, गुरु की फौज के नियमित सदस्य थे। उनको हर प्रकार के शस्त्र चलाने का प्रशिक्षण दिया जाता था। घुड़सवारी, तलवारबाजी, तीरअंदाजी इत्यादि के मुकाबले भी करवाए जाते थे। इसके उपरांत उसने देखा कि इन सिक्खों को विद्या भी पढ़ाई जाती थी। पंजाबी, हिन्दी, फारसी एवं संस्कृत के विद्वान रखे हुए थे, जो एक पहर रोज पढ़ाते थे। इस तरह खालसा दल कोई अनपढ़ या नौसिखियों की फौज नहीं थी, अपितु उसमें बड़े

...ख्यात विद्वान थे। यह सब कुछ देख भाई दीप सिंघ ने यह दृढ़ निश्चय कर लिया कि वह गुरु के पास ही रहेगा और विद्या पढ़ेगा और शस्त्र चलाने में निपुण बनेगा। उसने अपने मन की बात अपने माता-पिता को बता दी, परन्तु उन्होंने यह बात स्वीकार न की। वे कहने लगे, "तू हमारा इकलौता पुत्र है, अब गाँव जाकर तेरा विवाह करेंगे, हम भी छोटे-छोटे पौत्रे-पौत्रियों के साथ खेलकर दिल बहलाएँगे।"

उनके बहुत विवश करने पर भाई दीप सिंघ गाँव जाने को तैयार हो गया। पर चलने से पहले उसने गुरु जी से अनुमति लेने की विनती की। भाई भगत सिंघ ने यह बात स्वीकार कर ली। उस समय गुरु जी भी भिन्न-भिन्न प्रांतों के श्रद्धालुओं को विदा कर रहे थे। जब वे भाई दीप सिंघ के पास आए तो भाई दीप सिंघ उनके चरणों पर गिर पड़ा और कहने लगा, "सतगुरु! मैं गाँव नहीं जाना चाहता, मुझे अपनी सेवा में ही रखो।"

गुरु जी ने भाई दीप सिंघ को पकड़कर अपनी छाती से लगाया और भाई भगत सिंघ एवं माता जीवन कौर को कहने लगे, "आप गाँव जाओ, भाई दीप सिंघ को हमारे पास ही रहने दो, यह सिक्ख कौम का दीप बनेगा। ऐसे शूरवीर की हमें अति-आवश्यकता है।"

भाई भगत सिंघ और माता जीवन कौर गाँव चले गए और भाई दीप सिंघ गुरुसेवा में जुट गया।



प्रशिक्षण एवं शिक्षा

जब गुरु गोबिंद सिंघ ने भाई भगत सिंघ एवं माता जीवन कौर को यह आदेश कर दिया कि वे अपने पुत्र भाई दीप सिंघ को आनंदपुर रहने दें तो माता-पिता कुछ मायूस हो गए, परन्तु साथ ही उन्हें यह उम्मीद भी हो गई कि सतिगुरु के पास रहकर शिक्षा व प्रशिक्षण प्राप्त करेगा और एक महान पुरुष बनेगा। सतिगुरु जिसकी ओर दया-दृष्टि कर दें उसका लोक-परलोक दोनों ही संवर जाते हैं। इसलिए खुशी-खुशी गुरु जी से विदा लेकर अपने पुत्र को प्रेम करके वे वापिस पहूविंड की ओर चल पड़े। वे छकड़े पर बैठ गए और अपने अन्य संगी-साथियों को साथ बिठा लिया, घोड़ा भाई दीप सिंघ ने अपने पास ही रख लिया।

भाई दीप सिंघ गुरु गोबिंद सिंघ की संत-सिपाही फौज में शामिल हो गया। वह सुबह उठता और स्नान करके कीर्तन सुनने चला जाता। जब सतिगुरु का दरबार लगता तो वह बड़े प्रेम से उनके प्रवचन सुनता।

गुरु गोबिंद सिंघ ने अपने सिक्खों को पढ़ाने के लिए पंजाबी, हिन्दी, अरबी, फारसी एवं संस्कृत के विद्वान अध्यापक भी नियुक्त किए थे। ये अध्यापक कीर्तन की समाप्ति के बाद पढ़ाई का प्रबंध करते और सभी सिक्ख बड़ी श्रद्धा एवं प्रेम से पढ़ते। गुरु जी का यह संकल्प था कि हथियारों के प्रशिक्षण के साथ पढ़ाई भी अति अनिवार्य है, एक शिक्षित मनुष्य ही अच्छा नागरिक बन सकता है। भाई दीप सिंघ ने पहले पंजाबी सीखना आरम्भ किया, पंजाबी उन्होंने अति शीघ्र पढ़ ली और उनकी लिखाई बहुत सुन्दर थी। इसके बाद उन्होंने ब्रज भाषा, संस्कृत, फारसी एवं अरबी की शिक्षा प्राप्त की।

उनके अध्यापक उनकी भूरि-भूरि प्रशंसा करते थे और इस संबंधी गुरु गोबिंद सिंघ जी को भी सूचित करते रहते थे। गुरु जी कहते थे, "यह हमारा दीप है जो स्वयं पढ़ाई करके इसकी रौशनी को हमारे सिक्खों में वितरित करेगा।"

शस्त्र विद्या के प्रशिक्षण के लिए गुरु जी ने चोटी के सेनापति भर्ती किए हुए थे। वे उस्ताद गुरु जी के सैनिक सिपाहियों को घुड़सवारी, नेज़ाबाजी, तलवार चलाना, तीरअंदाजी एवं बंदूक चलाने का प्रशिक्षण देते थे। साथ ही साथ अभ्यास भी होते थे और घुड़दौड़, नेज़ाबाजी, तीरअंदाजी एवं तलवार चलाने के मुकाबले भी करवाए जाते थे। भाई दीप सिंघ शरीर के बड़े पुष्ट एवं बलवान थे इसलिए उन्होंने अपने लिए एक भारी दुधारी तलवार तैयार करवाई। युद्ध के मैदान में कोई भी दुश्मन उनकी दुधारी तलवार की वेग को सहन नहीं कर सकता था।

भाई दीप सिंघ को आखेट का बड़ा शौक था। जब गुरु जी आखेट करने जाते तो वे भाई दीप सिंघ को भी साथ ले जाते।

एक बार जब वे आखेट के लिए गए तो जंगल में से अकस्मात ही एक शेर ने निकल कर उनके घोड़े पर हमला कर दिया। भाई दीप सिंघ उसी समय घोड़े से छलांग लगाकर शेर के

सम्मुख हो गए। शेर तो तुरंत घबरा ही गया। दुधारी तलवार को देखकर वह भागना चाहता था, पर चारों तरफ शिकारी देखकर उसके पास भाई दीप सिंघ पर हमला करने के सिवाय अन्य कोई चारा न रहा। छलांग लगाकर वह भाई दीप सिंघ पर झपट पड़ा। पर दीप सिंघ ने उसके हमले को अपनी ढाल पर रोक लिया और दस सेर से अधिक भार वाली दुधारी तलवार का ऐसा वार किया कि शेर के दो टुकड़े हो गए। गुरु साहिब ने यह सारा नजारा अपनी आँखों से देखा। वे घोड़े से उतरकर आए और उन्होंने भाई दीप सिंघ को आशीष देकर कहा, "भाई दीप सिंघ तू सिक्ख कौम का एक महान शूरवीर होगा, मुझे तुझ पर बहुत गर्व है।"

भाई दीप सिंघ हाथ जोड़कर खड़ा हो गया, "सतिगुरु जी यह सब कुछ आपकी ही बख्शिश है। मैं तो जब यहाँ आया था, एक चिड़िया भी मार नहीं सकता था। पर आपके अमृत ने मुझ में इतना बल भर दिया है कि अब मुझ में अथाह आत्म-विश्वास आ गया है।"

भाई दीप सिंघ के घोड़े की पीठ से रक्त बह रहा था। शेर ने उसे नाखुन मार दिए थे। उसने अपने अंगोछे से रक्त साफ किया और घोड़े पर सवार हो गया। वह अपने घोड़े को बहुत प्रेम करता था। अपने आवास पहुँच कर उन्होंने घोड़े का उपचार किया जो कुछ दिनों में फिर स्वस्थ हो गया।



माता सुंदरी जी और माता साहिब कौर जी को दिल्ली पहुँचाना

आनंदपुर साहिब के किले को मुगल सेना और पहाड़ी राजाओं की सेना ने छः सात महीने घेरा डालकर रखा, पर गुरु जी ने हार न मानी और न ही किला खाली किया। फिर मुसलमानों ने कुरान की कसम एवं हिन्दुओं ने गाय माता की सौगन्ध खाकर विनती की कि आप किला खाली कर दो हम आपका पीछा नहीं करेंगे और न ही आपको तंग करेंगे। गुरु गोबिंद सिंघ पहले तो मानते नहीं थे, परन्तु सिक्खों द्वारा जोर देने पर उन्होंने किला खाली करने का फैसला कर लिया।

इस कार्य के लिए सबसे अधिक जरूरी था कि माता सुंदरी एवं माता साहिब कौर को किसी सुरक्षित स्थान पर पहुँचा दिया जाए। उनके लिए दो पालकियाँ तैयार की गईं और रात होते ही इन डोलियों को किले में से बाहर निकलवा दिया। उनकी रक्षा के लिए भाई दीप सिंघ एवं भाई मनी सिंघ को कुछ योद्धा साथ देकर भेजा गया।

रोपड़ में गुरु साहिब के कई श्रद्धालु सिक्ख रहते थे। भाई दीप सिंघ एवं भाई मनी सिंघ इन सिक्खों को जानते थे। इसलिए सावधानीपूर्वक वे रोपड़ पहुँच गए। वे गुरु साहिब के एक श्रद्धालु सिक्ख के पास पहुँच गए और उसे किला खाली करने के बारे में पूरी कहानी सुनाई। उस सिक्ख ने सबकी भरपूर सेवा की और माताओं के लिए एक बैलगाड़ी तैयार करवाई। भाई दीप सिंघ एवं भाई मनी सिंघ को उसने भेष बदलने के लिए कहा और उनको दिल्ली में भाई जवाहर सिंघ की हवेली में ठहरने के लिए भेज दिया।

समस्त मुगल फौज उस समय गुरु गोबिंद सिंघ जी को गिरफ्तार करने में व्यस्त थी। इसलिए दिल्ली तक जाने में उनको कोई मुश्किल पेश न आई। उन्होंने दोनों माताओं को भाई जवाहर सिंघ की हवेली में सकुशल पहुँचा दिया।

भाई दीप सिंघ दिल्ली में कई दिन ठहरे परन्तु उनको कोई संतोषजनक खबर न मिल सकी कि गुरु गोबिंद सिंघ, उनकी सेना, साहिबजादों एवं माता गुजरी के साथ क्या बीती थी।

आखिर एक दिन भाई दीप सिंघ ने माता सुंदरी के पास विनती की, "गुरु साहिब का अभी तक कोई पता नहीं चला, मैं कुछ समय अपने गाँव जाना चाहता हूँ, इस तरह मार्ग में मुझे गुरु साहिब के बारे में भी पता लग सकेगा। अगर कुछ पता लगा तो मैं तुरंत आपको बताने आ जाऊँगा।"

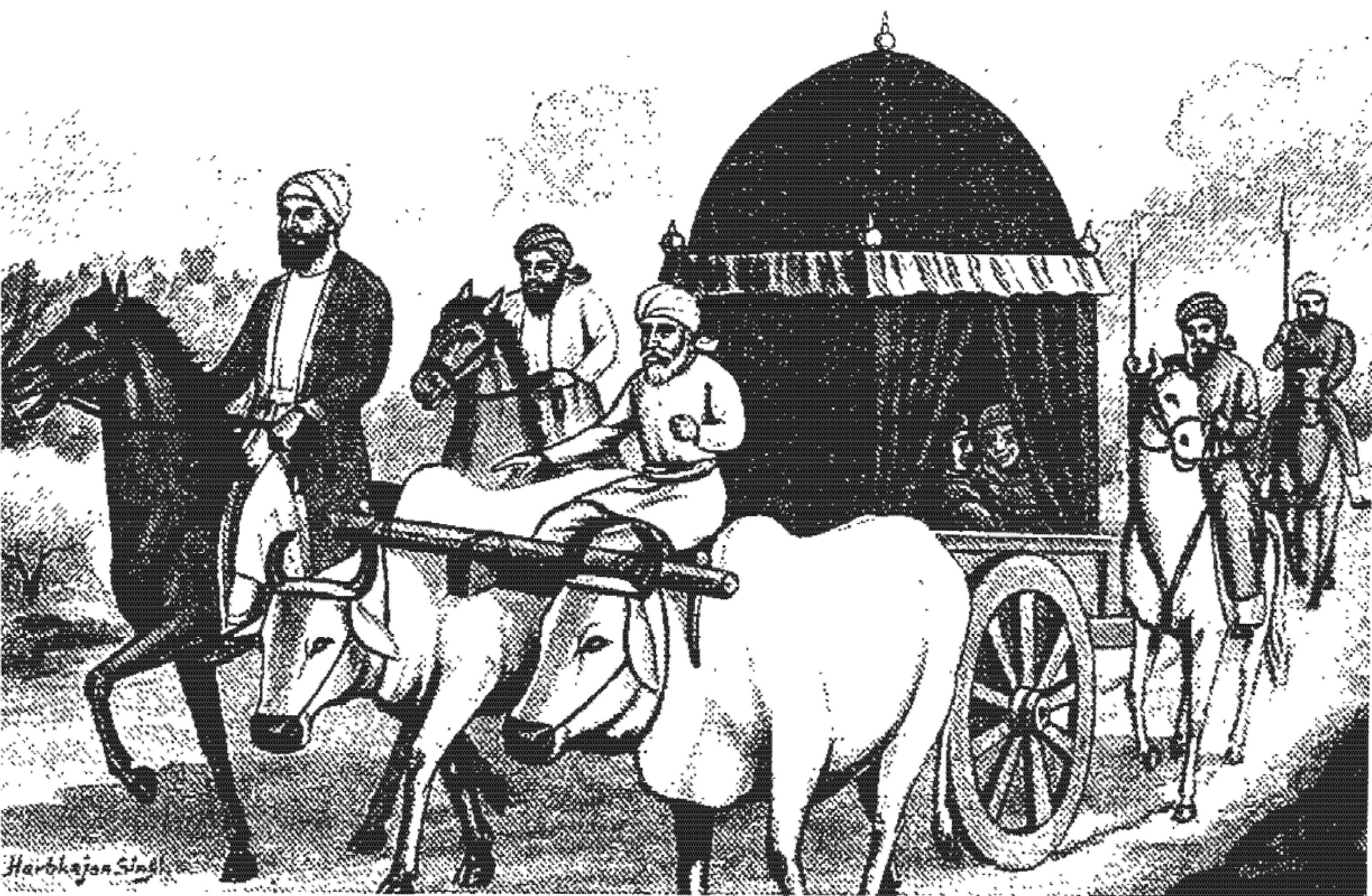
माता जी की आज्ञा लेने पर वे पहूविंड की ओर चल पड़े। उनका घोड़ा अब बिल्कुल स्वस्थ था, इसलिए बड़ी तीव्रगति से चलते वे कुछ दिनों में ही पहूविंड पहुँच गए। जब माता जीवन कौर एवं पिता भगत सिंघ ने अपने पुत्र को देखा तो वे बहुत खुश हुए।

पर भाई दीप सिंघ के चेहरे पर उदासी छाई हुई थी। जब परिजनों एवं अन्य लोगों ने इस बारे में पूछा तो उन्होंने पूरी कहानी कह सुनाई कि मुगलों एवं पहाड़ी राजाओं ने गुरु जी से धोखा किया है। अब पता नहीं उनका क्या हाल हुआ है? इसलिए जब तक मैं गुरु जी के दर्शन नहीं कर लूँगा, मुझे चैन नहीं आएगा।

वह हर वक्त पूजा-पाठ करते और गाँव-गाँव जाकर सिक्खी का प्रचार करते। गुरु साहिब के निजी सिक्ख होने के कारण क्षेत्र की संगतें उनके पास आतीं और गुरु जी के युद्धों का वृत्तांत सुनतीं।

फिर कुछ समय के बाद अफवाहें फैलने लगीं कि गुरु जी लक्खी जंगल में ठहरे हुए हैं। जब भाई दीप सिंघ को इस बात का विश्वास हो गया तो वह लक्खी जंगल की ओर जाने की तैयारियाँ करने लगा। एक दिन वह अपने हथियारों को साफ कर रहा था कि शेर सिंघ नामक एक सिंघ ने आकर नमस्कार की। भाई दीप सिंघ उस सिंघ को पहचानते थे। वह उठकर बड़े प्रेम से मिले और तत्काल गुरु जी के बारे कई सवाल पूछे गए। शेर सिंघ ने कहा, भाई जी! शेष सवालों का जवाब गुरु जी से पूछना, मुझे तो उन्होंने आपको साबो की तलवंडी आने का आदेश दिया है।"

बस अन्धा क्या खोजे दो आँखें। भाई दीप सिंघ ने कमरबंद किया, घोड़े पर काठी डाली और तैयार हो गया। भाई भगत सिंघ और माता जीवन कौर कुछ न बोल सके। उन्होंने शेर सिंघ को भोजन करवाया और दोनों सिंघ घोड़े भगाते पलों में ही अदृश्य हो गए।



आदि ग्रंथ का पुनः संपादन

भाई दीप सिंघ और शेर सिंघ घोड़ों पर सवार परस्पर कुछ बातें करते जाते थे। भाई दीप सिंघ यही प्रसंग सुनना चाहता था कि गुरु जी के चार पुत्र कैसे शहीद हो गए और वे किस तरह जालिम फौज में से निकलकर साबो की तलवंडी पहुँचे। सिंघ उनको सब कुछ विस्तारपूर्वक सुनाता जा रहा था। जब उस सिंघ ने यह बताया कि गुरु जी ऊँचे मनोबल में हैं और उनको अपने पुत्रों के शहीद होने पर गर्व है तो भाई दीप सिंघ की आँखों में आँसू आ गए और वह बोला, "धन्य हैं सतिगुरु गुरु गोबिंद सिंघ जी!" सिंघ ने यह भी बताया कि वे कहते हैं, "मेरे चार पुत्र शहीद हो गए तो फिर क्या हुआ खालसा के रूप में मेरे लाखों पुत्र जिंदा हैं और चिरजीवी रहेंगे।"

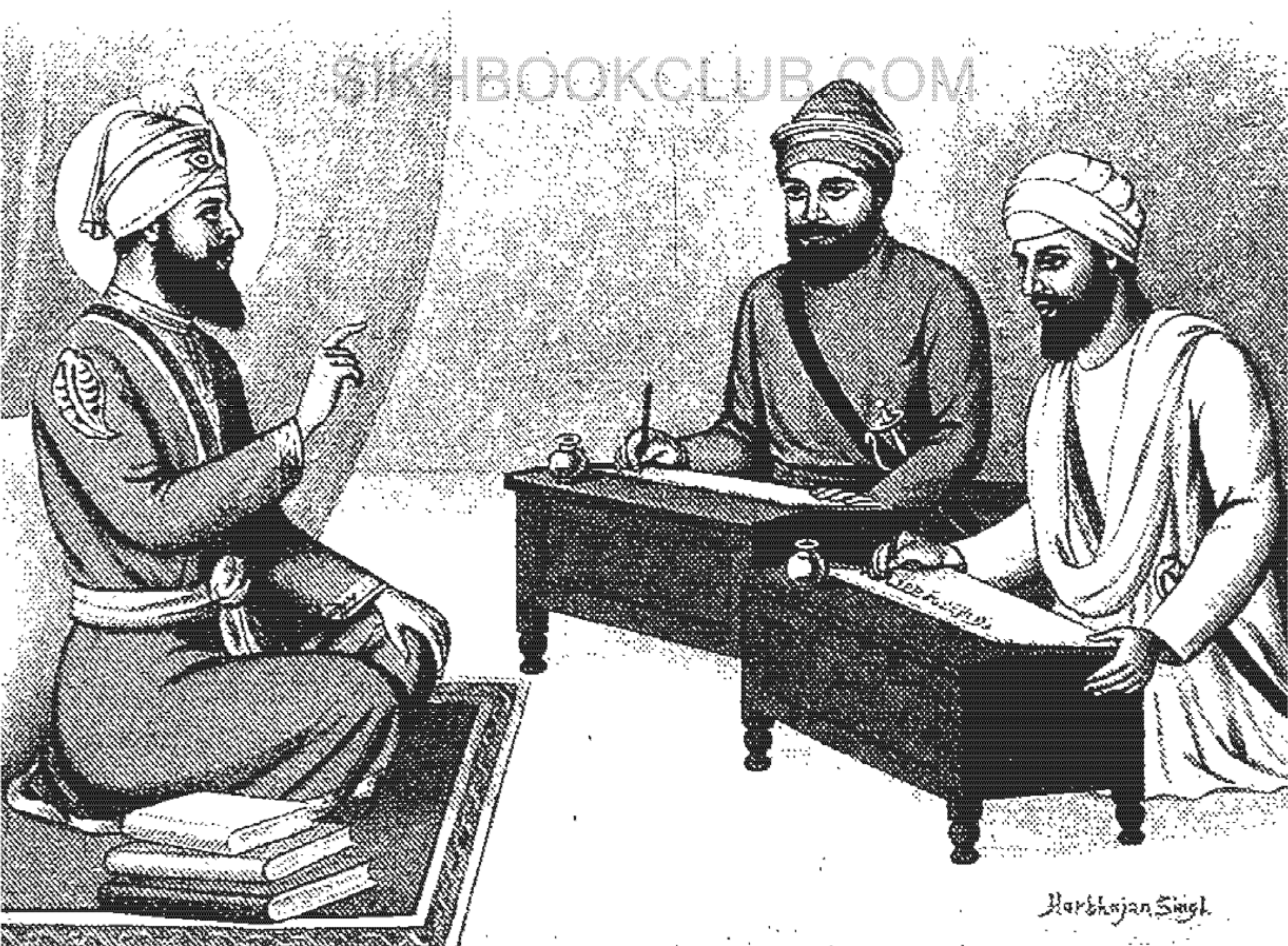
ऐसी बातें करते वे साबो की तलवंडी पहुँच गए। भाई दीप सिंघ गुरु जी को मिलकर उनके चरणों में झुक गया, नेत्र सजल करके बोला, "महाराज मैं निमाना आप से दूर चला गया और आप जी की सेवा न कर सका। मेरे सब साथी शहीद हो गए हैं और मैं जिंदा घूम रहा हूँ।" गुरु जी भाई दीप सिंघ को आशीष देकर बोले, "गुरुमुख प्यारे! धीरज करो, अभी तूने बहुत काम करने हैं। आगामी समय बड़ा भयानक है। आपने खालसा को अमृतपान करवा कर हर विपत्ति का सामना करने के लिए तैयार करना है। इसलिए भाई मनी सिंघ एवं आपको अलग भेजा था। हमें पता था कि मुगलों एवं पहाड़ियों का कोई ऐतबार नहीं था, सभी सिंघों को शहीदी जाम पीना ही था।"

गुरु जी को मिलने के बाद भाई दीप सिंघ अन्य सिंघों के अलावा भाई मनी सिंघ को भी मिले। भाई मनी सिंघ बड़े प्रेम और आदर से भाई दीप सिंघ को मिला। भाई मनी सिंघ ने कहा, "भाई दया सिंघ एवं भाई धर्म सिंघ गुरु साहिब की एक चिट्ठी (जफरनामा) लेकर औरंगजेब बादशाह को देने के लिए दक्षिण की ओर गए हैं, यहाँ हम उनकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। इस दौरान गुरु जी ने यह फैसला किया है कि आदि ग्रंथ साहिब का संशोधन कर लिया जाए और उस में रागों के अनुसार गुरु तेग बहादुर जी की वाणी भी शामिल कर ली जाए। आनंदपुर साहिब वाला आदि ग्रंथ तो सरसा नदी में बह गया था, पर कुछ बीड़ों की प्रतिलिपियाँ हमने भिन्न-भिन्न सिक्खों से प्राप्त की हैं। हमने देखा है कि उन में कई त्रुटियाँ हैं। गुरु साहिब ने आदेश किया है कि वह लिखवाते जाएँगे और हम दोनों लिखते जाएँगे। चूँकि आपकी लिखाई बहुत सुंदर है, इसलिए मैंने गुरु जी को विनती की थी कि आपको भी बुलाया जाए।" भाई दीप सिंघ बड़े प्रसन्न हुए और कहा, यह मेरी खुशनसीबी है, अगर मैं भी गुरु जी के किसी काम आ सकूँ।"

कुछ दिनों के पश्चात् ही यह शुभ कार्य शुरु हो गया। गुरु साहिब ने एक तम्बू लगवाया और उसमें सारी सामग्री रख ली। गुरु जी अपने आसन पर विराजकर वाणी लिखवाते और

भाई मनी सिंघ व भाई दीप सिंघ वाणी लिखते जाते। सायंकाल को जितनी बीड़ लिखते जाते गुरु जी स्वयं उसका संशोधन करते और गुरमुखी की मात्रा तक ठीक करते। अगले दिन जब सुबह दीवान लगता तो गुरु जी उस वाणी के अर्थ संगत को समझाते। भाई मनी सिंघ एवं भाई दीप सिंघ उन अर्थों को अपनी स्मृति के लिए लिखते भी जाते और जिस रहस्य भाव को वे समझ न सकते अगले दिन गुरु जी से पूछ लेते।

यह कार्य निरन्तर 9 महीने, 9 दिन एवं 9 घड़ियों तक चलता रहा। रागों के अनुसार गुरु जी ने भगतों की वाणी से पूर्व गुरु तेग बहादर साहिब जी की वाणी भी दर्ज करवा दी। इस तरह यह एक नवीन बीड़ तैयार हो गई। गुरु साहिब ने इस बीड़ का नाम 'दमदमी बीड़' रखा। गुरु जी जब दक्षिण को जाने लगे तो भाई मनी सिंघ वाली बीड़ वे अपने साथ ले गए और हजूर साहिब (नांदेड़) उसी बीड़ को गुरु-गद्दी सौंपी गई थी। भाई दीप सिंघ वाली बीड़ को उन्होंने दमदमा साहिब (गुरु की काशी) में ही रखने का आदेश दिया था और भाई दीप सिंघ को यह जिम्मेदारी सौंपी थी कि दमदमा साहिब में ही रहेंगे और उस बीड़ की अन्य प्रतिलिपियाँ भी करेंगे। तदुपरांत भाई दीप सिंघ ने उस बीड़ की चार प्रतिलिपियाँ कीं और चारों तख्तों पर भेज दीं। भाई दीप सिंघ इस बीड़ का पाठ करते और सिक्खों को उसके अर्थ समझाते।



निर्धनों की सहायता करना

दक्षिण की ओर जाते समय गुरु गोबिंद सिंघ जी भाई दीप सिंघ को दमदमा साहिब का जत्थेदार नियुक्त कर गए और उन्हें हिदायत कर गए कि वह सिक्खों को अमृतपान, पंथ को संगठित करें, गुरुवाणी पढ़ाएँ और निर्धनों की रक्षा करें। भाई दीप सिंघ ने दमदमा साहिब की सेवा बड़ी कुशलता से निभाई। बहादर शाह का राज हो जाने से सिक्खों पर सख्ती हट गई थी और वे स्वाधीन रह रहे थे। गुरु जी नि:संदेह दक्षिण को चले गए परन्तु पंजाब के सिक्ख दमदमे संगठित हो रहे थे। भाई दीप सिंघ उनको अमृतपान करवाते और शस्त्र विद्या का भी प्रशिक्षण देते। पाँच सौ से अधिक हथियारबंद सिक्ख उनके पास रहते थे। उस इलाके में उनका बड़ा वैभव था और मुसलमान जागीरदार भी उनसे डरते थे। उन्होंने दमदमा साहिब में एक बुर्ज बनाया। जिसकी चार मंजिलें एवं तिरपन सीढ़ियाँ थीं। इसके साथ ही एक भोरा साहिब तैयार करवाया जिसमें आयुध रखा गया था। यह बुर्ज बिल्कुल गुप्त बनाया गया और सामान्य व्यक्ति इसे ढूँढ नहीं सकता था। पानी की कमी को अनुभव करके भाई दीप सिंघ ने एक कुआँ भी लगवाया। बाबा जी इस कुएँ की छबील पर बैठकर जल की स्वयं सेवा किया करते थे।

वे सुबह दीवान लगाते, कीर्तन होता और गुरुवाणी के अर्थ करके सिक्खों को समझाते। कुछ समय में ही उनकी दया और वीरता चारों ओर विख्यात हो गई और इर्द-गिर्द के ग्रामीण उनको अपना रखवाला समझते थे। गुरु जी जैसे उनको निर्देश दे गए थे कि निर्धनों की रक्षा करना, इसलिए वे प्रत्येक गरीब एवं जरूरतमंद व्यक्ति की पूरी सहायता करते।

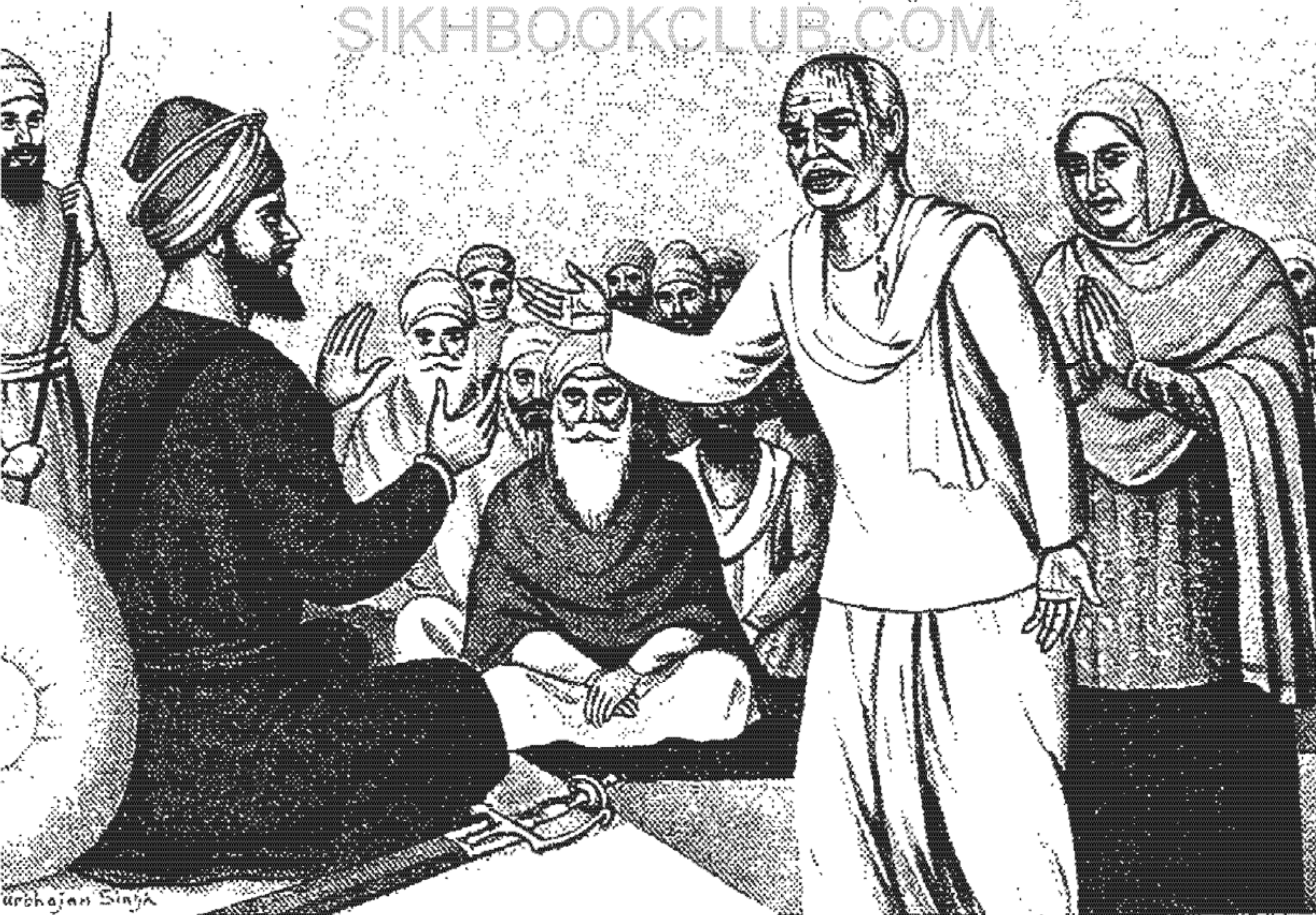
एक दिन जब उनका दीवान लगा हुआ था तो उस इलाके का कर्म चन्द नामक हिन्दू एवं उसकी पत्नी रोते-रोते उनके पास पहुँचे। कर्म चन्द के सिर में चोट लगी हुई थी और उसने नम्रतापूर्वक विनती की, "बाबा जी! हम बर्बाद हो गए, हम लुट गए, आज जब मैं, मेरा पुत्र, मेरी पत्नी, बहू एवं बेटी किसी रिश्तेदार के विवाह पर जा रहे थे तो जागीरदार नासिर दीन के कुछ आदमियों ने हम पर हमला कर दिया। मेरे पुत्र की हत्या कर दी, मुझे घायल कर दिया और मेरी बहू और बेटी को उठाकर ले गए हैं।"

बाबा दीप सिंघ ने जब यह वार्ता सुनी तो वे बहुत आवेश में आ गए। आग बबूला होकर वे बोले, "नासिर दीन की यह हिम्मत।" उन्होंने उसी समय दीवान बर्खास्त किया और सौ सिंघों का जत्था लेकर नासिर दीन के महल की ओर कूच कर दिया।

नासिर दीन के गाँव गढ़ीपीरां को उन्होंने घेरा डाल लिया। वे किसी निर्दोष को भी मारना नहीं चाहते थे। इसलिए उन्होंने नासिर दीन को संदेश भेज दिया कि वह उठाकर लाई लड़कियाँ वापिस कर दें; अन्यथा सारी गढ़ी ध्वस्त कर दी जाएगी। जब नासिर दीन को यह पता लगा तो वह बड़ा भयभीत हो गया। डरता और थर-थर काँपता हुआ वह अपने घर से

निकलकर बाबा दीप सिंघ के चरणों में झुक गया। वह कहने लगा, "बाबा जी मैं बिल्कुल बेकसूर हूँ। मेरे दो आदमी लड़कियाँ अवश्य लाए थे, पर मैंने उसी समय ही लड़कियाँ लाने वाले आदमियों को बाँधकर बंदीगृह डाल दिया और लड़कियों को पूर्ण आदरपूर्वक अपने घर रखा है। मेरे साथ चलकर आप लड़कियों से सब कुछ पूछ सकते हो।"

भाई दीप सिंघ कुछ सिंघों को साथ लेकर नासिर दीन के घर गए और लड़कियों को वापिस ले आए। लड़कियों ने उनको बताया कि नासिर दीन एवं उसकी पत्नी ने उनको पूरे आदर से अपने पास रखा है और उन लुटेरों की खूब पिटाई करके भीतर फैंका है। भाई दीप सिंघ को नासिर दीन पर दृढ़ विश्वास हो गया और उन्होंने लड़कियाँ अपने साथ लीं और उनके माता-पिता के हवाले कर दीं। उन्होंने कर्म चन्द को उपचार करवाने के लिए कुछ पैसे भी दिए। कर्म चन्द बाबा जी की इस वीरता एवं दयादृष्टि से बहुत प्रभावित हुआ और वह अमृतपान करके सिंघ बन गया। उसने अपनी बेटी, बहू एवं पत्नी को भी अमृतपान करवा दिया। एक दिन कर्म सिंघ (कर्म चन्द) ने बाबा जी से प्रार्थना की कि वह अपनी बहू-बेटी का विवाह करना चाहता है, अगर कोई सिंघ कबूल करे तो मैं इस दायित्व से मुक्त होऊँ। बाबा दीप सिंघ ने इस बारे में सारे दीवान में ऐलान किया तो लक्खी जंगल के दो सिंघ विवाह करवाने को तैयार हो गए। बाबा दीप सिंघ ने स्वयं गुरु-मर्यादानुसार उन दोनों युगलों का विवाह किया और आशीर्वाद दिया।



बाबा बंदा सिंघ बहादर से मेल

जब गुरु गोबिंद सिंघ जी नांदेड़ पहुँचे तो वहाँ उनका माधो दास बैरागी से मेल हुआ। माधो दास जम्मू राजौरी का निवासी था और पंजाबी जानता था। वह बड़ा शूरवीर एवं जंत्रों-मंत्रों में प्रवीण था। जो संत-महात्मा उसके आवास जाता तो वह अपने मंत्रों एवं बीरों को भेजकर उसकी बड़ी खिल्ली उड़ाता। माधो दास ऐसी हास्यप्रद बातें करके बहुत खुश होता था। जब गुरु जी को उसके ऐसे करतबों का पता चला तो वे अपने कुछ सिंघों को साथ लेकर उसके आवास पहुँचे और माधो दास के सुन्दर पलंग पर जा लेटे। जब माधो दास को इस बारे में पता लगा तो उसने अपने बीर भेजे, पर वे गुरु साहिब पर कोई प्रभाव न डाल सके। अंत में माधो दास गुरु जी के चरणों में आ गया। गुरु जी ने पूछा, "तू कौन है?" वह कहने लगा, "मैं आपका बंदा हूँ।"

गुरु जी ने कहा, "तू इतना बहादुर, शूरवीर एवं ऋद्धियों-सिद्धियों का स्वामी है, तुझे इस ताकत का इस्तेमाल गरीबों एवं मासूमों की रक्षा के लिए करना चाहिए। माधोदास ने पूछा, "वह कैसे?" तो गुरु जी ने उसे मुगलों के जुल्मों के बारे में सतर्क किया। उन्होंने बताया कि पंजाब के लोग मुगल शासकों के जुल्म का शिकार हैं और नरकमयी जीवन भोग रहे हैं। वहाँ जाकर वह जालिमों का नाश करे और मासूमों का मसीहा बने।

गुरु जी उसे अपने आवास पर ले गए। अमृतपान करवा कर उसे सिंघ बना दिया और उसका नया नाम गुरबख्श सिंघ रख दिया। फिर उसे पाँच तीर, पाँच सलाहकार और कुछ फौज देकर पंजाब को रवाना कर दिया। श्रेष्ठ जत्थेदारों को हुक्मनामे लिख दिए कि वे बंदा सिंघ बहादर की सहायता करें। एक हुक्मनामा उन्होंने बाबा दीप सिंघ को भी लिख दिया।

बाबा दीप सिंघ ने लक्खी जंगल के सिंघों को संदेश भेज दिया कि जालिमों को खत्म करने का समय आ गया है और इस कार्य में गुरु गोबिंद ने अपने विशेष दूत बंदा सिंघ बहादर को भेजा है।

बाबा दीप सिंघ के पास सिंघ बहुसंख्या में इकट्ठे हो गए। बंदा सिंघ बहादर जालिम शासकों को मिटाता हुआ सूबा सरहिन्द की ओर बढ़ रहा था। बाबा दीप सिंघ अपने सिंघों को साथ लेकर उसे मिला। बाबा बंदा सिंघ बहादर बाबा दीप सिंघ को मिलकर बहुत प्रसन्न हुआ और उन्होंने इकट्ठे होकर सरहिन्द पर हमला कर दिया। बाबा बंदा बहादर सभी जमींदारों को खत्म करता जा रहा था और जमीन काश्तकारों को देता जा रहा था, इसलिए वे भी उसकी मदद के लिए हथियार लेकर साथ चल पड़ते थे। कुछ लूट के ख्याल से भी उनका साथ दे रहे थे।

वजीर खाँ सूबा सरहिन्द ने छोटे साहिबजादों को शहीद करवाया था। इसलिए उसे समाप्त करना अति अनिवार्य था। सिंघों ने सरहिन्द को घेरा डाल लिया। वजीर खाँ भी मुकाबला करने

के लिए आगे बढ़ा, पर वह सिंघों का मुकाबला न कर सका। सिंघों ने उसे पकड़ कर बाज़ार में घसीट-घसीट कर ही मार दिया। सरहिन्द की ईंट से ईंट बजा दी और सूबा सरहिन्द के समूचे परिवार को खत्म कर दिया गया। इसके पश्चात् समाना के जल्लाद जिसने गुरु तेग बहादर जी को शहीद किया था, उसका परिवार सहित वध कर दिया गया। सूबा सरहिन्द का वजीर सुच्चा नंद जिसने साहिबजादों को कत्ल करने के लिए जोर दिया था, सरहिन्द को छोड़कर ही भाग गया था, पर स्थानीय लोग उसके ठिकाने जानते थे, उसे पकड़ कर बड़ी यातनाएँ देकर मारा गया। इसके पश्चात् साढौरा और सहारनपुर का सफ़ाया किया गया और जालिमों को चुन-चुनकर मारा गया। कोई भी मुगल सूरमा सिक्खों का मुकाबला करने के लिए तैयार नहीं था। इन सभी लड़ाइयों में बाबा दीप सिंघ ने अपनी वीरता के खूब जौहर दिखाए। बाबा बंदा सिंघ बहादर उनकी वीरता पर बहुत प्रसन्न हुआ और उसने बाबा दीप सिंघ को 'आत्म-सम्मानीय बली योद्धा' का खिताब दिया।

जब बाबा बंदा सिंघ बहादर पहाड़ों की ओर चले गए तो बाबा दीप सिंघ अपने साथियों सहित पुंनः दमदमा साहिब आ गए।



मस्से रंगड़ का सिर काटना

एक बार 1794 विक्रमी की वैसाखी को भाई मनी सिंघ ने अमृतसर में वैसाखी मनाने का कार्यक्रम बनाया। सिक्खों को वैसाखी मनाने की आज्ञा नहीं थी, भाई मनी सिंघ ने जकरिया खाँ को पाँच हजार रुपए देना मानकर स्वेच्छानुसार वैसाखी मनाने की आज्ञा प्राप्त कर ली। पर वैसाखी वाले दिन जब सिक्ख दूर-दूर से आने लगे तो सूबेदार ने बहुसंख्या में फौज भेज कर सिक्खों को पकड़ना शुरु कर दिया। इस तरह वैसाखी के त्यौहार का आयोजन न हुआ और चढ़ावा भी कोई न चढ़ा। भाई मनी सिंघ के पास ज़करिया ख़ाँ को देने के लिए पाँच हजार रुपए इकट्ठे न हो सके। रकम न मिलने पर भाई मनी सिंघ को पकड़कर लाहौर ले गए और उनके जोड़-जोड़ काट कर शहीद कर दिया।

उनकी शहीदी के बाद जकरिया खाँ ने दरबार साहिब का हाकिम मस्से रंगड़ को नियुक्त कर दिया। उसे हर प्रकार की छूट दे दी कि जैसे वह चाहे सिक्खों को तंग कर सकता था। मस्से रंगड़ ने दरबार साहिब पर कब्जा कर लिया और इसके चारों तरफ पहरा लगा दिया कि कोई सिक्ख अथवा अन्य संदिग्ध व्यक्ति भीतर न जा सके। आप उसने हरिमन्दिर साहिब में एक पलंघ बिछा लिया और एक मोटे तकिए पर सिर रखकर सारा दिन हुक्का पीता रहता। जब शाम होने लगती तो शराब की सुराही आ जाती, सारंगी तबले वाले वाद बजाने लगते और वेश्या नृत्य शुरु कर देती। सिक्ख उस समय पंजाब को छोड़कर राजस्थान में चले गए थे। जब उनको इस घिनौनी घटना का पता लगा तो उन्होंने तुरंत इसकी सूचना बाबा दीप सिंघ को दमदमा साहिब भेज दी।

मस्से रंगड़ की ऐसी अनैतिक करतूत का हाल सुनकर बाबा दीप सिंघ आग बबूला हो गए, "वह जानता नहीं कि सिक्ख अभी जीवित हैं, अगर वे सरहिन्द के सूबेदार को खत्म कर सकते हैं तो मस्सा रंगड़ किसके समतुल्य है।" उस समय दरबार लगा हुआ था। उन्होंने बड़े प्रेम एवं उत्तेजना से कहा, "खालसा जी, आपने सुन ही लिया है कि मस्सा रंगड़ हमारे पवित्र तीर्थ स्थान दरबार साहिब में बैठकर शराब और हुक्का पी रहा है और वेश्याओं का नृत्य करवाता है। मैं आज इस दरबार में ललकार कर कहता हूँ कि ऐसा कोई शूरवीर है जो मस्से रंगड़ का सिर काट कर लाए। मैं उसके सिर को देखना चाहता हूँ।"

उसी वक्त दो सिंघ उठकर खड़े हो गए। उन में एक था सुक्खा सिंघ 'माड़ी कंबोके' एवं दूसरा था महान योद्धा मेहताब सिंघ मीराकोटिया। उन्होंने हाथ जोड़कर विनती की, "बाबा जी यह सेवा हमें प्रदान कीजिए और हमें आशीर्वाद दो कि हम उसका सिर आपके चरणों में लाकर रखें।" बाबा जी बोले, "परोपकार करने वाले की दशमेश पिता स्वयं अंग-संग होकर सहायता करते हैं। इसलिए आप खुद को अकेला मत समझना, अपितु यह समझना कि दशमेश पिता आपके साथ हैं।"

सुक्खा सिंघ एवं मेहताब सिंघ ने दो बढ़िया थैलियाँ बनवाईं और उनको ठीकरियों से भर लिया। मुसलमानों जैसी वेशभूषा धारण करके वे घोड़ों पर सवार हो गए। जब वे हरिमन्दिर साहिब के समीप पहुँचे तो पहरेदारों ने उनको रोका। उन्होंने पहरेदारों को थैलियाँ दिखाते हुए कहा कि वे राजस्व देने आए हैं। पहरेदारों ने उनको आगे जाने दिया। उन्होंने दोनों घोड़ों को इलायची बेरी के पास बाँधा और हरिमन्दिर साहिब के भीतर चले गए। मस्से रंगड़ के सामने जाकर उन्होंने ठीकरियों से भरी थैलियाँ रख दीं और कहा, "जनाब, हम हजूर को राजस्व देने आए हैं।" मस्सा जो पहले ही शराब के नशे में चूर था, रुपयों की भरी थैलियाँ देखकर बहुत खुश हुआ और कहने लगा, "आपका भला हो, पैसों की तो मुझे पहले ही बड़ी आवश्यकता थी।"

फिर वह पलंघ पर लेटा-लेटा ही सिर झुका कर थैलियों को देखने लगा। भाई मेहताब सिंघ ने यह मौका ठीक समझा और उसने एक ही वार से मस्से रंगड़ का सिर उतार दिया। वादक एवं वेश्याएँ चारपाइयों के नीचे छिप गए। सुक्खा सिंघ ने वहाँ से ही एक नेज़ा पकड़ा और मस्से रंगड़ का सिर नेज़े में पिरो लिया और पल भर में ही भागकर घोड़ों पर सवार हो गए। पहरेदारों को यह पता ही न लगा कि वास्तव में क्या हुआ था। घोड़े को भगाते हुए वे दोनों दमदमा साहिब पहुँच गए और मस्से रंगड़ का सिर बाबा जी के चरणों में रख दिया। जब लाहौर के शासक को यह पता लगा कि सिक्ख मस्से रंगड़ का सिर ही काट कर ले गए हैं तो वह बहुत चकित हुआ।



अदीना बेग से मुठभेड़

उन दिनों जालंधर का शासक अदीना बेग था। वह सिक्खों के प्रति उदारवादी था, जिससे लाहौर का सूबेदार उस पर अप्रसन्न था। इसलिए उसने नासिर दीन को कुछ सेना देकर भेजा ताकि अदीना बेग को भगाकर वह खुद जालंधर का शासक बन जाए। अदीना बेग नासिर दीन का मुकाबला न कर सका और पीठ दिखाकर भाग गया। नासिर दीन ने सूबेदार बनते ही सिक्खों पर अत्याचार करने शुरु कर दिए। करतारपुर के गुरुद्वारों का उसने अपमान किया और गाँवों में सिक्खों को ढूँढ-ढूँढ कर मारा। जब काहनूवान की पोखरी में रहने वाले सिक्खों को इसका पता लगा तो उन्होंने बाबा दीप सिंघ को दमदमा साहिब संदेश भेजा। बाबा दीप सिंघ का तो जीवन ही कौम के लिए न्यौछावर था, अत: वह एक बड़ी फौज लेकर जालंधर की ओर बढ़े। काहनूवान की पोखरी में मौजूद सिक्ख भी जालंधर की तरफ आ गए। जब दोनों फौजें इकट्ठी हो गईं तो उन्होंने नासिर दीन पर आक्रमण कर दिया। नासिर दीन सिक्खों का मुकाबला न कर सका और पकड़ा गया। सिक्खों ने उसे जिंदा ही जला दिया। अदीना बेग को उन्होंने पुन: जालंधर का शासक बना दिया। परन्तु लाहौर का सूबेदार उस पर खुश नहीं था। वह जालंधर का शासक अपनी पसंद का नियुक्त करना चाहता था। पर सिक्खों से डरता कोई जालंधर का शासक पद नहीं लेना चाहता था। आखिर लाहौर का शासक अदीना बेग को भयभीत करने लगा कि या तो वह सिक्खों पर अत्याचार करे और उनसे बिल्कुल नाता तोड़ ले, अन्यथा मरने के लिए तैयार हो जाए। जाल में फँसा अदीना बेग सिक्खों के विरुद्ध हो गया और उन पर अत्याचार करने लगा।

बाबा दीप सिंघ अभी दमदमा साहिब पहुँचे नहीं थे कि मार्ग में स. जस्सा सिंघ आहलूवालिया का संदेश पहुँच गया, "अदीना बेग लाहौर के सूबेदार से मिल गया है और सियालकोट का शासक अमीन खाँ भी लाहौर के सूबेदार के हुक्मानुसार सिक्खों पर जुल्म कर रहा है। हमें अब क्या करना चाहिए?"

बाबा दीप सिंघ ने उत्तर दिया कि सभी मिसलों के जत्थेदार अपनी-अपनी फौज सहित दुआबे में एक स्थान इकट्ठे हो जाएँ। वे शीघ्र वापिस आ रहे हैं।

बाबा जी की हिदायत अनुसार सभी सिक्ख दुआबे में इकट्ठे हो गए। फिर बाबा जी के पहुँचने पर जालंधर पर हमला कर दिया।

बड़ा भीषण युद्ध हुआ। जब अदीना बेग जान बचा कर भाग गया तो उसकी फौजें भी जिधर मुँह हुआ उधर ही दौड़ गईं।

जालंधर सिक्खों के कब्जे में आ गया। बाबा दीप सिंघ ने स. जस्सा सिंघ आहलूवालिया को जालंधर का शासक नियुक्त कर दिया।

जालंधर जीतने के बाद सिक्ख फौजों ने सियालकोट की ओर कूच किया। जब अमीन खाँ

को यह पता लगा कि जालंधर जीतकर सिक्ख फौजें उसकी ओर आ रही हैं तो उसने लाहौर के सूबेदार से मदद माँगी। परन्तु लाहौर का सूबेदार तो पहले ही डरा हुआ था। सियालकोट के बाद अब उसकी बारी थी। इसलिए वह अपने मोर्चे मजबूत करने में लगा हुआ था। इसलिए उसने अमीन खाँ की कोई सहायता न की।

बाबा दीप सिंघ के नेतृत्व में सिक्खों ने सियालकोट को जाकर घेर लिया। परन्तु अमीन खाँ बड़ी वीरता से सिक्खों के आगे आ डटा। उसकी फौज के पास बड़ी तोपें एवं बंदूकें भी थीं। पर सिंघ इतनी वीरता से लड़े कि मुगल फौजी तोपें बंदूकें चलाना ही भूल गए। सिंघ इतनी बहादुरी से लड़ रहे थे कि कुछ घड़ियों में ही उन्होंने अमीन खाँ की फौज को मौत की नींद सुला दिया। अमीन खाँ को बाबा दीप सिंघ ने चुनौती दी। अपना घोड़ा उसके निकट करते हुए उन्होंने कहा, "जालिम अमीन! अल्लाह को याद कर ले अब।" अमीन खाँ ने बड़े क्रोध में आकर एक तलवार का वार बाबा दीप सिंघ पर किया, पर बाबा जी ने वह वार अपनी दुधारी तलवार पर ही रोक लिया। फिर उन्होंने अपनी तलवार को जोर से अमीन खाँ को मारा जो अमीन ख़ाँ को चीरती हुई उसके घोड़े को भी चीर गई। अमीन खाँ की लगभग पूरी फौज मारी गई थी, जो कोई बचा था वह भी भाग गया।

बाबा दीप सिंघ ने स. नत्था सिंघ और स. गुलाब सिंघ को सियालकोट के इलाके की सरदारी दे दी। आप वे वापिस दमदमा साहिब चले गए।



अब्दाली का हमला

मीर मन्नु ने सिक्खों पर बहुत अत्याचार किए थे और एक सिक्ख के सिर का मूल्य एक टका कर दिया था। अंत में जब वह मृत्यु को प्राप्त हुआ तो उसकी मुगलानी बेगम ने चालाकी से दिल्ली के सिंहासन के वारिसों में झगड़ा उत्पन्न कर दिया। परन्तु उस झगड़े से उसे कुछ भी हासिल न हुआ। वह एक आचरणहीन स्त्री थी। इसलिए दिल्ली के बादशाह और अन्य अमीरों-वजीरों को सबक सिखाने के लिए उसने अब्दाली को हिन्दुस्तान पर हमला करने का न्यौता दिया। अब्दाली तत्काल ही एक लाख फौज लेकर चल पड़ा। वह हिन्दुस्तान को जीतना नहीं चाहता था, अपितु उसका मुख्य मनोरथ केवल सोना-चांदी, नवयुवतियाँ एवं लड़के-लड़कियाँ लूटना था। वह अपने मुल्क को अमीर बनाना चाहता था। वह तीव्र गति चलता हुआ दिल्ली पहुँचा। मुगलानी बेगम के कथनानुसार सब अमीरों वजीरों को लूटा। दिल्ली के उपरांत उसने अन्य कई नगरों को भी लूटा। धन-सम्पति लूटने के उपरांत उसके सिपाही कई हजार नवयुवक-नवयुवतियों को भी पकड़कर ले आए।

मुहम्मद शाह की नवयौवना कन्या से उसने अपने पुत्र तैमूर का विवाह कर दिया और बादशाह आलमगीर की पुत्री से अपना विवाह करवा लिया। यह लूट का माल उसने छकड़ों, ऊँटों पर लादा और वापिस अपने देश की ओर चल पड़ा।

स. जस्सा सिंह आहलूवालिया को जब यह पता लगा कि अब्दाली देश की स्त्रियाँ एवं नवयुवकों को लूट कर ले जा रहा है तो उसे इस बात का बहुत दुख हुआ। नारी की रक्षा करना प्रत्येक सिक्ख का धर्म है। इसलिए उसने सभी मिसलों के सरदारों को चिट्ठियाँ लिखीं कि अब्दाली से लूट का माल छीनने के लिए तैयार हो जाएँ। उसने सभी सरदारों को अब्दाली के काफिले पर भिन्न-भिन्न स्थानों पर छापे मारने की सलाह दी।

उसने बाबा दीप सिंघ को भी संदेश भेजा कि वह सबसे पहले छापा मारें और जितना भी हो सकता है स्त्रियाँ, लड़के एवं धन-सम्पत्ति अब्दाली से छीन कर ले जाएँ।

उस समय सिक्खों की संख्या अल्पमात्र थी, इसलिए वे छापे मारकर रजवाड़ों को लूट कर तुरंत भाग जाते थे।

जब बाबा दीप सिंघ को इस बारे में संदेश मिला तो वे बड़े आवेश में आ गए। वे बोले, "यह कितनी शर्म की बात है कि इन मुगलों के राज में एक विदेशी लुटेरा हमारे देश की बहु-बेटियों एवं बहनों का अपहरण कर के ले जा रहा है। उन्होंने तो शर्म बेच ली है, पर सिक्ख तो यह बर्दाश्त नहीं कर सकते। हम इन बेटियों-बहनों को अब्दाली से छुड़ाएँगे।" उन्होंने अपने सभी सिंघों को बुला लिया और लक्खी जंगल भी सन्देश भेज दिया कि जो भी सिक्ख इस कार्य में योगदान देना चाहता है, हमारे साथ आ मिले।

अगले दिन सभी सिंघ इकट्ठे हुए तो उन्होंने कहा, "इस कार्य में पुण्य के साथ फल भी है।

हम देश की बहु–बेटियों को तो लौटाएँगे ही और अब्दाली की धन–सम्पत्ति भी लूटेंगे। हमारे पास भी धन की अब कमी आ चुकी है। कामकाज तो स्वतंत्रता से हम कर नहीं सकते। इसलिए ऐसे लुटेरे को लूटना एक पुण्य है। हमारा जत्था एक शूरवीरों का जत्था है। पहला आक्रमण हम ही करेंगे। दिल्ली से चलकर जहाँ भी वह पहला पड़ाव करेंगे वहाँ रात होते ही इन पर हमला करके, रक्षकों को मार कर छकड़ों, ऊँटों को भगाकर ले जाएँगे। जब तक ये हमारा पीछा करेंगे हम जंगलों में लुप्त हो जाएँगे। रात के अंधेरे में ये पीछा नहीं कर सकते। अब्दाली समूचा माल लेकर चल पड़ा है। इसलिए हमें भी अब तैयारियाँ करनी चाहिएँ ताकि हम पहले ही मार्ग में पड़ाव कर सकें। मुगल सेना का अब कोई भय नहीं रहा। बादशाहत लगभग खत्म हो चुकी है। यह आज़ादी प्राप्त करने का एक सुनहरी अवसर है। हम सभी इकट्ठे होकर पूरे पंजाब पर कब्जा कर सकते हैं। अब्दाली ने अपने देश चले जाना है और पंजाब में क्रांति शुरु हो जानी है, हम यदि प्रयास करेंगे तो शासन प्राप्त करना मुश्किल नहीं। इसलिए जितना कुछ भी लूटा जा सकता है लूट लो, ताकि हम आधुनिक हथियार और बढ़िया घोड़े प्राप्त कर सकें।"

बाबा दीप सिंघ प्रसन्नचित्त सिक्ख राज का सपना देख रहे थे।



अब्दाली को लूटना

बाबा दीप सिंघ जी ने लक्खी जंगल एवं इसके निकटवर्ती गाँवों में से जितने भी सिंघ सूरमे मिल सकते थे, अपने दल में शामिल कर लिए। अनेक लोग लूटने के चाव से भी उनके दल में शामिल होने आए, परन्तु बाबा जी ने उनको अपने साथ ले जाने से इंकार कर दिया। डकैतों ने जब बहुत निवेदन किए तो बाबा जी ने कहा, "हम धर्म युद्ध के लिए जा रहे हैं, हमने अब्दाली से अपने देश की बेटियों-बहनों को मुक्त करवाना है, हमने उनकी लाज बचानी है और उनको वापिस उनके घरों में पहुँचाना है। पर आप केवल लूटने के इरादे से हमारे पास आए हो, आप उन स्त्रियों का निरादर भी कर सकते हो। पर यदि आप कसम खाओ और हमें वचन दो कि आप किसी स्त्री से दुर्व्यवहार नहीं करोगे तो हम आपको अपने साथ ले जाने को तैयार हैं। परन्तु यह सोच लो कि अगर आपने कोई भूल की तो हम आपको बुरी तरह खत्म करेंगे।"

उन सभी ने कसमें लीं और बाबा जी के हुक्म का पालन करने का वचन दिया। बाबा दीप सिंघ के पास दो हजार से अधिक घुड़सवार सेना हो गई थी। उन्होंने कुछ राशन भी साथ ले लिया। चूँकि उनको कुछ समय प्रतीक्षा करनी थी। सेना का नेतृत्व उन्होंने स्वयं किया और एक रात में ही वे करनाल के समीप खुले मैदान में पहुँच गए। वहाँ जाकर उन्होंने विश्राम किया, घोड़ों को खाने को दिया और स्वयं भी कुछ खाया। बाबा दीप सिंघ ने सर्वप्रथम हमला करना था। उसके बाद जैसे-जैसे काफिले ने लाहौर की ओर बढ़ते जाना था, अन्य मिसलों के सरदारों ने अब्दाली के रात्रि ठहरने वाले पड़ावों पर हमला करना था।

इसलिए बाबा दीप सिंघ का हमला बड़ा महत्वपूर्ण था। चूँकि यदि वह पहले हमले में ही सभी लड़कियों एवं लड़कों को छुड़वाने में सफल हो जाते थे तो फिर अन्यों को अब्दाली को लूटना मुश्किल काम नहीं था। यह तो स्पष्ट था कि अब्दाली ने फिर रात्रिकाल को पहरे बहुत सख्त कर देने थे।

जब शाम हो गई तो बाबा दीप सिंघ को अब्दाली के काफिले के आगमन की ध्वनि सुनाई दी। बड़ी ऊँची-ऊँची ढोल बज रहे थे और एक फौज की टुकड़ी के पीछे अहमद शाह अब्दाली का हाथी, उसके पीछे तैमूर का हाथी एवं नवविवाहित बेगमों के हाथी आ रहे थे।

बाबा दीप सिंघ ने अपनी सेना को और पीछे हट जाने का आदेश दिया।

कुछ गुप्तचरों को उन्होंने घने पेड़ों पर चढ़ा दिया। उन्होंने देखा कि काफिला दो मील लम्बा था और सबसे पीछे स्त्रियों एवं लड़कों के भरे छकड़े थे, जिनके साथ-साथ सिपाही नेज़े लेकर चल रहे थे। छकड़े काफी पीछे आ रहे थे चूँकि वे घोड़ों का मुकाबला नहीं कर सकते थे। पिपली के निकट जाकर बादशाह अब्दाली ने अपने तम्बू लगवा लिए और खाने-पीने का कार्यक्रम शुरू हो गया। सभी जीत की खुशियाँ मना रहे थे। पर छकड़ों में बैठी औरतें विलाप कर रही थीं।

बाबा जी ने देखा कि छकड़ों वाले सिपाही ही छकड़ों को रोकने वाले थे। बाबा जी ने उसी वक्त अपनी सेना को हुक्म दिया, "आक्रमण!" इससे पूर्व कि छकड़ों को खड़ा करके बैलों को खोल देते सिंघों ने सभी छकड़ों को घेर लिया और क्षण में ही उनके संरक्षक कत्ल करके छकड़े एक तरफ भगा लिए। कुछ सिंघ अब्दाली के लापरवाह फौजियों का वध करते रहे और कुछ छकड़ों एवं ऊँटों को भगाकर बहुत दूर जंगलों में निकल गए। बाबा जी ने फिर जब देखा कि वे अपने कार्य में सफल हो गए हैं तो उन्होंने कहा, "भागो," अब्दाली की सेना को पता ही नहीं लगा कि सिक्ख कहाँ लुप्त हो गए। उन्होंने चारों दिशाओं में घोड़े भगाए, किन्तु रात के अन्धेरे में उनको कुछ भी दिखाई न दिया। अगले दिन सिंघ बाबा दीप सिंघ के नेतृत्व में छीने हुए सामान सहित दमदमा साहिब पहुँच गए। उन्होंने लड़कों और लड़कियों को मुक्त कर दिया। लड़कों को तो उन्होंने कुछ रुपए देकर भेज दिया ताकि वे अपने-अपने घर को चले जाएँ। परन्तु स्त्रियों के घर का पता पूछकर सिंघ उनके घर-घर पहुँचा आए। ऊँटों पर लदे माल को उन्होंने गोदाम में रखवा लिया।



अब्दाली द्वारा अमृत सरोवर को भरने का हुक्म

अब्दाली जश्न मना रहा था और चारों तरफ खुशियों के ढोल बज रहे थे। इस शोर–शराबे में उसे कुछ पता न लगा कि पीछे क्या हो गया है। उसे कोई बताने भी न गया चूँकि अगर कोई बताने जाता तो उसकी उसने गर्दन उड़ा देनी थी। जब सुबह हुई तो उसके कुछ अहलकारों ने बताया कि रात्रिकाल कुछ लुटेरों ने उनके काफिले पर हमला किया था और कुछ पलों में वे लूट का माल एवं युवक–युवतियों को छुड़वा कर ले गए हैं। अब्दाली बड़ा हैरान हुआ और पूछने लगा, "हिन्दुस्तान में कोई ऐसा पराक्रमी भी है, जो अब्दाली के लूटे हुए माल को लूटकर ले जाए। दिल्ली तक तो मुझे कोई रोकने का दुस्साहस न कर सका परन्तु ये अब कहाँ से आ गए।" अहलकारों ने बताया कि यह अजीब चेहरों वाले डाकू थे जो यह कार्य करके पलों में दौड़ गए।

अब्दाली ने कहा, "ठीक है अगले पड़ाव पर पहरा सख्त कर दो और इन लुटेरों को जिंदा पकड़ कर मेरे सामने पेश करो।

जब अगला पड़ाव आया तो दूर तक फौज के पहरे लगा दिए गए। जब सिंघ लूटने के लिए गए तो उन्होंने देखा कि फौज का चारों तरफ पहरा है और वे सभी जाग रहे थे। सिंघों ने भी अपने घोड़े थोड़ी दूरी पर जाकर खड़े किए। जब अर्धरात्रि बीत गई तो सिंघों ने देखा कि कुछ फौज निद्रामग्न थी और शेष अर्धनिद्रा में थी तो उन्होंने एक तरफ से हमला कर दिया और तलवार चलाते माल असबाब से लदे ऊँट घोड़े भगाकर दूर निकल गए। कुछ सिंघों ने कुछ देर पीछा कर रहे फौजियों से मुकाबला किया और दूसरी तरफ को घोड़े भगाकर ले गए। अब्दाली के फौजियों ने उनका पीछा किया परन्तु अंधेरे में जब कुछ नजर न आया तो वापिस आ गए।

सुबह उठकर अब्दाली ने पूछा कि क्या आज भी लुटेरे आए थे तो अहलकारों ने बताया कि आए थे और हमारे सैकड़ों फौजियों को यूं मारकर फेंक गए जैसे वे सिपाही नहीं भेड़ हों। अब्दाली ने क्रोध में आकर फिर पूछा, "क्या कोई लुटेरा मारा गया है, मैं देखना चाहता हूँ ये लुटेरे मुसलमान हैं कि हिन्दू?" अहलकारों ने कहा, "हजूर, उनका तो कोई आदमी नहीं मरा।" अहमद शाह अब्दाली घोड़े पर सवार हुआ और अपने कुछ फौजियों को साथ लेकर उस स्थान को स्वयं देखने गया।

वहाँ जाकर उसने देखा कि उसके बहादुर सिपाहियों की लाशों के ढेर लगे हुए थे और माल–असबाब से लदे अनेक ऊँट एवं घोड़े भी गायब थे। अब्दाली यह देखकर आगबबूला होकर बोला, "हिन्दुस्तान में ऐसे दिलेर डाकू कहाँ से आ गए जो अहमदशाह अब्दाली के काफिले को एक अमीर सौदागर का काफिला समझते हैं, मेरे सिपाही उनको देखकर घुन की तरह क्यों सो जाते हैं?"

अब्दाली ने मन बनाया कि अगली बार पहरेदारों में वह स्वयं खड़ा होगा और इन लुटेरों

को घेर–घेर कर मारेगा। परन्तु दिल से वह बहुत डर गया था और अगले पड़ाव के समय उसने अपने बचाव के लिए पहरा और सख्त करने का हुक्म दिया।

सिंघों ने अगला पड़ाव न आने दिया जब काफिला चल रहा था तो वह एक घाटी के पीछे छिपकर खड़े रहे। जब उन्होंने देखा कि कीमती माल वाले ऊँट, बैल निकट आ रहे हैं तो अचानक एक तरफ से निकलकर वे काफिले में घुस गए। मारकाट करते उन्होंने काफी माल लूट लिया और घोड़े भगाकर गोली की तरह काफिले में से निकल गए। अब्दाली के फौजी अपने हथियार ही संभालते रह गए।

दिन की डकैती को देखकर अब्दाली बहुत भयभीत हो गया। उसने कहीं रुके बिना ही लाहौर पहुँचने का फैसला कर लिया। वह किसी तरह हिन्दुस्तान में से शीघ्रातिशीघ्र निकल जाना चाहता था। परन्तु सिंघों ने उसे फिर भी न छोड़ा। जस्सा सिंघ आहलूवालिया के जत्थे ने तो हजारों फौजियों को मौत के घाट उतार दिया और लूट का माल लेकर ओझल हो गए, जो कोई सिंघ घायल हुआ उसे अपने घोड़े पर बैठाकर साथ ही ले गए।

लाहौर पहुँच कर किले में दाखिल होकर अब्दाली ने राहत की साँस ली। वहाँ जाकर उसे पता लगा कि ये लोग लुटेरे नहीं अपितु सिक्ख हैं जो अमृतपान करके अमर हो जाते हैं। गुरु के चक्क में इनका एक सरोवर है जिसका अमृतपान करके ये मुर्दा भी जीवित हो जाते हैं।

उसने तैमूर को लाहौर का सूबेदार नियुक्त कर दिया और उसे हुक्म दिया कि गुरु के चक्क के सरोवर को भर दिया जाए और सिक्खों को ढूँढ–ढूँढ कर मार दिया जाए।



बाबा दीप सिंघ को अमृत सरोवर के अनादर के बारे में खबर मिलना

अब्दाली को यह पता लगा कि सिक्ख केवल जंगलों-पहाड़ों में ही छिप कर रहते हैं। लाहौर से आगे इनका कोई गिरोह नहीं है, इसलिए पंद्रह हजार से अधिक फौज तैमूर के पास छोड़कर शेष अपने साथ लेकर वह काबुल की ओर चल पड़ा। दिल्ली से जिस चाव एवं खुशी से वह चला था, वह खुशी अब लुप्त हो चुकी थी। जो लूट का माल वह लेकर चला था इसमें से अब एक चौथाई भाग ही शेष रह गया था। युवक-युवतियाँ भी सिंघ छुड़वा कर ले गए थे, इसलिए अब वह एक विजेता बादशाह नहीं अपितु पराजित बादशाह की मानिंद जा रहा था।

अब वह निश्चिंत था कि आगे सिक्ख नहीं थे, परन्तु जब चिनाब दरिया के तट उसने पड़ाव किया तो रात होते ही शोर मच गया, "सिक्ख आ गए, सिक्ख आ गए।" अब्दाली की फौज पर अब सिक्खों का इतना खौफ पैदा हो गया था कि वे अब लड़ने की बजाय, छिपने के लिए स्थान ढूँढते थे और कीमती माल वहीं छोड़ देते थे। सिक्ख कीमती माल उठाकर फिर भाग गए।

लाहौर के शासक तैमूर ने जहान खाँ को जिम्मेदारी सौंपी कि वह अमृत सरोवर भर दे। उसे एक बड़ी फौज देकर गुरु के चक्क भेजा गया। उस समय अमृतसर में बाबा गुरबख्श सिंघ अपने तीस साथियों सहित अमृतसर के गुरुद्वारों की सेवा संभाल कर रहा था। जब उसे पता लगा कि तैमूर का सेनापति जहान खाँ अमृत सरोवर का अनादर करने आ रहा था तो उसने अपने साथियों को ललकारा। तीस शूरवीर तीन सौ जालिमों को मारकर शहीद हो गए। फिर जहान खाँ आगे बढ़ा और अपनी फौज को उसने हुक्म दिया कि सरोवर को भर दो। उसके फौजी सरोवर भरने लग गए। जब बाहरी सिक्खों को इस बारे पता लगा तो एक तेज घुड़सवार उसी वक्त दमदमा साहिब गया और जहान खाँ की करतूत के बारे में बाबा दीप सिंघ जी को बताया। जब बाबा जी को इस बात का पता लगा तो वे बड़े आवेश में आ गए। उन्होंने उसी वक्त नगाड़े पर चोट लगाई और अपने सिंघों को बुलाया। उन्होंने सिंघों को जहान खाँ की करतूत के बारे में परिचित करवाया। सिंघों से भी अमृत सरोवर का यह अनादर बर्दाश्त न हो सका। उन्होंने उसी वक्त कमरबन्द करने शुरु कर दिए।

बाबा दीप सिंघ ने क्षेत्र के सभी सिक्खों को संदेश भेज दिए। जब सभी सिंघ इकट्ठे हो गए तो बाबा दीप सिंघ ने कहा, "सिंघो, गुरुधामों की रक्षा के लिए हम मौत रानी से विवाह के लिए चले हैं। जो भी हमारी बारात में जाना चाहता है, वह शहीदी डोरी बाँध कर आए। अन्य को हमारे साथ आने की आवश्यकता नहीं। हमने अमृतसर और वहाँ के गुरुधामों को स्वतंत्र

करवाना है।" सभी सिंघों में बड़ा जोश भरा हुआ था, अत: सभी शहीदी डोरी बाँधकर बाबा जी की फौज में शामिल हो गए। जब वे दमदमा साहिब से तरनतारन की ओर चले तो अन्य मिसलों के सिंघों को जब पता लगता रहा तो वे भी उनके साथ शामिल होते गए। तरनतारन तक पहुँचते दस हजार सिंघों की फौज इकट्ठी हो गई थी।

तरनतारन के गुरुद्वारे जाकर सभी ने स्नान किया, गुरुद्वारे माथा टेका और प्रभु से अरदास की। तरनतारन से बाहर आकर उन्होंने एक जमीन पर एक लम्बी रेखा खींची और कहा, "जिस सिंघ को शहीदी परवान है वही इस रेखा को पार करे, शेष वापिस लौट जाएँ। परन्तु सभी सिंघ रेखा पार कर गए, कोई भी वापिस न लौटा।

बाबा दीप सिंघ जी के साथ बाबा नौध सिंघ जी, स. दयाल सिंघ, स. बलवंत सिंघ इत्यादि शूरवीर चल पड़े। सभी ने युग्म हथियार धारण किए हुए थे और अपने-अपने घोड़ों पर सवार थे। जहान खाँ जो अमृतसर पर अधिकार करके बैठा था, जब उसे पता लगा कि सिक्ख बाबा दीप सिंघ के नेतृत्व में एक बड़ी फौज लेकर अमृतसर को स्वतंत्र करवाने के लिए आ रहे हैं तो वह चालीस हजार फौज लेकर सिक्खों के आक्रमण को रोकने के लिए गोहलवढ़ आ गया।



धर्म-युद्ध और शहीदी

सिक्खों की फौज को आते देखकर जहान खाँ को शीत में भी पसीने आ गए। इन सिक्खों से तो अब्दाली इतना भयभीत था कि लाहौर में कुछ दिन ही रुक कर काबुल को भाग गया था। जिस फौज के घमण्ड पर वह दिल्ली तथा अन्य नगरों में जनसंहार कर आया था, उन फौजी सिपाहियों को मेमनों की तरह कत्ल करके सिक्ख हीरे-जवाहरात लूट कर ले जाते थे। जहान खाँ यही सोच रहा था कि यह नव-प्रशिक्षित फौज एवं सिक्खों की परछाई से डरने वाले अब्दाली के पठान क्या सिक्खों का मुकाबला कर सकेंगे? वह स्वयं बड़ी दुविधा में फँसा हुआ था। यदि वह भागता था तो तैमूर की तलवार उसका इंतजार कर रही थी और यदि वह सिक्खों से लड़ता था तो मौत अवश्यंभावी थी।

वह एक चक्रव्यूह बनाकर खड़ा था कि आने वाले सिक्खों को घेर लूँगा। परन्तु बाबा दीप सिंघ अनेक युद्ध लड़ चुके थे। उन्होंने फौज के एक भाग को बाबा नौध सिंघ की कमान में दाईं तरफ से हमला करने के लिए भिन्न कर दिया और फौज के एक भाग को स. दयाल सिंघ की कमान में बाईं तरफ से हमला करने भेज दिया। बाबा जी आप और स. बलवंत सिंघ एक भाग को लेकर भिन्न हो गए ताकि चक्रव्यूह टूटने पर सीधा हमला कर सकें। बाबा नौध सिंघ और स. दयाल सिंघ ने दोनों तरफ से ऐसा आक्रमण किया कि पठानी फौज के सारे चक्रव्यूह टूट गए और वे पीछे भागने के लिए मजबूर हो गए। जहान खाँ जो हाथी पर सवार था, ने पूरी फौज को ललकारा, "इन मुट्ठी भर काफिरों से डरते हुए पीछे भाग चले हो, लड़ो और मरो।" पठान फौज फिर धावा करके आगे बढ़ी। उनके बढ़ते हौंसले देखकर स. बलवंत सिंघ और बाबा दीप सिंघ ने अपनी फौज लेकर शेरों की तरह गर्जते हुए पठानों पर हमला कर दिया। बाबा दीप सिंघ ने ऐसा खंडा चलाया कि पठान उनके समक्ष बकरियों की तरह भागने लगे। जबरदस्त खाँ जो खुद को एक बड़ा योद्धा समझता था, बलवंत सिंघ की ओर बढ़ा। बलवंत सिंघ ने भी उसी वक्त घोड़ा उसकी ओर घुमा लिया। जबरदस्त खाँ ने तलवार का जोरदार प्रहार किया, जिसे बलवंत सिंघ ने अपनी ढाल पर रोक लिया, फिर उसने ऐसा वार किया कि जबरदस्त खाँ के दो टुकड़े हो गए। बाबा नौध सिंघ भी पठानी फौज को मौत के घाट उतारता जा रहा था। रुस्तम खाँ ने बाबा नौध सिंघ को चुनौती दी। जब दोनों आमने-सामने हुए तो दोनों ने एक दूसरे पर इकट्ठे ही प्रहार कर दिए और दोनों के सिर नीचे धरती पर गिर गए। इस तरह गाँव चब्बा के समीप बाबा नौध सिंघ शहीद हो गए। जब बाबा दीप सिंघ ने बाबा नौध सिंघ को शहीद होते देखा तो वे बहुत जोश में आ कर लड़ने लगे। उनका खंडा जिसे लगता था वह परलोक पहुँच जाता था। बाबा दीप सिंघ को आगे बढ़ता देखकर जमाल खाँ ललकारता हुआ बाबा जी के आगे आ गया। बाबा जी ने खंडे का ऐसा वार किया कि उनका खंडा जमाल खाँ को चीरता हुआ घोड़े में से निकल गया। पठानी फौजें भागने लगीं, पर जहान खाँ फिर उनको

धिक्कारने लगा। यह देखकर स. दयाल सिंघ ने एक तीर उसकी छाती पर मारा जिससे वह हाथी से नीचे गिर कर मृत्यु को प्राप्त हो गया।

उस समय बाबा दीप सिंघ जी पठानी फौज के टुकड़े करते अमृतसर की ओर बढ़ते जा रहे थे। इस रक्तपात में एक पठान की तलवार उनकी गर्दन पर लगी और वह गिर गए, परन्तु कुछ समय बाद हाथ से सिर को सहारा देते हुए वे उठ कर खड़े हो गए, उनकी गर्दन में से रक्त बह रहा था और यूं लगता था कि उनका सिर किसी भी समय नीचे आ गिरेगा। परन्तु वे एक हाथ से ही पठानों पर प्रहार करते और जोर से आगे बढ़ने लगे। जहान खाँ की मृत्यु हो जाने से



[illegible] भागने के बारे में सोच रहा था, परन्तु जब बाबा दीप सिंह को उन्होंने इस तरह लड़ते देखा तो वे जान बचाकर जिधर मुँह हुआ भागने लगे। बाबा दीप सिंघ जी तीव्रगति से आगे बढ़ते जा रहे थे कि अमृतसर को शत्रुओं से स्वतंत्र करवाना है, यह प्रण उनका पूरा हुआ और दरबार साहिब की परिक्रमा में जाकर वे गिर गए और गुरु–चरणों में विराज गए। उनका जहाँ अन्तिम संस्कार किया गया वहाँ गुरुद्वारा शहीदगंज स्थित है। अमृतसर स्वतंत्र हो गया और सिंघों ने सरोवर को साफ करके बाबा दीप सिंघ के प्रण को पूरा किया।

बाबा दीप सिंघ शहीद आज सिक्खों के शिरोमणि शहीद माने जाते हैं। अमृतसर में बाबा दीप सिंघ की स्मृति में बने गुरुद्वारा शहीदगंज की मान्यता हरिमन्दिर साहिब से द्वितीय स्थान पर आती है। जो भी सिक्ख दरबार साहिब के दर्शन करने आते हैं, वे गुरुद्वारा शहीदगंज के दर्शन करने अवश्य जाते हैं। कई लोगों का यह दृढ़ विश्वास है कि गुरुद्वारा बाबा दीप सिंघ में नित्य जाने से मन की सब कामनाएँ पूरी होती हैं।

जैसे कि पहले भी लिखा जा चुका है, बाबा दीप सिंघ 1726 ई. से लेकर 1757 तक 31 वर्ष दमदमा साहिब रहे थे। इसलिए वे दमदमी टकसाल के मूल संचालक होने के कारण सिक्ख इतिहास में सर्वोच्च स्थान रखते हैं। जहाँ एक तरफ उन्होंने वाणी के अर्थ पढ़ाकर और गुरु जी के निर्देशानुसार अमृतपान करवा कर सिक्खों में एक नवीन जोश पैदा किया वही उन्होंने सिक्ख योद्धाओं के जत्थे भी कायम किए। इस बात में अतिश्योक्ति नहीं होगी कि सिक्ख राज निर्माण में उनका प्रथम स्थान है। इतिहास साक्षी है कि जब 1732 ई. को बाबा आला सिंघ को भट्टी राजपूतों ने घेर लिया था और उनको शहीद करने में कोई अधिक समय शेष नहीं था, तब बाबा दीप सिंघ योद्धाओं का जत्था लेकर वहाँ पहुँच गए। भट्टी राजपूतों को उन्होंने ऐसा मारा कि उन्होंने पुनः पीछे न देखा।

ज़ब सन् 1748 ई. को सिक्खों के 65 जत्थे तोड़कर 12 जत्थे बना दिए गए तो उन जत्थों को मिसलों का नाम दिया गया। इन मिसलों में एक मिसल जो मरजीवों की थी, उस मिसल का जत्थेदार बाबा दीप सिंघ को बनाया गया और इस मिसल का नाम ही 'शहीद मिसल' से सुविख्यात हुआ। इस मिसल के पास अम्बाला क्षेत्र के इलाके थे।

यह बात मानने वाली है कि सिक्खों की बहादुरी समूचे संसार में प्रसिद्ध है। परन्तु ऐसा बहादुर योद्धा बहुत कम मिलता है, जिसे सब लोग इतना आदर एवं प्रेम देते हों। आज जब हम गुरुद्वारा शहीदगंज जाते हैं तो हमारा सिर स्वयं ही धरती पर झुक जाता है और हम अपने अन्तर्मन में यह ध्यान देते हैं कि क्या हम में ऐसी कुर्बानी करने की क्षमता है? परन्तु अगर हम में क्षमता नहीं है तो बाबा जी की स्मृति में बने गुरुद्वारे के कारण कुछ करने की हिम्मत अवश्य उत्पन्न होती है। जब तक सिक्ख कौम जिंदा है, बाबा दीप सिंघ जी भी शहीद के रूप में पूजनीय एवं माननीय होंगे।

बाबा बंदा सिंघ जी बहादर

आरम्भिक जीवन

बाबा बंदा सिंघ का ज़न्म 16 अक्तूबर सन् 1670 ईस्वी को जम्मू-कश्मीर के ज़िला पुंछ के ग्राम राजौरी में हुआ। आपका बचपन का नाम लक्ष्मण देव था। आपके पिता रामदेव कृषि पालन का कार्य करते थे।

उन दिनों में शिक्षा का प्रबंध न होने के कारण आप विद्या प्राप्त करने से वंचित रहे। पर आपका शरीर बड़ा फुर्तीला एवं मजबूत था और आपको घुड़सवारी व आखेट का बहुत शौक था।

एक दिन उनके साथ एक विचित्र घटना हो गई। जब आप आखेट करने गए तो आप ने एक हिरणी को तीर मारा, जिस कारण वह मर गई। जब वह उसे उठाकर घर लाए और उसका चीरफाड़ किया तो हिरणी के पेट में से दो ज़िंदा बच्चे निकले जो उसके सामने तड़प-तड़प कर मर गए। लक्ष्मण देव के कोमल दिल पर इसका बहुत प्रभाव पड़ा। वह बहुत पछताया और उसका मन वैरागमयी हो गया। वह सांसारिक जीवन को त्याग कर वैरागी हो गया और जानकी दास नामक एक साधु का चेला बन गया। जानकी दास ने उसका नाम माधो दास रख दिया। अपने गुरु जानकी दास के साथ उसने बहुत यात्रा की। एक बार भ्रमण करते हुए वे कसूर चले गए। वहाँ जाकर वह रामदास वैरागी की मण्डली में मिल गया और उसके साथ भी प्रसिद्ध तीर्थों की यात्रा की। यात्रा करते-करते वे पंचवटी पहुँचे। वह स्थान उन्हें बहुत अच्छा लगा और वहीं ठहर गए।

इस स्थान पर माधो दास का मेल एक औघड़ नाथ नामक योगी से हुआ। औघड़ नाथ तंत्र-विद्या में बड़ा निपुण था। तंत्र-विद्या एवं ऋद्धियाँ-सिद्धियाँ सीखने के लिए माधो दास उसका चेला बन गया। उसने औघड़ नाथ की भरपूर सेवा की और हर प्रकार की विद्या उससे प्राप्त कर ली। माधो दास उसकी बहुत सेवा करता था। इस बात को मुख्य रखकर मरते समय औघड़ नाथ अपने डेरे का स्वामित्व एवं जंत्र-मंत्र का कीमती ग्रंथ भी उसे सौंप गया।

तंत्र-विद्या में निपुण होकर माधो दास ने अपना डेरा नासिक के निकट गोदावरी तट पर बसा लिया। मंत्रों-जंत्रों के कारण वह बहुत प्रसिद्ध हो गया और जरूरतमंद लोगों की उसके पास भीड़ लगी रहती। उसके काफी चेले बन गए और उसके डेरे में कई कमरे बन गए और धन-दौलत की कोई कमी न रही। श्रद्धालुओं की संख्या में दिन-ब-दिन वृद्धि होती गई। माधो दास बड़ा घमण्डी हो गया और वह अतिथि साधुओं की सेवा करने की जगह उनकी खिल्ली उड़ाने लगा। अपने जंत्रों-मंत्रों की शक्ति से वह साधुओं की चारपाइयाँ उलटा देता।

गुरु गोबिन्द सिंघ जी जब नांदेड़ गए तो उन्हें माधो दास के चरित्र का पता लगा। वे कुमार्गगामी माधो दास को सुधारने के लिए उसके डेरे गए। परन्तु माधो दास उस समय डेरे में उपस्थित नहीं था। गुरु जी विश्राम करने के लिए उसके पलंघ पर लेट गए और गुरु के सिंघ

भोजन तैयार करने लग गए। जब माधो दास के चेलों ने यह सब-कुछ देखा तो वे माधो दास के पास शिकायत करने चले गए। चेलों की बात सुनकर वह बड़ा आग बबूला हुआ और डेरे की तरफ चल पड़ा। अपने पलंघ पर जब एक अजनबी को लेटा देखा तो वह बड़े जोश में आकर जंत्रों-मंत्रों की सहायता से पलंघ को उलटाने लगा, परन्तु उसकी कोई पेश न गई। उसका सारा अहंकार चूर-चूर हो गया और वह गुरु जी के चरणों में आ गया। गुरु जी ने कहा, "माधो दास! तू अपनी शक्तियों का उपयोग बुरे कामों में कर रहा है, मैं तुझे अपना सिंघ बनाने आया हूँ।" माधो दास कहने लगा, "हजूर! मैं आपका बंदा हूँ, जैसे आपकी मर्जी हो करो।"

गुरु गोबिन्द सिंघ जी ने माधो दास को सिंघ सुशोभित करके उसका नाम बंदा सिंघ रख दिया। इस तरह माधो दास की काया ही पलट गई और एक साधु से वह एक शूरवीर सिंघ बन गया।



बाबा बंदा सिंघ पंजाब की तरफ

बाबा बंदा सिंघ मुगलों द्वारा सिक्खों पर किए अत्याचारों की दास्तान सुनकर बड़ा क्रोध में आ गया। वह चाहता था कि यदि गुरु जी उसे आज्ञा दें तो पंजाब जाकर जालिम मुगलों का राज खत्म करे। परन्तु उन दिनों में ही एक अन्य घटना घटित हो गई। सरहिन्द के सूबेदार वजीर खाँ को जब पता लगा कि गुरु गोबिन्द सिंघ उस समय के बादशाह बहादर शाह के बहुत निकट हो गए हैं तो वह बहुत डर गया कि गुरु गोबिन्द सिंघ यदि पंजाब में वापिस आए तो उसकी खैर नहीं थी। इसलिए उसने दो पठान गुरु जी को कत्ल करने के लिए भेजे। ये पठान कुछ दिन गुरु जी के पास ठहरे और एक दिन मौका मिलने पर एक पठान ने गुरु जी पर हमला करके उन्हें घायल कर दिया। इस घटना का बाबा बंदा सिंघ बहादर पर बड़ा प्रभाव पड़ा और उसने गुरु जी के पास विनती की कि उसे पंजाब जाने दिया जाए ताकि वह शत्रुओं को मिटा सके। गुरु जी स्वयं भी पंजाब आना चाहते थे, परन्तु उनके गहरे घाव होने के कारण उन्होंने बाबा बंदा सिंघ को पंजाब भेजने का फैसला कर लिया।

गुरु जी ने बंदा सिंघ को अपने पास बुलाकर बहादुरी का आशीष दिया, अपने तरकश में से पाँच तीर दिए और उसकी सहायता के लिए भाई दया सिंघ, भाई बाज सिंघ, भाई बिनोद सिंघ, भाई फतेह सिंघ, भाई काहन सिंघ और भाई रण सिंघ को भेजा। एक निशान साहिब और नगारा भी दिया। गुरु जी ने उसे आवश्यक हिदायतें देकर पंजाब में प्रसिद्ध सिक्खों के नाम हुक्मनामे लिख दिए ताकि वे बंदा सिंघ को उनका प्रतिनिधि समझकर उसकी पूरी सहायता करें।

बाबा बंदा सिंघ शूरवीर सिंघों को साथ लेकर पंजाब की तरफ चल पड़ा। दिल्ली की सीमा तक पहुँचते उसने कोई कार्रवाई न की। जब गुरु के सिक्खों को पता लगा कि बंदा सिंघ गुरु का प्रतिनिधि है तो वे बड़े प्रेम से बंदा सिंघ को मिलने आने लगे। वह जिस गाँव में भी ठहरता उस गाँव के लोगों को हौंसला देता और जालिम हकूमत से टक्कर लेने के लिए प्रेरित करता।

एक दिन जब वह एक गाँव में ठहरा हुआ था तो उसे पता लगा कि गाँव के वासी, गाँव को छोड़कर जा रहे हैं। जब उसने इसका कारण पूछा तो उन्होंने बताया कि रात को लुटेरे गाँव को लूटने आ रहे हैं। बंदा सिंघ ने उन्हें बड़ा हौंसला दिया, परन्तु सदियों से तिरस्कृत हुए कैसे धीरज कर सकते थे? आखिर बंदा सिंघ ने अपने साथियों के साथ मिलकर डाकुओं का मुकाबला करने का प्रोग्राम बनाया।

जब डाकू शाम को आए तो बंदा सिंघ और उसके साथियों ने लुटेरों को ऐसा मजा चखाया कि पहले लूटा हुआ माल भी छोड़ गए। फिर गाँव के लोगों में भी हौंसला जाग पड़ा और उन्होंने डाकुओं का पीछा करके उन्हें समाप्त कर दिया। इस घटना ने समीपवर्ती गाँवों के भी

हौंसले बढ़ा दिए और बंदा सिंघ जिस गाँव में जाता, उसका बड़ा अभिनंदन होता।

वह हर गरीब की मदद करता था। जो उससे धन माँगने आता तो एक मोहर से कम न देता। इस तरह लोग उसकी दयालुता पर बहुत प्रसन्न थे। उसने मालवा, दुआबा और माझा के लोगों को हुक्मनामे भेजे। अन्य सिंघ भी उसकी सेना में शामिल होने लगे। इस तरह बंदा सिंघ की फौज में वृद्धि होने लगी।

वह एकदम बड़े सेनापतियों पर हमला नहीं करना चाहता था। इसलिए कुछ समय गाँवों में ही रहकर वह सिंघों को तीरअंदाजी, तलवारबाजी और बंदूक चलाने का अभ्यास करवाता रहा।



प्रारम्भिक जीतें

कुछ समय में ही बंदा सिंघ के पास काफी बड़ी संख्या में सिंघ शूरवीर इकट्ठे हो गए। सभी सिंघ सरहिन्द के सूबेदार वजीर खाँ को मारने के लिए बहुत व्याकुल थे। परन्तु बंदा सिंघ जानता था कि सरहिन्द के सूबे के पास एक बड़ी शस्त्रबद्ध सेना थी और उसे शेष सेनापतियों से सहायता मिलने की उम्मीद थी। इसलिए उसने यह कार्यक्रम बनाया कि पहले आस-पास के हाकिमों को समाप्त कर लिया जाए ताकि कुछ हथियार, घोड़े एवं धन भी प्राप्त हो सके।

पहला हमला उन्होंने सोनीपत पर किया। पर सोनीपत का हाकिम बंदा सिंघ का मुकाबला न कर सका और दिल्ली को भाग गया। सिंघों का सोनीपत पर कब्जा हो गया। सोनीपत से वे कैथल की तरफ आगे बढ़े। कैथल का फौजदार भी हार गया और सिंघों को बहुसंख्या में घोड़े एवं मोहरें प्राप्त हुईं।

फिर बंदा सिंघ ने समाना को समाप्त करने का मन बनाया। समाना के सय्यद जल्लाद ने गुरु तेग बहादुर जी को शहीद किया था और शाशल बेग और बाशल बेग ने सरहिन्द में छोटे साहिबजादों को मारा था। समाना में बड़े अमीर सय्यद रहते थे, इसलिए इसको जीतने से सारे क्षेत्र में सिक्खों का बड़ा यश हो जाना था।

परन्तु समाना को जीतना कोई सरल कार्य नहीं था। वह पुराना शहर था और उसके चारों तरफ एक मज़बूत प्राचीर थी। शहर के भीतर भी जो सय्यदों की हवेलियाँ थीं, वे भी छोटे किले ही थे। यहाँ का फौजदार स्वयं को अजेय समझता था। परन्तु बंदा सिंघ इतने तेज तूफान की तरह आ गया कि शहर वासी दरवाजे बंद करने भी भूल गए। काफी घमासान युद्ध हुआ। सिंघ सभी जल्लादों के घरों को तबाह करके फौजदार से मुकाबला करने लगे। बड़े-बड़े धनवानों एवं फौजदार के खजाने लूट लिए। हथियार एवं घोड़े अपने काबू में कर लिए। समीपवर्ती गाँवों के सभी वासी इन सय्यदों के काश्तकार थे, इसलिए उन्होंने भी गिन-गिन कर बदले लिए।

सय्यदों की हवेलियों को उन्होंने आग लगा दी और वे भीतर ही जलकर मर गए। समाना शहर के बड़े-बड़े मकान मिट्टी में मिल गए। समाना को जीतने में भाई फतेह सिंघ ने बहुत वीरता दिखाई थी। इसलिए बंदा सिंघ ने उसे समाना का फौजदार नियुक्त कर दिया। इस जीत में धन के भरपूर भण्डार प्राप्त हुए थे, जिसे बंदा सिंघ ने अपने साथियों में बाँट दिया।

बंदा सिंघ कुछ दिन समाना ठहर कर फिर घड़ाम, ठसका, मुस्ताबाद और कपूरी के जालिम हाकिमों को समाप्त करता हुआ सढौरा की ओर बढ़ा। सढौरा वह शहर था जहाँ के हाकिम उसमान खाँ ने पीर बुद्धु शाह को यातनाएँ देकर मरवा दिया था। उल्लेखनीय है कि पीर बुद्धु शाह ने भंगाणी के युद्ध में गुरु गोबिन्द सिंघ की मदद की थी।

उसमान खाँ बड़ा कट्टर मुसलमान था और यह हिन्दुओं को बहुत यातनाएँ दिया करता था।

जब बंदा सिंघ एवं उसके साथी सढौरे की ओर बढ़े तो निकटवर्ती ग्रामीण हथियार उठाकर उनके साथ मिल गए। इन लोगों ने बंदा सिंघ से भी पूर्व जालिम सय्यदों एवं शेखों को दबोचा। जो कुछ हाथ आया उन्होंने लूटा। कई सय्यद एवं शेख पीर बुद्धु शाह की हवेली में छिप गए। वे जानते थे कि पीर बुद्धु शाह की पाकदामनी के कारण सिंघ उन्हें कुछ नहीं कहेंगे। पर क्षेत्र के पीड़ित लोग कैसे बर्दाश्त कर सकते थे? वे हवेली में दाखिल हो गए और सब जालिमों का कत्ल करके ही दम लिया। जिस स्थान पर कत्लेआम हुआ उस स्थान को कत्लगढ़ी कहते हैं। बंदा सिंघ चूँकि उस जगह से परिचित नहीं था इसलिए वह स्थानीय वासियों को किसी बात से रोक न सका।



सरहिन्द की लड़ाई

जब बंदा सिंघ ने सरहिन्द के आसपास के सभी क्षेत्र जीत लिए तो सरहिन्द का हाकिम वज़ीर खाँ भयभीत हो गया कि अब उस पर ही हमला होगा। जब उसे पता लगा कि माझा एवं दुआबा के सिंघ भी बंदा सिंघ की सहायता हेतु पहुँच रहे हैं तो उसने मलेरकोटला के नवाब शेर मुहम्मद को हुक्म किया कि वह मझैलों एवं दुआबियों को दरिया सतलुज पार न करने दे। रोपड़ में नवाब मलेरकोटले का सिक्खों से बड़ा भयानक युद्ध हुआ और सिक्खों को जीत प्राप्त हुई। मझैलिए और दुआबिए भी बंदा सिंघ के साथ मिल गए। अब बंदा सिंघ की ताकत बहुत बढ़ चुकी थी। बाबा दीप सिंघ भी दमदमा साहिब से साहसी योद्धाओं की सेना लेकर उसे आ मिला था।

जब वजीर खाँ को पता लगा कि बंदा सिंघ एक बड़ी फौज लेकर उसकी तरफ बढ़ रहा है तो वह अपनी फौज को लेकर चप्पड़-चिड़ी के मैदान पर आकर डट गया। चप्पड़-चिड़ी का मैदान सरहिन्द से दस मील दूर है। वजीर खाँ के पास अनेक तोपें, बंदूकें, हाथी एवं घोड़े थे। उसने पहली पंक्ति में तोपें तय कर दीं और हाथी खड़े कर दिए। बंदा सिंघ भी अब तक कई लड़ाइयाँ लड़ चुका था और इस क्षेत्र में वह काफी अनुभवी हो गया था।

उसने फौज की कमांड बाज सिंघ, फतेह सिंघ, बिनोद सिंघ, दीप सिंघ एवं राम सिंघ के हवाले की और ये सभी सेनापति अपनी-अपनी सेना लेकर वजीर खाँ की सेना के चारों तरफ छा गए। वजीर खाँ ने हाथियों और तोपों की जो दीवार बनाई हुई थी, उसे ध्वस्त करने के लिए यह साहसी योद्धाओं का जत्था तलवारें लेकर ही उन पर टूट पड़ा। जब तोपों के गोलों की कोई परवाह न करते हुए वे हाथियों की सेना में दाखिल हो गए और तलवारों एवं नेजों से कुछ हाथी नीचे गिरा लिए तो घायल हाथी पीछे भागते हुए अपनी सेना को ही कुचलने लगे। तोपचियों को समाप्त किया और तोपें चलनी बंद हो गईं। बस यह दीवार ध्वस्त होने की देर थी कि सिंघों ने चारों तरफ से वजीर खाँ की सेना को घेर लिया। कुछ समय में ही वजीर खाँ की सेना का निष्ठुरता से वध कर दिया। वजीर खाँ को अब बहुत पछतावा हुआ कि उसने सरहिन्द से बाहर निकल कर सिंघों से लड़ने की बड़ी भूल की थी। यदि सरहिन्द में अपने किले में रहकर लड़ाई लड़ता तो वह इतनी शीघ्र हार नहीं सकता था? उसके पास प्रचुर तोपें थीं जो कई दिन मार कर सकती थीं। वजीर खाँ ने जब देखा कि उसकी लगभग सारी सेना मारी गई है तो उसने भी अपने कुछ साथियों सहित भागने की कोशिश की। परन्तु बाज सिंघ ने घोड़ा भगाकर उसे घेर लिया। बंदा सिंघ चाहता था कि उसे जिंदा पकड़ा जाए, परन्तु उसने बाज सिंघ के सामने होकर उसे चुनौती दी और पूरे जोर से नेजा बाज सिंघ को मारा किन्तु बाज सिंघ घोड़े को घुमाकर वार बचा गया और बाज की फुर्ती की तरह उसने वजीर खाँ के हाथ से उसका ही नेजा छीन लिया। उसी नेजे को उसने इतनी जोर से उसके हाथी पर मारा कि हाथी

से वजीर खाँ नीचे गिर गया। वजीर खाँ ने उसी वक्त संभलकर एक तीर बाज सिंघ को मारा जो उसकी बाँह को भेद गया। बाज सिंघ को घायल हुआ देखकर वह तलवार लेकर आगे बढ़ा। यह हो सकता था कि वह बाज सिंघ को शहीद कर देता। इसलिए जिंदा पकड़ने का ख्याल छोड़कर फतेह सिंघ दौड़कर उसकी तरफ आया और अपनी तलवार से उसके कंधे पर वार किया मगर फिर भी वह प्राण बचाकर सरहिन्द की ओर भाग गया। बंदा सिंघ सहित सभी ने सरहिन्द शहर की ओर कूच कर दिया। सरहिन्द में दाखिल होते ही सिंघों को साहिबजादों के कत्ल की घटना याद आ गई। बस फिर वे इतने जोश में आए कि उन्हें रोकना असंभव था। सरहिन्द में सिंघों एवं वजीर खाँ की फौज का जबरदस्त मुकाबला हुआ। जब सिंघों ने किले में दाखिल होने की कोशिश की तो वजीर खाँ ने अपने किले के ऊपर से गर्म पानी एवं तेल भी डाला। आखिरकार इस युद्ध में सिंघों की जीत हुई। सिंघों ने वजीर खाँ को पकड़कर बाज़ार में घसीट-घसीट कर ही मार डाला।

सरहिन्द अपने कब्जे में लेकर बंदा सिंघ ने बाज सिंघ को सरहिन्द का हाकिम नियुक्त कर दिया।



लोहगढ़

बंदा सिंघ ने सरहिन्द को पूरी तरह तबाह होने से बचा लिया था परन्तु वह सरहिन्द को अपनी राजधानी नहीं बनाना चाहता था। सरहिन्द क्योंकि राजमार्ग पर स्थित था, इसलिए किसी समय भी उसे शाही लश्कर का सामना करना पड़ सकता था। इसलिए उसने मुख्लसगढ़ के किले को अपनी राजधानी बनाया।

यह किला बादशाह शाहजहान के हुक्म से मुखलिस खाँ ने बनवाया था। यह किला आमूवाल गाँव की सीमा में हिमालय पर्वत की ऊँची चोटियों में स्थित है। इस तक पहुँचने के लिए बड़ी कठिन चट्टानों एवं टीलों को पार करना पड़ता है।

बंदा सिंघ ने इस किले पर कब्जा करके इसे मरम्मत करवाना शुरु कर दिया। जब यह ठीक बन गया तो इसका नाम लोहगढ़ रखा गया। इस किले में वह आयुध एवं अपना खजाना रखता था।

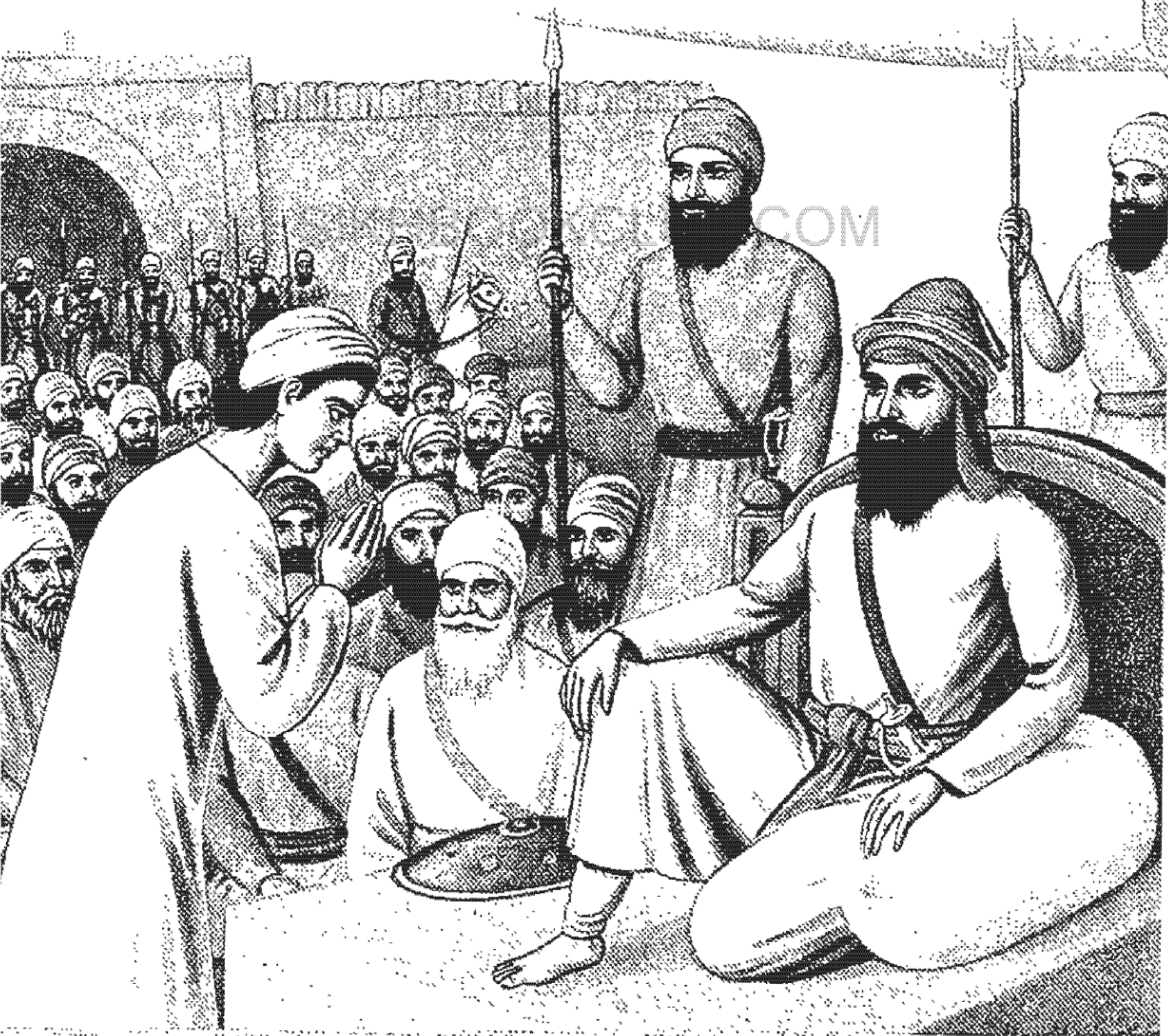
बंदा सिंघ अब एक राजा बन गया था। इसलिए अपने राज को चलाने के लिए उसने गुरु नानक-गुरु गोबिन्द पातशाह के नाम पर सिक्का जारी किया और अपनी एक मोहर भी बनवाई। मुगल बादशाह की तरह उसने सरहिन्द की जीत वाले दिन से एक सम्वत भी जारी कर दिया। वह हर पक्ष से मुगलों की बराबरी करना चाहता था और सिंघों को यह बताना चाहता था कि मुगल बादशाहों से वे किसी बात से कम नहीं थे।

बादशाह बनते ही बंदा सिंघ ने पहले यह काम किया कि मुगलों द्वारा चलाई जमींदार प्रणाली खत्म कर दी। मुगल बादशाह एक जमींदार को कई-कई गाँव एवं परगने दे देते थे। वह जमींदार एक प्रकार का अपने इलाके का मालिक ही होता था। बादशाह उसके काम में हस्तक्षेप नहीं करता था। उसका काम तो केवल कर वसूलना ही होता था। इसलिए यह जमींदार अपने काश्तकारों पर बहुत अत्याचार करते थे, जिस कारण प्रजा बहुत दुखी रहती थी। यही कारण था कि जब बंदा सिंघ किसी शहर पर हमला करता था तो उस क्षेत्र के किसान उसकी पूरी मदद करते थे और जमींदारों से प्रतिशोध भी लेते थे। बंदा सिंघ के हुक्म से सभी काश्तकार भूमिपति बन गए।

बंदा सिंघ का राज नि:संकोच थोड़ी देर ही रहा, परन्तु हर दुखी उसे अपना मसीहा समझता था और जब वह बंदा सिंघ के पास पेश होता था तो वह उसकी पूरी सहायता करता था। सिंघों ने दुखी देशवासियों की सेवा को अपना धार्मिक फर्ज बना लिया। जिस कर्मचारी अथवा अफसर बारे वे शिकायत सुनते तो उसे ऐसी सजा देते कि वह पुन: सिर न उठाता। बंदा सिंघ ने सभी मुगल कर्मचारियों को जिम्मेदार पदों से हटा दिया और उनकी जगह धर्मी सिंघों को नियुक्त कर दिया। सिंघों का मान इतना बढ़ गया कि मुगलों के उनकी तरफ देखकर प्राण ही सूख जाते थे। सिंघों में ऊँच-नीच की कोई भावना नहीं थी, हरेक बराबर था, किसी भी

जाति–बिरादरी का व्यक्ति जब सिंघ बन जाता तो वह केवल सिंघ ही होता, जाति उससे कोई संबंध न रखती।

एक बार एक निम्न जाति का नवयुवक, बंदा सिंघ के पास आया और उसने सिंघ बनने हेतु विनती की। बंदा सिंघ ने उसे सिंघ बनाया और कहा, "तेरे गाँव में अन्य कितने सिंघ हैं?" उस व्यक्ति ने कहा कि उसके गाँव में कोई भी सिंघ अथवा सिक्ख नहीं है। बंदा सिंघ ने उसे गाँव का मुखिया नियुक्त कर दिया और उसे अपनी मोहर लगाकर परवाना लिख दिया। जब वह सिंघ अपने गाँव गया तो उसने बंदा सिंघ का लिखा परवाना दिखाया तो गाँव के सभी अमीर एवं गरीब उसके स्वागत के लिए आए। वे सभी हाथ जोड़कर उसके समक्ष ख़ड़े हो गए और कहने लगे, "हुक्म करो, हम क्या सेवा करें?"



सहारनपुर

सरहिन्द को जीतने के पश्चात् बाबा बंदा सिंघ बहादर के बाहुबल का यश दूर-दूर तक फैल गया। कई मुसलमान एवं हिन्दु अमृतपान करके सिंघ बनने लगे। उस समय ही उनारसा गाँव के बहुत सारे मुसलमान एवं हिन्दु सिंघ बन गए। उस क्षेत्र के फौजदार ज़लालदीन को यह पता लगा तो उसने सारे सिंघ कैद कर लिए और यातनाएँ देने लगा। जब बंदा सिंघ बहादर को इस बात की सूचना मिली तो वह अपने सिंघ लेकर उनारसा की ओर चल पड़ा।

मार्ग में सहारनपुर आता था। यह शहर भी मुसलमानों का एक बड़ा गढ़ था। सिंघों ने यमुना पार करके सहारनपुर की ओर घोड़े भगा लिए। उस समय सहारनपुर का हाकिम अली अहमद खाँ था। जब उसे पता लगा कि सिंघ सहारनपुर की ओर बढ़ रहे हैं तो वह अपना माल लेकर दिल्ली की ओर भाग गया। परन्तु सहारनपुर के लोगों ने सिंघों का डटकर मुकाबला किया, पर शीघ्र ही पराजित हो गए। सिंघों ने अभिमानियों को चुन-चुनकर मारा और सहारनपुर पर कब्जा करके उसका नाम ही भाग नगर रख दिया।

सहारनपुर में बाबा बंदा सिंघ बहादर को पता लगा कि 'बिहत' नगर के मुसलमान हिन्दुओं पर बहुत अत्याचार कर रहे हैं। बाबा जी ने सिंघों की एक टुकड़ी बिहत के पीरज़ादों का अंत करने के लिए भेजी। ये पीरज़ादे गलियों-बाजारों में गौ-हत्या करते थे। सिंघों ने पीरज़ादों एवं धनवान जमींदारों का वध कर दिया।

पीरज़ादों का सफाया करके सिंघ वापिस सहारनपुर आ गए। जब सभी सिंघ इकट्ठे हो गए तो बंदा सिंघ बहादर ने जलालाबाद का अंत करने का कार्यक्रम बनाया। जलालाबाद के मार्ग में ननौता आता था। यहाँ के शेख बड़ा अत्याचार कर रहे थे। इसलिए सिंघों ने पहले ननौते के शेखों को दण्ड देने का मन बनाया। परन्तु जब सिंघों ने ननौते पर हमला किया तो शेखों ने तीरों की ऐसी बौछार छोड़ी कि काफी सिंघ शहीद हो गए। इस क्षति ने सिंघों में अथाह जोश भर दिया। उन्होंने फिर ऐसे जोर से तलवार चलाई कि ननौते की नगरी तबाह हो गई। बताया जाता है कि तीन सौ शेख, एक शेख की हवेली में ही मारे गए।

ननौते से सिंघ जलालाबाद की ओर बढ़े। उन्होंने जलाल खाँ को एक चिट्ठी लिखी कि वह उनारसा के कैद किए हुए सिंघों को छोड़ दे और खालसा की अधीनता मान ले। परन्तु जलाल खाँ ने न ही सिंघ छोड़े और न ही अधीनता मानने को तैयार हुआ। जलाल खाँ को बहुत देर का पता लग चुका था कि सिंघ उस पर हमला करने आ रहे हैं, इसलिए उसने जलालाबाद किले को बड़ा मजबूत कर लिया और बहुसंख्या में युद्ध-सामग्री और खाने-पीने का सामान जमा कर रखा था।

सिंघों ने जलालाबाद किले को जाकर घेरा डाला। जलाल खाँ ने अपने पौत्रे गुलाम मुहम्मद खाँ और भतीजे हयबर खाँ को सिंघों का मुकाबला करने के लिए भेजा। बड़ी जबरदस्त लड़ाई

हुई जिसमें हयबर खाँ मारा गया। जलाल खाँ के भतीजे जमाल खाँ और पीर खाँ भी सिंघों को रोकने के लिए आए किन्तु दोनों मारे गए।

परन्तु जलालाबाद का किला इतना मजबूत था कि उसे जीत लेना कोई आसान काम नहीं था। उन दिनों में बहुत बरसात हुई जिस कारण किले के चारों तरफ पानी भर गया। अब सिंघों के लिए किले के पास पहुँचना बड़ा कठिन हो गया। सिंघों ने बीस दिन तक घेरा डाले रखा। मगर उस पर विजय प्राप्त करने में कामयाब न हो सके। आखिर उन्होंने लकड़ी के फट्टों के मोर्चे बनाकर गाड़ियों पर रखकर दरवाजे तक पहुँच गए और दीवार में दरार डालकर ऊपर चढ़ गए। उन्होंने दरवाजे को तोड़ने एवं जलाने का भी प्रयास किया परन्तु दरवाजा इतना मजबूत था कि टूट न सका। जब बंदा सिंघ बहादर द्वारा घेरा छोड़कर वापिस सहारनपुर आने का आदेश मिला तो सिंघ वापिस आ गए। उस समय जालंधर के हाकिम समस खाँ की सिंघों से लड़ाई हो रही थी, इसलिए दुआबे के सिंघों की मदद करने की अति आवश्यकता थी।



दुआब म

सहारनपुर के इर्द–गिर्द सभी क्षेत्र अपने अधीन करके सिंघों ने यह योजना बनाई कि अब सतलुज से पार दुआबे को भी अपने अधीन किया जाए। दुआबे में जालंधर और होशियारपुर के इलाके आते थे। उस समय समस खाँ जालंधर का फौजदार था। उसने सुलतानपुर लोधी को अपना मुख्यालय बनाया हुआ था। दुआबे के इलाके में सिंघों को अधिक मुश्किल पेश न आई। जिधर भी जाते उस इलाके के हाकिम तुरंत अधीनता स्वीकार कर लेते। समस खाँ पर हमला करने से पूर्व उन्होंने उसे एक चिट्ठी लिखी जिस में स्पष्ट लिख दिया कि या अधीनता मान ले या लड़ाई के लिए तैयार हो जाए। समस खाँ ने चिट्ठी पढ़कर अपने अधिकारियों से सलाह–मशविरा किया। उन सभी ने यह सलाह दी कि सिंघों का डटकर मुकाबला करना चाहिए। परन्तु समस खाँ डरता भी था कि उसने तुरन्त अस्वीकृति भेज दी तो सिंघों ने तत्क्षण हमला कर देना है। इसलिए तैयारी हेतु कुछ समय विलम्ब के लिए उसने सिंघों को संदेश भेज दिया कि वह शीघ्र ही खजाना एवं सिक्का बारूद लेकर उन्हें मिलेगा। कुछ मोहरें एवं सिक्का–बारूद उसने भिजवा भी दिया। इसके बाद उसने लड़ाई की तैयारियाँ आरम्भ कर दीं। इसके साथ ही उसने जेहाद का बिगुल बजा दिया और मुसलमानों को हैदरी झण्डे के नीचे खड़े होने के लिए कहा। इस तरह समस खाँ ने एक लाख के लगभग सेना इकट्ठी कर ली और वह एक लाख सेना लेकर सुलतानपुर लोधी से चल पड़ा।

परन्तु दूसरी ओर सिंघ यही समझ रहे थे कि समस खाँ ने अधीनता मान ली है और शीघ्र ही वह खजाना लेकर हाजिर हो जाएगा। मगर उन्हें वास्तविक बात का उस समय पता लगा जब समस खाँ ने बिगुल बजाकर एक लाख सेना इकट्ठी कर ली। परन्तु सिंघों के पास अल्पमात्रा में ही सेना थी। इसलिए सिंघों ने बंदा सिंघ बहादर को सन्देश भेजा। परन्तु बंदा सिंघ हालात को मुख्य रखकर स्वयं तो न आया किन्तु उसने जलालाबाद का घेरा उठवा दिया और सिंघों को दुआबे पहुँचने का आदेश कर दिया।

मगर समस खाँ को भी यह खबर मिल गई कि जलालाबाद के घेरे वाली सिंघ सेना माछीवाड़े द्वारा दुआबे पहुँच रही है। इसलिए उन्हें दरिया पार करने से रोकने के लिए उस दिशा की तरफ बढ़ा। पर सिंघ उसके पहुँचने से पूर्व ही दरिया पार कर चुके थे। राहों पहुँच कर सिंघों ने देखा कि लाखों जेहादी लोग उनकी तरफ बढ़े आ रहे थे। सिंघों की संख्या बहुत थोड़ी होने के कारण उन्होंने भिन्न–भिन्न स्थानों पर मोर्चे संभाल लिए। पर इतनी बड़ी संख्या में जेहादियों की फौज को देखकर उन्होंने राहों का किला संभाल लिया। जेहादियों ने किले को घेर लिया किन्तु सिंघों ने रात को निकलकर उन पर हमला कर दिया और उनका काफी नुकसान कर दिया। पर जेहादियों के टिड्डी दल को खत्म करना बड़ा दुर्गम था। इसलिए एक रात अंधेरे में निकल कर दूर चले गए। समस खाँ ने यह समझा कि सिक्ख पराजित होकर भाग

गए हैं। इसलिए वह सुलतानपुर को लौट गया। पर सिंघ समीप ही झाड़ियों में छिपे हुए थे। इसलिए अगले दिन वे राहों वापिस आ गए और समस खाँ के आदमियों का वध करके किले पर कब्जा कर लिया। समस खाँ सिंघों की इस चालाकी पर बहुत चकित हुआ।

राहों पर कब्जा करके सिंघ फिर जालंधर की ओर बढ़े। जालंधर के पठान, सिंघों के आगमन की खबर सुनकर ही भाग गए और जालन्धर पर सिंघों का कब्जा हो गया। इसके बाद सिंघ होशियारपुर की ओर गए। मगर वहाँ के सरकारी अधिकारियों ने मुकाबला न किया और अधीनता मान ली। इस तरह सिंघों का समूचे दुआबे पर कब्जा हो गया। तदन्तर समस खाँ और सिंघों की अनेक लड़ाईयाँ हुई परन्तु वह सिंघों को हरा न सका।



किला लोहगढ़ की घेराबन्दी

जब बादशाह बहादर शाह दक्षिण से वापिस आया तो उसे पता लगा कि सिंघों ने पंजाब पर कब्जा कर लिया है। पंजाब को पुनः अपने क़ब्जे में करने के लिए बादशाह स्वयं पंजाब आया। उसने सरहिन्द को जीतने के लिए मुहम्मद अमीन खाँ को एक बड़ी सेना देकर भेजा। परन्तु इससे पूर्व ही समस खाँ सरहिन्द पर कब्जा करने के लिए पहुँच चुका था। उस समय बाज सिंघ तो किले में नहीं था परन्तु वहाँ मौजूद सुक्खा सिंघ एवं शाम सिंघ ने डटकर मुकाबला किया। इस लड़ाई में सुक्खा सिंघ तो शहीद हो गया परन्तु शाम सिंघ शेष सिंघों को लेकर लोहगढ़ के किले में चला गया। जब 4 दिसम्बर 1710 को बहादर शाह सढौरा पहुँचा तो उस समय सभी सिंघ लोहगढ़ के किले में इकट्ठे हो गए थे। उस समय बंदा सिंघ बहादर भी उनकी सहायता हेतु पहुँच गया था।

मुगल फौज के सभी सरदार एवं सिपाही बंदा सिंघ बहादर को एक जादूगर समझते थे। वे बंदा सिंघ को एक करनी वाला शक्तिशाली महाबली मानते थे। वे कहते थे कि तलवार, तीर एवं गोलियाँ उसके सिंघों पर कोई असर नहीं करती हैं। ऐसी खबरें सुनकर बादशाह और उसके सेनापति बड़े घबराए हुए थे।

पर उधर बंदा सिंघ के आ जाने से सिंघों के हौसले बढ़ गए थे।

4 दिसम्बर 1710 को बादशाह ने रुसतम खाँ और फिरोज़ खाँ मेवाती को किले पर कब्जा करने के लिए भेजा। पर रुसतम खाँ अपने दस्ते को लेकर आगे बढ़ा ही था कि सिंघों ने उस पर तीरों की बौछार कर दी। बादशाह की असंख्य फौज में दहशत फैल गई। फिरोज़ खाँ मेवाती का भतीजा मारा गया और उसका पुत्र घायल हो गया।

सिंघ शहीदी जाम पीने के लिए शेरों की तरह आगे बढ़ते जा रहे थे। रुसतम खाँ के अनेकों सिपाही मारे गए या भाग गए। सायंकाल होने तक सिंघ पूरी वीरता से लड़ते रहे और रात्रिकाल होने पर किले के भीतर चले गए।

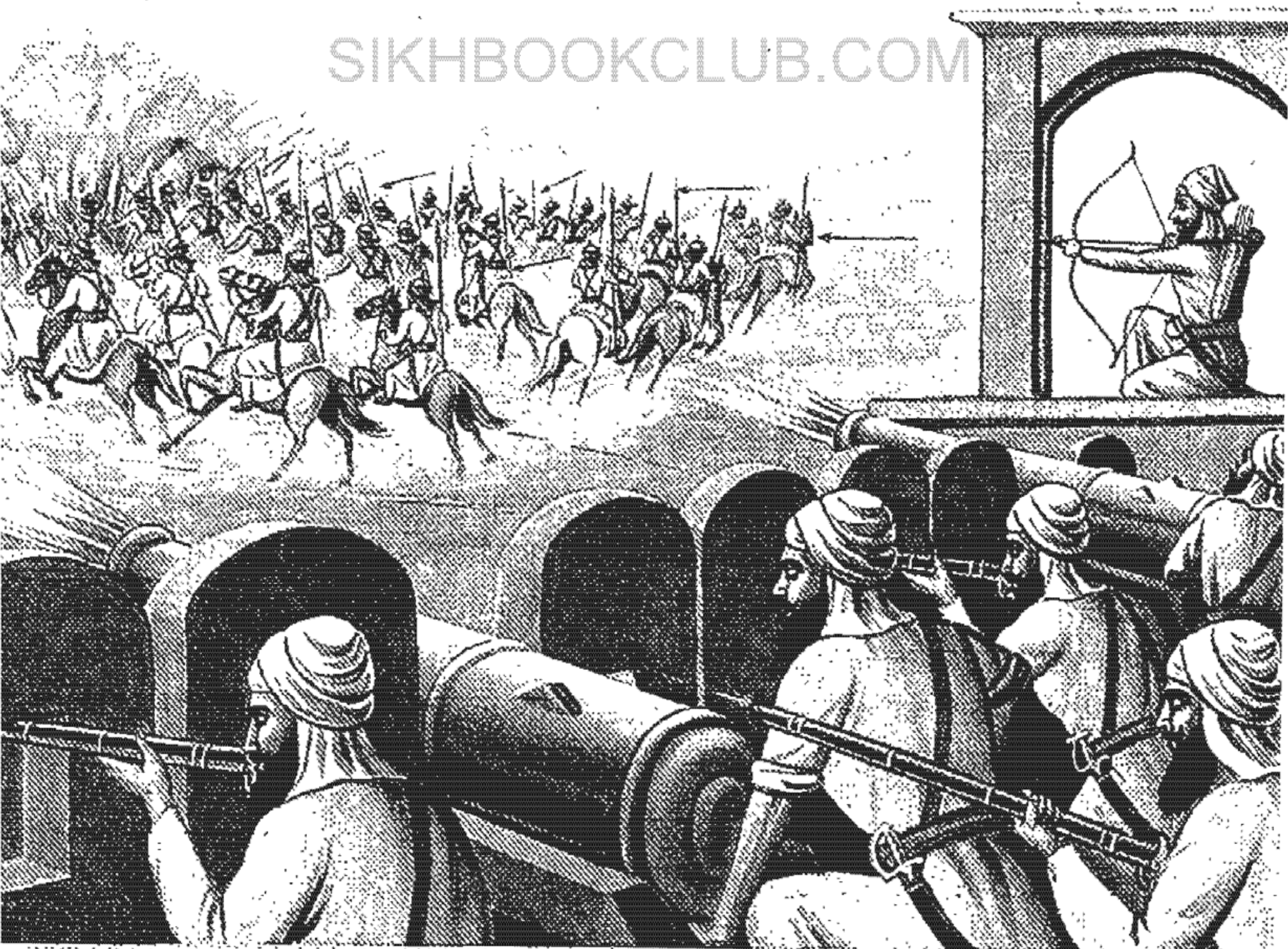
अपने बहादुर योद्धाओं की मौत की खबर सुनकर बादशाह और फौज भेजता जा रहा था। साठ हजार मुगल फौज ने किले को घेरा डाला हुआ था। इसके उपरांत उस इलाके के मुसलमान लूटमार करने के लिए उनके साथ मिल गए थे। उस समय वजीर मुनीम खाँ ने आगे बढ़ने की आज्ञा माँगी पर बादशाह ने उसे इस शर्त पर आज्ञा दी कि वह स्वयं पहले लोहगढ़ के किले पर हमला नहीं करेगा। परन्तु जब वह आगे बढ़ा तो सिंघों ने तीरों एवं गोलियों की बौछार छोड़ दी। शाही फौज में अफरा-तफरी मच गई। सिंघ चाहे बहुत अल्पसंख्या में थे पर शाही फौज का उन्होंने बहुत नुक्सान किया। इस लड़ाई में वजीर सुच्चा नंद का लड़का भी मारा गया और सैकड़ों मुसलमान सरदार कत्ल हुए। उनकी लाशें भेड़-बकरियों की तरह धूल में पड़ी हुई थीं।

दो दिन व दो रातें लड़ाई चलती रही। लोहगढ़ के किले में से राशन और सिक्का बारूद समाप्त हो गया। शाही फौज ने किले को इस तरह घेरा हुआ था कि एक चिड़िया का भी बाहर निकलना मुश्किल था।

पर उस समय बख्शी गुलाब सिंघ ने बंदा सिंघ बहादर वाली पोशाक धारण कर ली और अपने कुछ बहादुर सिंघों को साथ लेकर तलवार चलाता हुआ आगे बढ़ने लगा। शाही फौज यह समझ रही थी कि बंदा सिंघ बहादर आगे बढ़ता आ रहा है। इसलिए वे भयभीत होकर पीछे हटते जा रहे थे।

उस समय किले में से बंदा सिंघ बहादर ने एक बड़ी तोप का गोला दागा जिसने शाही फौज में भगदड़ मचा दी। बंदा सिंघ अपने कुछ साथियों को लेकर किले में से निकल गया। सुबह यह अफवाह फैल गई कि बंदा सिंघ बहादर पकड़ा गया है। शाही फौज में बड़ी खुशियाँ मनाई गईं। परन्तु पड़ताल की तो घायल सिंघों में बंदा सिंघ मौजूद नहीं था।

शाही फौज ने किले पर तो कब्जा कर लिया पर बंदा सिंघ को न पकड़ सके।



बिलासपुर की जीत

बाबा बंदा सिंघ बहादर का लोहगढ़ किले में से बचकर निकल जाना सिंघों की पराजय नहीं थी अपितु एक बड़ी जीत थी। बादशाह बहादर शाह बंदा सिंघ को पकड़ने के लिए एक लोहे का पिंजरा भी बनवा कर लाया था। वजीर मुनीम खाँ ने बादशाह को यह भरोसा दिया था कि वह बंदा सिंघ को पकड़कर उसके आगे हाजिर करेगा। बादशाह ने अपने बड़े-बड़े अनुभवी सेनापति इस कार्य हेतु भेजे थे। पर सभी असफल रहे। सबसे बड़ी बात यह थी कि इस लड़ाई में बादशाह खुद मौजूद था और स्वयं हुक्म दे रहा था। बादशाह ने इस असफलता के कारण अपने बड़े वजीर का बहुत अपमान किया।

बाबा बंदा सिंघ अपने किले और खजाने के हाथ से निकल जाने पर भी दुखी नहीं हुआ। लोहगढ़ के किले में से निकलने के बारहवें दिन ही उसने सिक्खों को हुक्मनामे जारी कर दिए थे। हुक्मनामे मिलते ही सभी सिक्ख कीरतपुर में इकट्ठे होने लग गए। बंदा सिंघ का हौसला बढ़ गया। उसने पहाड़ी राजाओं को दण्ड देने का मन बना लिया। सर्वप्रथम उसने कहिलूर के राजा भीमचन्द के पुत्र अजमेर चन्द को दण्ड देने का फैसला किया। भीम चन्द और अजमेर चन्द ने ही शाही फौज की आनंदपुर के किले पर चढ़ाई करवाई थी। यही पहाड़ी राजाओं को इकट्ठा करता था। सरहिन्द पर सिंघों की जीत को देखकर अजमेर चन्द आगे ही डरा हुआ था। उसे भी उम्मीद थी कि उस पर अवश्य हमला होगा। बंदा सिंघ ने एक चिट्ठी लिखकर अजमेर चन्द को भेजी कि वह या तो अधीनता मान ले या लड़ाई के लिए तैयार हो जाए। पर अजमेर चन्द ने कोई जवाब नहीं दिया और अन्य पहाड़ी राजाओं एवं मुसलमान हाकिमों को मदद करने की विनती की। उसने बिलासपुर की किलाबन्दी और मजबूत कर ली।

जब बंदा सिंघ को कोई उत्तर न मिला तो उसने बिलासपुर पर हमला कर दिया। बंदा सिंघ ने इतने जोर से हमला किया कि पहाड़ियों को भागने का रास्ता न मिला। पहले धावे पर ही तेरह सौ राजपूत मृत्यु को प्राप्त हो गए और मुश्किल से ही कोई बचकर निकल सका।

सिंघों ने शहर बिलासपुर को दिल खोलकर लूटा। अच्छा माल धन उनको प्राप्त हुआ।

राजा अजमेर चन्द की हार को देखकर शेष पहाड़ी राजे बहुत डर गए। वे कहिलूरिए राजा जैसा हाल होता नहीं देखना चाहते थे। वे सभी बंदा सिंघ के डेरे आए और बड़े तोहफे एवं नजराने भेंट किए। उन्होंने बंदा सिंघ बहादर की अधीनता मान ली।

जिन राजाओं ने अधीनता मानी उन में मण्डी का राजा सिद्ध सैन भी था। राजा सिद्ध सैन के आमंत्रण पर बाबा बंदा सिंघ कुछ दिन मण्डी में ठहरा। उसके बाद वह कुल्लू के राजा को मिलने गया परंतु कुल्लू के राजा ने धोखे से उसे कैद कर लिया। बाबा बंदा सिंघ अपनी शक्ति से स्वतंत्र हो गया। कुल्लू का राजा मान सिंघ बंदा सिंघ को कैद करके बादशाह बहादर शाह के पास पेश करना चाहता था। उस समय बादशाह बहादर शाह के आदमी बंदा सिंघ को ढूँढने

के लिए पहाड़ों में घूम रहे थे। बंदा सिंघ फिर मण्डी के राजा को मिलकर चम्बा चला गया।

उस समय वहाँ राजा उदय चंद राज करता था। राजा उदय चंद ने बंदा सिंघ की बहुत सेवा की। कुछ दिनों में ही राजा उदय चन्द बाबा बंदा सिंघ का परम श्रद्धालु बन गया और उसने राजघराने की एक लड़की देखकर बंदा सिंघ का विवाह कर दिया। उस रानी के उदर से एक लड़का पैदा हुआ जिसका नाम अजय सिंघ रखा गया।

उन दिनों में ही 27, 28 फरवरी की मध्यवर्ती रात को बादशाह बहादर शाह का कुछ समय बीमार रहकर लाहौर में ही निधन हो गया। उसके मरते ही राजसिंहासन के लिए लड़ाई शुरु हो गई। उनकी परस्पर लड़ाई ने खालसा को पुनः मनोबल प्रदान किया।



संत बाबा बंदा सिंघ

हम सदा यही सोचते हैं कि बाबा बंदा सिंघ एक महान् योद्धा था। उसकी तलवार में करामात थी। परन्तु हमने बंदा सिंघ के जीवन के दूसरे पक्ष की ओर कभी ध्यान ही नहीं दिया। वह वाणी का बड़ा रसिया था। श्री गुरु ग्रंथ साहिब का बड़ा आदर करता था और दीवान लगाकर सिक्खों को नाम-अभ्यास का भी प्रचार करता था। गुरु गोबिंद सिंघ ने उसे आत्मिक शक्ति भी प्रदान की थी जिस कारण उस द्वारा कहा हर वचन पूरा होता था। इसलिए जहाँ भी बाबा जी जाते थे, सिक्ख उनके दर्शन करने के लिए आते थे। वह सब को आशीर्वाद देते थे और उनकी मुरादें पूरी करते थे।

एक बार मनीमाजरे गाँव से एक सिक्ख जिसका नाम भाई गुरबख्श सिंघ था, बाबा जी के दर्शनों को आया। उसने आकर विनती की, "सिंघ साहिब! गुरु गोबिंद सिंघ जी जब दक्षिण की ओर जाने लगे थे तो वे गुरुद्वारे की सेवा मुझे सौंप गए थे परन्तु अब बाबा सूरज मल के पौत्रे गुलाब राय ने गुरुद्वारे पर कब्जा कर लिया है और मुझे धक्के मारकर बाहर निकाल दिया है। वह गुरुद्वारे में गद्दी लगाकर बैठता है और स्वयं को गुरु कहलवाता है।"

बाबा जी ने बड़े ध्यान से उसकी फरियाद सुनी और फिर कहने लगे, "सिंघ जी! गुरु गोबिंद सिंघ महाराज का सिक्ख सदा श्री गुरु ग्रंथ साहिब को ही गुरु मानेगा। ऐसे ढोंगियों को कोई गुरु नहीं कहेगा। इस गुलाब राय की तो अब उम्र ही पूरी हो चुकी है। इसके सामने ही इसके चारों पुत्र मृत्यु को प्राप्त हो जाएँगे। इसे पानी देने योग्य भी कोई नहीं रहेगा और यह अभागा बुरी मौत मरेगा। इतिहास साक्षी है कि जो कुछ बाबा जी ने कहा, बाद में पूरा हुआ।

एक बार कीरतपुर में बाबा बंदा सिंघ का दीवान लगा हुआ था। वहाँ बाबा आली सिंघ उपस्थित हुए। बाबा बंदा सिंघ ने बड़े आदर से उन्हें अपने पास बिठाया। जब बाबा जी हालचाल पूछ रहे थे तो यह भी कह गए, "भाई आली सिंघ! प्रभु द्वारा आप पर एक बहुत बड़ी होनी होने वाली है। बाईस दिनों के अन्दर-अन्दर बड़े पुत्र के माथे पर गोली लगेगी और छोटा छत से गिरकर प्रभु को प्यारा हो जाएगा। परन्तु आली सिंघ ने कोई घबराहट जाहिर न की और सहज-स्वभाव कह गया, "सिंघ साहिब! यह सब सतिगुरु की देन है। यदि सतिगुरु अपनी देन वापिस ले लेंगे तो मुझे इसमें क्या ऐतराज होगा?"

बाबा जी आली सिंघ का यह उत्तर सुनकर बड़े प्रसन्न हुए और कहने लगे, "सतिगुरु इन दोनों पुत्रों की अपेक्षा आपको दो पुत्र और देगा।"

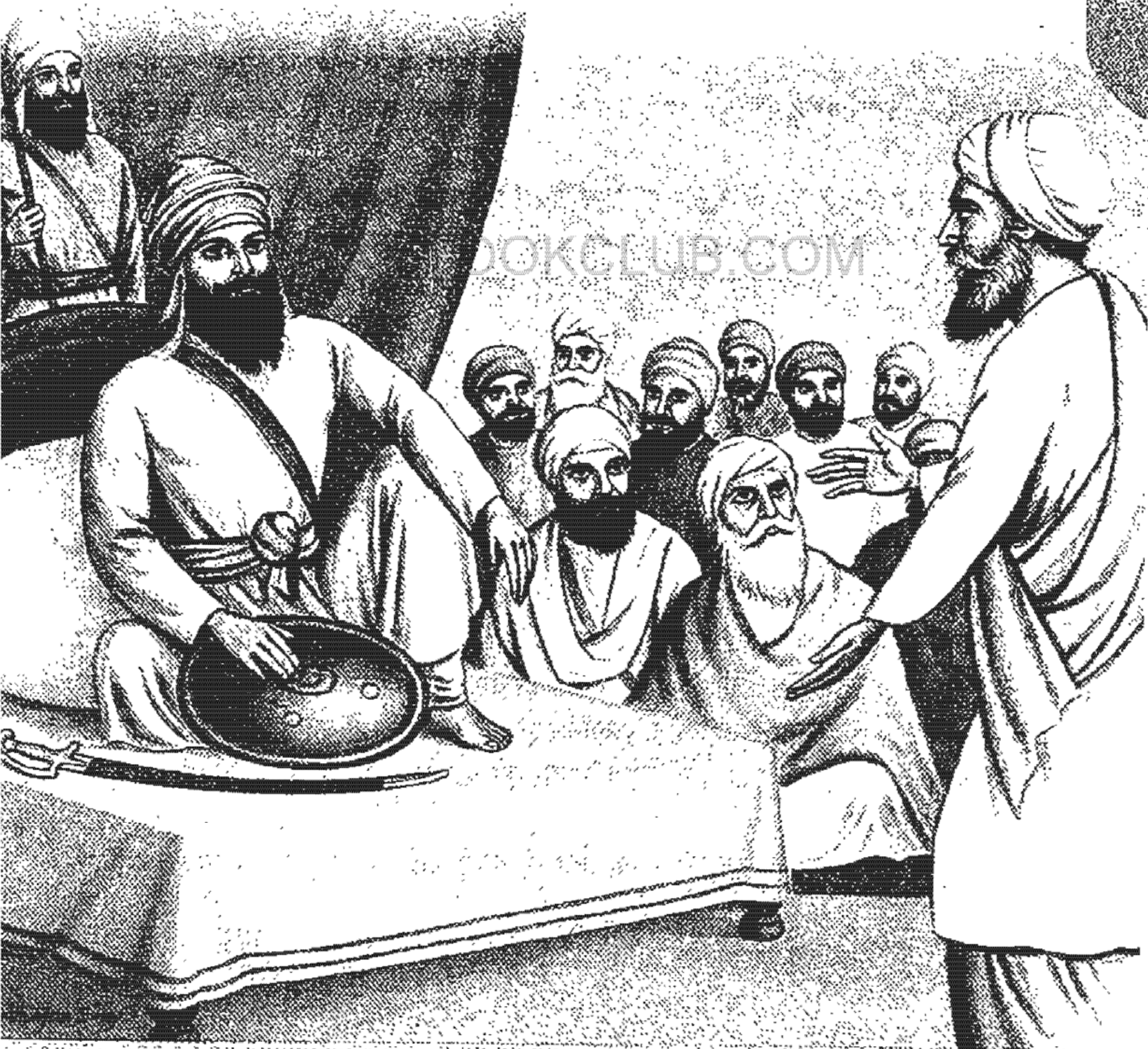
बाबा जी का कहा हुआ यह वचन भी पूरा हुआ और भाई आली सिंघ के दोनों पुत्रों का देहांत हो गया। तदुपरांत उसके घर दो पुत्र पैदा हुए।

बाबा बंदा सिंघ के वचनों बारे एक साखी और भी प्रचलित है। भाई दीप सिंघ नामक एक सिक्ख बाबा जी की सेवा में रहता था। किसी बीमारी के कारण उसके सभी दाँत निकल गए

थे। एक दिन एक सिक्ख चने भूनकर लाया और उसने सभी को मुट्ठी भर बाँटे। परन्तु भाई दीप सिंघ ने चने खाने की बजाय उन्हें अंगोछे में बाँध लिया। बाबा जी ने उसकी तरफ देखा और कहने लगे, "भाई दीप सिंघ! क्या बात है, तू बादाम क्यों नहीं खा रहा?"

भाई दीप सिंघ कहने लगा, "हजूर! मेरे मुँह में कोई दाँत नहीं, मैं चने कैसे चबा सकता हूँ?" बाबा जी कहने लगे, "यदि तुम चने नहीं चबा सकते, फिर तो क्या खाक कुछ करोगे! खाओ चने!" जब भाई दीप सिंघ ने चने मुँह में डाले तो वह यह अनुभव करके हैरान हो गया कि उसके मुँह में सभी दाँत मौजूद थे।

इस तरह बाबा जी की सहज-स्वभाव कही बात पूरी हो जाती थी। इन सहज-स्वभाव कही बातों को लोग करामातें कहते थे।



सरहिन्द पर पुनः कब्जा

बादशाह बहादर शाह के मरणोपरांत राजसिंहासन के लिए लड़ाई आरम्भ हो गई। शहजादा जहांदर शाह ने अपने शेष भाइयों का वध कर दिया और स्वयं दिल्ली के सिंहासन पर विराजमान हो गया। परन्तु वह भी अधिक समय न टिक सका और अजीम-उल-शान के पुत्र फरूखसियर ने जहांदर शाह को पराजित करके सिंहासन पर अधिकार कर लिया।

राजसिंहासन की इस लड़ाई का सिक्खों को बहुत फायदा हुआ और उन्होंने फिर पंजाब पर कब्जा करने की कोशिशें शुरु कर दीं। बिलासपुर के अजमेर चन्द को हराने के पश्चात् बंदा सिंघ बहादर चम्बा चला गया था और वहाँ उसने विवाह कर लिया था। वह एक साल तक मण्डी ही ठहरा। खालसा दल के नेताओं ने यह फैसला किया कि इस नाजुक मौके से फायदा लिया जाए और बंदा सिंघ बहादर को पंजाब में लाया जाए। इसलिए वे सभी इकट्ठे होकर मण्डी पहुँचे और बाबा बंदा सिंघ बहादर को मिले । उन्होंने बंदा सिंघ बहादर को सभी परिस्थितियों से परिचित करवाया।

जब बंदा सिंघ बहादर ने यह सारा समाचार सुना तो वह बहुत जोश में आया। उसने कहा, "अब समय आ गया है कि हम पुनः पंजाब पर कब्जा कर सकते हैं। अब हमें कोई रोकने वाला नहीं।"

बंदा सिंघ बहादर अपने सिंघों को साथ लेकर पंजाब में आ गया। जब बिखरे सिंघों को पता लगा कि बंदा सिंघ बहादर फिर आ गए हैं तो वे उसके पास इकट्ठे होने लगे। सभी सिंघों ने दुआबे में एक बहुत बड़ा समागम बुलाया। इस समागम में देश की राजनीतिक हालत एवं पंथ को पुनः एकजुट करने पर विचार किया गया।

बंदा सिंघ बहादर के नेतृत्व में एक बड़ी फौज इकट्ठी हो गई। सिंघों की फौज को लेकर बंदा सिंघ बहादर ने समूचे दुआबे का दौरा किया और सभी मुसलमान हाकिमों को दण्ड देकर दुआबे पर कब्जा कर लिया। इस तरह दुआबा फिर खालसा के अधीन हो गया। दुआबे के पश्चात् फिर माझे की ओर ध्यान किया। सर्वप्रथम कसूर के हाकिमों का अंत किया। कसूर के पठानों ने बड़ा आतंक मचाया हुआ था। सिक्खों का वध करने में इनका बड़ा हाथ था। सिंघों ने सभी जालिम पठानों का वध कर दिया और युद्ध-सामग्री एवं घोड़े इत्यादि लूट लिए। कसूर के पठानों को दण्ड देने के पश्चात् उन्होंने समूचे माझे का दौरा किया और जिसने भी विरोध किया उसे मिटाते हुए समूचे माझे को अपने अधीन कर लिया। फिर रियाड़की भाव गुरदासपुर की ओर बढ़े। जब बटाला, पठानकोट, कलानौर इत्यादि के हाकिमों को पता लगा कि खालसा दल हमला करने आ रहा है तो वे डरते हुए लाहौर की ओर भाग गए। समूचा क्षेत्र पुनः खालसा के अधीन हो गया।

बाबा बंदा सिंघ बहादर ने इन सभी क्षेत्रों में अपने हाकिम नियुक्त कर दिए। जमींदार

प्रणाली भी खत्म कर दी और किसानों को उनकी जमीनों का मालिक बना दिया। ये काश्तकार लोग चाहे मुसलमान थे अथवा हिन्दु, किसी से भी मजहब के आधार पर भेदभाव न किया गया। इसलिए मुसलमान किसान भी बाबा बंदा सिंघ से सहमत हो गए। बाबा बंदा सिंघ अपने सिपाहियों को वेतन भी देता था, इसलिए पाँच हजार के लगभग मुसलमान भी बाबा जी की सेना में शामिल हो गए। बाबा जी ने उन्हें अपने धार्मिक फर्ज निभाने में कोई बंदिश नहीं लगाई थी।

माझा, दुआबा एवं रियाड़की को जीतने के पश्चात् खालसा दल ने यह योजना बनाई कि सरहिन्द को पुनः फतेह किया जाए। इसलिए सम्वत 1770 विक्रमी को समूचा खालसा दल सरहिन्द की ओर बढ़ा। उस वक्त सरहिन्द का सूबेदार हमीद खाँ था। उसे यह पता लग गया कि खालसा दल सरहिन्द पर अवश्य हमला करेगा। इसलिए उसने सैकड़ों तोपें एवं बीस हजार से अधिक फौज इकट्ठी की हुई थी।

जब खालसा दल सरहिन्द के निकट पहुँचा तो हमीद खाँ ने तोपों के गोलों की बारिश कर दी। कुछ समय के लिए खालसा फौज पीछे हट गई। बाबा बंदा सिंघ ने फौज को चार भागों में विभक्त करके घेरा डालने का आदेश किया। जब गोलों की बौछार कुछ धीमी पड़ी तो बंदा सिंघ ने सति श्री अकाल के जैकारे बुलाते ऐसा हमला किया कि मिनटों में लाशों के ढेर लग गए। सूबेदार हमीद खाँ मारा गया और सरहिन्द पर खालसा का पुनः कब्जा हो गया।



बंदा सिंघ बहादर का पहला सिक्ख राज

सन् 1714 ई. के आरम्भ तक बंदा सिंघ बहादर का समूचे पंजाब पर राज कायम हो गया था। उसने गुरदास नंगल में एक मजबूत किले का निर्माण किया और पाँच हजार फौज सहित उसमें रहने लगा।

सभी मजहबों के लोग उसे प्यार करते थे और उसे यह पूरी उम्मीद थी कि वह अपनी हकूमत स्थिर तौर पर स्थापित करेगा। नि:संकोच वह हकूमत अधिक समय न चला सका परन्तु जो सुधार वह इस अल्पकाल में ही कर गया वह मुगल हकूमत इतने लम्बे समय के दौरान भी नहीं कर सकी। उसने जमींदार प्रणाली खत्म कर दी और सभी किसानों को जमीनों का मालिक बना दिया। हल जोतने वाले किसान गुलामों की हालत से भी बुरे एवं बदत्तर हो गए थे। किन्तु बंदा सिंघ का राज होने से ये निर्धन किसान जमीनों के मालिक बन गए और जमींदारों द्वारा किया जा रहा जुल्म सदा के लिए समाप्त हो गया।

दूसरा काम जो उसने किया वह था जाति-पाति की ऊँच-नीच खत्म कर दी। जो भी जाति का व्यक्ति उसके पास आता उसे अमृतपान करवा कर सिंघ बना देता और फिर उसे उसके इलाके या उसके गाँव का हाकिम नियुक्त कर देता। ऊँची जातियों के लोग उसका हुक्म मानते और उसकी आज्ञानुसार रहना स्वीकार करते।

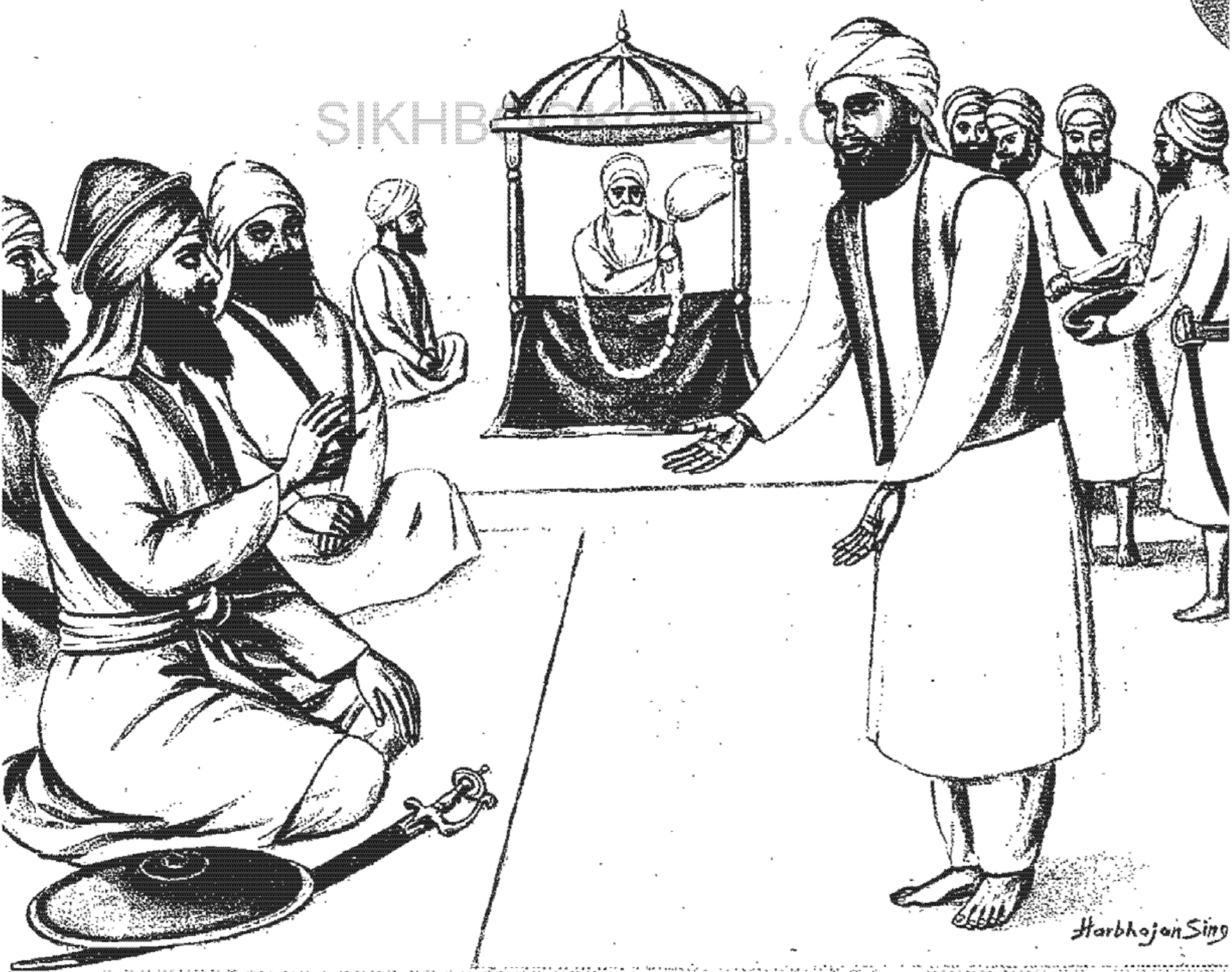
इस समय के दौरान बंदा सिंघ ने सिक्खी का भी बहुत प्रचार किया। जो व्यक्ति भी उसके सम्पर्क में आता वह उसके व्यक्तित्व से इतना प्रभावित होता कि सिंघ बन जाता।

एक बार सरहिन्द के इलाके का एक सरकारी कर्मचारी दीनदार खाँ बंदा सिंघ बहादर को मिलने के लिए आया। बंदा सिंघ बहादर को देखते ही वह इतना खुश हुआ कि वह कहने लगा, "गरीबनिवाज! मेरे दिल में भी ख्वाहिश पैदा हुई है कि मैं भी आप जी का सिंघ बनूँ। मुझे भी आबेहियात पिलाओ जिससे इन्सान एक शूरवीर बन जाता है।" बाबा जी कहने लगे, "हम किसी अन्य धर्म के व्यक्ति को मजबूर करके अपने धर्म में नहीं लाते, पर यदि कोई अपनी मर्जी से सिंघ बनना चाहे तो हम उसका भरपूर स्वागत करते हैं।" दीनदार खाँ ने जब दुबारा विनती की तो बंदा सिंघ बहादर ने पाँच सिंघों को आदेश दिया कि इसे अमृतपान करवा कर सिंघ बनाया जाए। इस तरह दीनदार खाँ सिंघ बनकर दीनदार सिंघ बन गया। इस तरह बेअन्त हिन्दु एवं मुसलमान सिंघ बनकर बाबा बंदा सिंघ के पक्के साथी बन गए। जो भी एक बार सिंघ बन गए उन्होंने फिर दुबारा पीछे लौटकर नहीं देखा था और उन्होंने फिर मरते दम तक सिक्खी का पालन किया।

बाबा बंदा सिंघ स्वयं एक निष्ठावान अमृतधारी सिक्ख था। सिक्ख गुरु साहिबान पर उसका निश्चय अटल एवं अडोल रहा। अपने राज के दौरान जो उन्होंने सिक्का चलाया था उस सिक्के पर उन्होंने गुरु नानक-गुरु गोबिंद पातशाह का नाम लिखा था। वह गुरु साहिब

को ही राज भाग की बरकतों का स्रोत समझता था। जब भी उसे कोई जीत प्राप्त होती थी तो वह उस जीत को गुरु साहिब का आशीर्वाद ही समझता था और प्रभु का कोटि कोटि धन्यवाद करता था। उसका निजी जीवन बड़ा पवित्र एवं पाक था। उसके हुक्मनामों से यह प्रत्यक्ष होता है कि वह केवल गुरु की ही ओट लेता था।

वह दुश्मन की औरतों पर कभी वार नहीं करने देता था और उनकी इज्जत का पूरा ध्यान रखता था। इस तरह बंदा सिंघ बहादर ने जो पहला सिक्ख राज कायम किया उस में प्रत्येक सम्प्रदाय के लोग खुश थे। जब कोई अत्याचारी किसी को तंग करता था तो पता लगने पर वह तुरंत उसे ठीक करता था। इस तरह कोई साहस ही नहीं करता था कि किसी को तंग कर सके। बाबा बंदा सिंघ का राज, सिक्ख राज की ओर पहला कदम था। महाराजा रणजीत सिंघ के सिक्ख राज की आधारशिला वास्तव में उस शूरवीर ने ही रखी थी।



गुरदास नंगल का घेरा

बादशाह बहादर शाह के मरणोपरांत उसका पुत्र जहांदर शाह अपने अन्य भाइयों की हत्या करके दिल्ली का बादशाह बन गया। परन्तु दस महीने पश्चात् ही अज़ीम-उल-शान का पुत्र फरुखसियर जहांदर शाह को हराकर सिंहासन का वारिस बन गया। वह बड़ा जालिम एवं निर्दयी था।

जब वह दिल्ली का बादशाह बना तो उसे पता लगा कि बंदा सिंघ बहादर ने समूचे पंजाब पर अधिकार किया हुआ है। इसलिए बंदा सिंघ बहादर को हराने एवं पकड़ने के लिए उसने बहुत बड़ी फौज भेजी। उसने गुजरात के सूबेदार मिर्जा अहमद खाँ, बख्शी अफरासियाब खाँ, मुजफ्फर खाँ, राजा पृथी चंद एवं अन्य राजाओं को लाहौर के सूबेदार की सहायता के लिए भेजा। सभी राजे एवं सेनापति अपनी सेना लेकर लाहौर पहुँच गए। जब बंदा सिंघ बहादर को इस बारे पता लगा तो उसने भी सभी जत्थेदारों को हुक्मनामे भेज दिए। गाँव कोट मिर्जा में उसने एक कच्ची गढ़ी का निर्माण शुरु कर दिया। पर अभी गढ़ी सम्पूर्ण भी नहीं हुई थी कि अब्दुस्समद खाँ ने तुरंत उस पर हमला कर दिया। परन्तु बंदा सिंघ की फौज को तैयार करने में कौन-सी देर लगनी थी? इसलिए उन्होंने शाही फौज एवं उनके सहयोगियों का डटकर मुकाबला किया। सिंघों ने इतना डटकर मुकाबला किया कि शाही फौज के पैर उखड़ गए। पर इतनी बड़ी फौज का मुकाबला करना कोई सरल बात नहीं थी।

इसलिए बंदा सिंघ पैंतरा बदलता हुआ पीछे हटता गया। किन्तु जब शाही फौजें उसका पीछा करतीं तो वे फिर घोड़ों के मुँह पीछे की तरफ कर लेते और शत्रुओं पर टूट पड़ते। इस तरह शिथिल हमला करने से शाही फौजों का बहुत नुक्सान होता और दुबारा वे पीछा करना ही छोड़ देते। 'इबरत नामे' का लेखक मुहम्मद कासिम जो उस समय वहाँ मौजूद था, लिखता है, "नरकीय सिंघों के बहादुरी एवं हौंसले के कारनामे हैरान कर देने वाले थे।" बंदा सिंघ की फौजें पीछे हटती गुरदास नंगल के किले में दाखिल हो गईं। यह बड़ा मजबूत किला था। बंदा सिंघ ने इस में खाद्य सामग्री और युद्ध-सामग्री भी इकट्ठी की हुई थी।

परन्तु कुछ समय पश्चात् ही शाही फौजें वहाँ पहुँच गईं और तीस हजार की संख्या में इकट्ठी हुई शाही फौज ने इस गढ़ी को घेर लिया।

निःसंदेह शाही फौजों ने गढ़ी को पूरी तरह घेर लिया था फिर भी सिंघ रात्रिकाल बाहर निकलते और शाही जखीरे पर हमला करके खाद्य-सामग्री एवं घास इत्यादि छीनकर ले जाते। किन्तु धीरे-धीरे यह घेरा इतना सख्त कर दिया गया कि घास एवं खाद्य-सामग्री भीतर ले जाना बहुत मुश्किल हो गया।

अब्दुस्समद खाँ समझता था कि किला इतना मजबूत नहीं था इसलिए उसने अनेक बार बड़े जोरदार हमले किए कि किले की दीवारें ध्वस्त कर दी जाएँ, पर सिंघ इतनी वीरता एवं

बहादुरी से जवाब देते कि अब्दुस्समद खाँ हजारों फौजियों को मरवा कर पीछे हट जाता। 'इबरत नामे' का लेखक आगे जाकर लिखता है, "हर रोज़ दो या तीन बार कोई चालीस या पचास सिक्ख अपने पशुओं के घास-चारा के लिए गढ़ी में से बाहर निकलते और जब बादशाही लश्करों की फौजें उन्हें रोकने जातीं तो वे अपने तीरों, बंदूकों एवं तलवारों से मुगलों का सफाया कर देते और लुप्त हो जाते। सिंघों के नेता की जादूगरी का इतना भय बना हुआ था कि हमारी फौजों के कमांडर रब के आगे गुजारिश करते थे कि ऐसी होनी हो जाए कि बंदा सिंघ गढ़ी में से निकल कर भाग जाए।"

सिंघों को बाहर निकलने से रोकने के लिए शाही फौज ने किले के चारों तरफ एक मिट्टी की दीवार बना दी, किन्तु फिर भी सिंघ किले में से बाहर निकल कर सारे बँधनों को तोड़ देते और लूटमार करके फिर किले के भीतर चले जाते। बाबा बिनोद सिंघ की बहादुरी के बारे में कई कहानियाँ प्रचलित हैं। कहा जाता है कि वह नित्य किले में से बाहर निकलते और शाही फौज के बाज़ार में से जो भी हाथ आता, लूटकर ले जाते। उन्हें पकड़ने के बहुत यत्न किए गए परन्तु वे पकड़े न गए। शाही फौज बंदा सिंघ बहादर की क़रामातों से बहुत भयभीत थी। वे समझते थे कि बंदा सिंघ किसी जानवर का रूप धारण करके भी किले में से निकल सकते हैं। अत: जब कोई कुत्ता या बिल्ली भी किले में से बाहर निकलते तो शाही फौज उसे भी खत्म कर देती।

गुरदास नंगल का यह घेरा कई महीनों तक जारी रहा किन्तु शाही फौज इसे जीत न सकी।



बाबा बंदा सिंघ बहादर की गिरफ्तारी

किला कोई बहुत पुराना नहीं था और उस में इतना राशन भी नहीं था कि वह महीनों तक चल सकता। पहले तो सिक्ख रात को छापा मार कर राशन एवं घोड़ों के लिए घास ले जाते थे, परन्तु बाद में घोड़े भूखे रहने लगे। समय की नजाकत को देखकर बाबा बिनोद सिंघ ने बाबा बंदा बहादर को यह सलाह दी कि भूखे मरने से तो हमें शत्रु सेना को चीर कर निकल जाना चाहिए। किन्तु वही बाबा बंदा सिंघ जो लोहगढ़ किले में से लुप्त हो गया था इस बात के लिए सहमत नहीं हो रहा था। वह कुछ और समय प्रतीक्षा करना चाहता था। किन्तु यह प्रतीक्षा दिन-ब-दिन महंगी पड़ रही थी। सिंघ घासफूस खाकर बीमार होकर मर रहे थे। बाबा बिनोद सिंघ से ऐसी अन्यायी मौतें बर्दाश्त नहीं थी हो रहीं। इसलिए उसने एक बार फिर बाबा बंदा सिंघ बहादर से विनती की कि अभी भी हम में कुछ बल है, इस गढ़ी में ही भूखे मर जाने का क्या लाभ होगा? परन्तु जब बाबा बंदा सिंघ बहादर ने असहमति जताई तो विवाद शुरु हो गया। मतभेद काफी बढ़ गया। अंत में दोनों परस्पर लड़ने के लिए तैयार हो गए, मगर अन्य सिंघों ने सुलह करवा दी। अंत फैसला यह हुआ कि जो सिंघ निकल जाना चाहते हैं, किला छोड़ जाएँ और जो बाबा बंदा सिंघ बहादर के साथ रहना चाहते हैं वे किले में ही रहें। बाबा बिनोद सिंघ ने यह फैसला मंजूर कर लिया और उसने सिंघों को कहा कि शहादत जाम पीना बहुत उत्तम है। इसलिए जो सिंघ शहीदी जाम पीकर गुरु साहिब के चरणों में लीन होना चाहते हैं, वे मेरे साथ आ जाएँ।" परन्तु बहुसंख्या बाबा बंदा सिंघ बहादर के साथ थी। गुरु गोबिंद सिंघ उन्हें बाबा जी के संग लगा गए थे। इसलिए उनका जीना मरना अब बाबा जी के साथ ही था। वे ईश्वरेच्छा में ही रहना चाहते थे। इसलिए बहुत थोड़े सिंघ बाबा बिनोद सिंघ के साथ जाने के लिए तैयार हुए। बाबा बिनोद सिंघ पहले भी किले में से निकल कर लूटमार करके वापिस किले में आ जाता था। इसलिए उसे पता था कि कौन-सा आसान रास्ता था जिस द्वारा सुगमता से निकला जा सकता है। दूसरा, शाही फौज को यह अनुमान भी नहीं था कि सिक्ख किले में से बाहर आ सकेंगे। इसलिए रात के तीन बजे के करीब बाबा बिनोद सिंघ अपने कुछ साथियों को लेकर किले में से बाहर निकला और शत्रु दल को चीरता पार हो गया। मुसलमान सेना ने उसका पीछा भी न किया। वे समझते थे कि वह जरूर वापिस किले में आएगा। इसलिए घेरे वाली फौज को और चौकस कर दिया गया।

बाबा बंदा सिंघ बहादर को यह न पता लग सका कि बाबा बिनोद सिंघ एवं उसके साथी बचकर निकल गए हैं, परन्तु रात किसी प्रकार के शोर शराबे की आवाज न आने से वे समझ गए कि सिंघ भाग गए थे।

जब एक महीना और घेरा चलता रहा तो सिंघ भूख से मरने लगे। घोड़े इत्यादि भी मर गए। बाबा जी का अनुमान था कि इतनी बड़ी फौज को इतने लम्बे समय तक राशन देना कोई सरल

बात नहीं थी। किन्तु बादशाह के पास तो सारा देश था। इसलिए उसने अपना सारा बल लगा दिया। लोग चाहे भूखे मर गए, फौज को राशन मिलता रहा।

किन्तु किले के भीतर तो एक तिनका भी खाने को नहीं बचा था। किले में मृत पशुओं एवं मनुष्यों की बदबू ने समूचे वातावरण को असह बना दिया था। अब वह समय आ गया था कि अधमुए लोगों से किले की रक्षा या लड़ाई करना असंभव हो गया था। अब्दुस्समद खाँ इस बात को भांप गया था। इसलिए उसने बंदा सिंघ को सन्देश भेजा कि वह कुरान की कसम देता है कि उन्हें बादशाह के पास पेश करके क्षमा ले दी जाएगी। इसलिए वे अपने आपको शाही फौज के हवाले कर दे। अपने साथियों से सलाह करके बाबा जी ने दरवाजा खुलवा दिया। परन्तु शाही फौज का कोई भी सेनापति यह साहस न कर सका कि भीतर दाखिल हो सके। वे डरते थे कि यह भी बंदा सिंघ की कोई चाल होगी। परन्तु जब बंदा सिंघ बहादर अपने साथियों सहित बाहर आया तो उनको गिरफ्तार कर लिया गया। फिर फौज किले में दाखिल हो गई।



सिंघों की शहीदियाँ

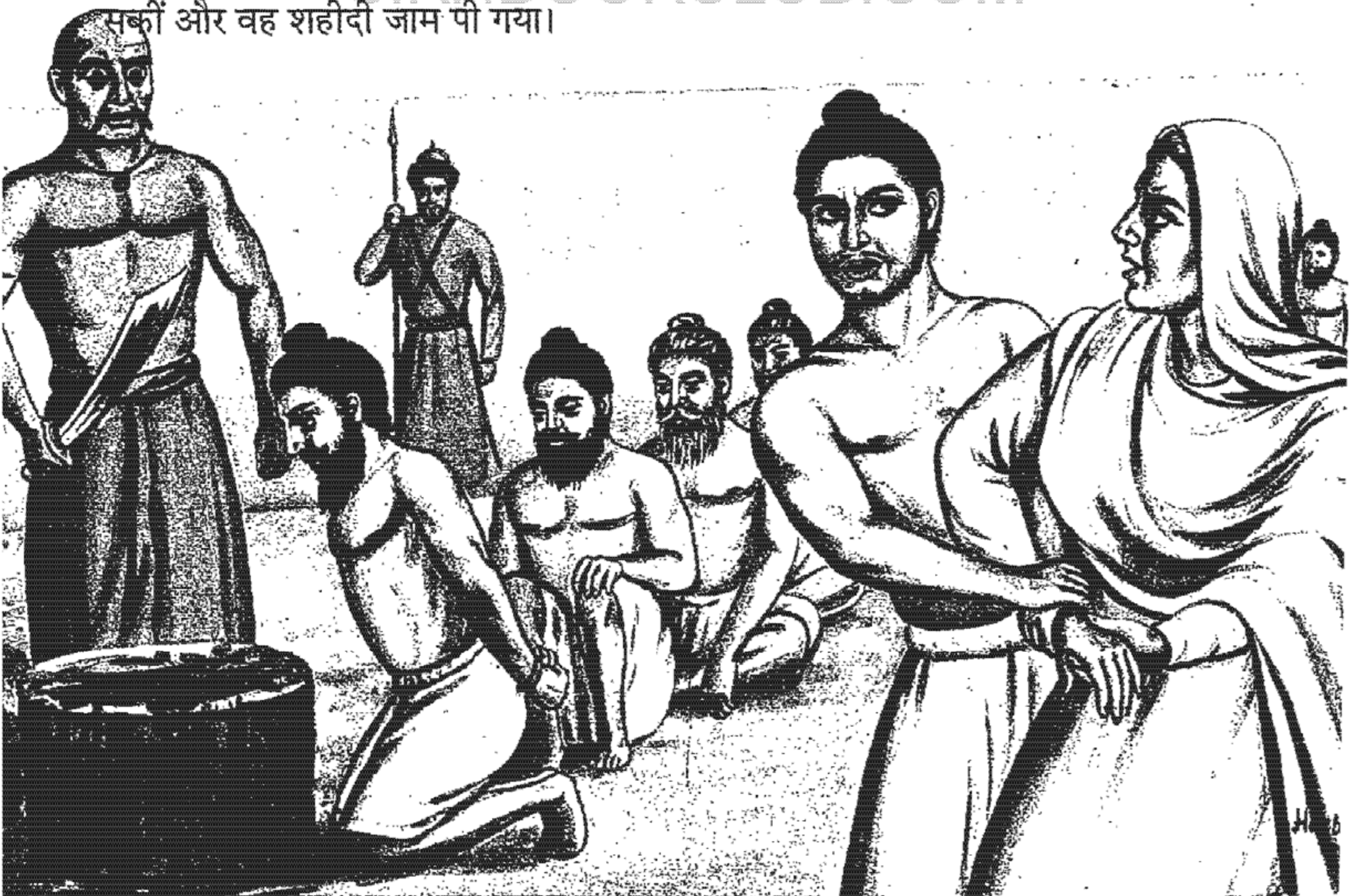
शाही फौजें भूखे शेर की तरह किले पर टूट पड़ीं। परन्तु भीतर बीमार सिंघों एवं लाशों के सिवाय अन्य कुछ नहीं था। उनसे अन्य तो कुछ न हो सका उन्होंने बीमार सिंघों एवं लाशों के सिर काट लिए और घासफूस भर कर नेजों पर लटका लिए ताकि उनकी बहादुरी का प्रमाण हर कोई देख सके। जब वे जिंदा थे उनके सम्मुख होने को कौन तैयार था? उन्हें शाही फौज ने नहीं था मारा अपितु भूख ने मारा था। यदि वे भूख से मृत्यु को प्राप्त न होते तो शायद कितनी फौज को मौत के घाट उतारकर शहीदियाँ प्राप्त करते! मुहम्मद हादी कामवार ठीक लिखता है कि, "यह किसी की बहादुरी का परिणाम नहीं था अपितु रब्ब की मेहर हुई तो इस तरह हो गया, अन्यथा हर किसी को पता है कि बहादर शाह बादशाह ने अपने चारों पुत्रों एवं असंख्य सेनापतियों सहित इस बगावत को मिटाने के यत्न किए थे परन्तु वे सब असफल हो गए थे किन्तु अब वे काफिर सिक्ख और उसके साथी 'भूख' ने ज़ेर होने के लिए मजबूर कर दिए थे।" अत: यह शाही फौज की जीत नहीं थी, अपितु 'भूख' की जीत थी। यदि बाबा बिनोद सिंघ की तरह बाबा बंदा सिंघ भी उचित समय निकल जाता तो भी इतिहास कुछ अन्य होता। सिक्खों को खालसा राज के लिए चालीस साल और इंतजार न करना पड़ता।

बाबा बंदा सिंघ बहादर, उसके तीन साल के पुत्र अजय सिंघ एवं 740 अन्य सिंघों को कैद कर लिया गया। बाबा बंदा सिंघ बहादर को बेड़ियाँ डालकर एक हाथी पर सवार किया गया। उसके साथ ही एक सेनापति को भी बाँध दिया ताकि बंदा सिंघ रास्ते में भागने में सफल न हो सके। शेष सिंघों को ऊँटों पर चढ़ा लिया गया। यह काफिला पहले लाहौर ले जाया गया। अब्दुस्समद खाँ स्वयं इन कैदियों को दिल्ली लेकर जाना चाहता था, परन्तु बादशाह फरुखसियर ने हुक्म दिया कि वह अपने पुत्र जकरिया खाँ को भेज दे। जो सिक्खों के सिर काट कर लाए गए थे, वे थोड़े लगे, इसलिए अब्दुस्समद खाँ ने हुक्म दिया कि इलाके में जो भी सिक्ख नजर आता है, उसका सिर काट कर लाया जाए। इस तरह सात सौ सिक्खों के सिरों का ही छकड़ा भरकर भेज दिया। शेष सिंघों को बेड़ियों एवं संगलों से बाँधकर छकड़ों पर लादा हुआ था।

27 फरवरी, सन् 1716 को जब यह काफिला औरंगाबाद पहुँचा तो इनको जुलूस के रूप में दिल्ली लाया गया। सबसे आगे दो हजार सिंघों के सिर बाँसों पर लटकाए हुए थे। सिंघों के सिरों के साथ ही बाँसों पर एक मृत बिल्ली भी लटकी हुई थी जिसका भाव यह था कि मुगल योद्धाओं ने गुरदास नंगल में बिल्ली कुत्ते तक भी जिंदा नहीं छोड़े थे। इसके पीछे लोहे के पिंजरे में बंद बाबा बंदा सिंघ को एक हाथी पर बैठाया हुआ था। उसे गहरे लाल रंग की पोशाक पहनाई हुई थी। इससे पीछे बेड़ियों में जकड़े 740 सिंघ दो-दो करके ऊँटों पर सवार थे। जुलूस के पीछे अमीर-वजीर घोड़ों पर सवार होकर जा रहे थे। इबरतनामे का लेखक

मुहम्मद हारिसी भी यह तमाशा देखने गया था। वह लिखता है कि "सिक्खों के चेहरों पर उदासी का मामूली भी निशान नहीं था अपितु वे ऊँटों पर बैठे शब्द पढ़ रहे थे। बाजार में यदि उनको कोई कहता कि आपका कत्ल कर दिया जाएगा तो वे कहते, "कत्ल कर दो, हम कत्ल होने से नहीं डरते! हमें तो केवल भूख एवं अनाज की कमी ने आपके हाथ फँसा दिया है, अन्यथा हमारी बहादुरी के बारे में तो आप भलीभांति परिचित हो।"

जब जुलूस बादशाह के किले के पास पहुँचा तो बादशाह फरुखसियर ने बाबा बंदा सिंघ और उसके अन्य चोटी के नेताओं को त्रिपोलिए में कैद करने का हुक्म दिया। शेष 694 सिंघों का वध करने के लिए कोतवाल के हवाले कर दिया। वे सभी एक दूसरे से पहले कुर्बान होने को तैयार थे। सिंघों की बहादुरी के बारे में खाफी खाँ एक कहानी लिखता है जो कि उसने अपनी आँखों से देखी थी। वह लिखता है, "इन सिंघों में एक लड़का भी था। उसकी माँ विधवा थी और वह उसका इकलौता पुत्र था। थोड़े समय पहले ही इस लड़के का विवाह हुआ था। जब उसकी माँ को पता लगा कि उसका पुत्र भी कत्ल किया जा रहा है तो वह दीवान रत्न चंद की सहायता से फरुखसियर बादशाह से अपने लड़के की रिहाई मंजूर करवा लाई। परन्तु उस लड़के ने रिहा होने से इंकार कर दिया और कहने लगा, "यह मेरी माँ नहीं है, यह झूठ बोलती हैं। मैं अपने साथियों के साथ अपने गुरु के चरणों में जाना चाहता हूँ, इसलिए मुझे शीघ्रातिशीघ्र मेरे भाइयों के पास भेजा जाए।" माँ की चीखें भी उस लड़के को रोक न सकीं और वह शहीदी जाम पी गया।



जब सभी सिंघ शहीद कर दिए गए तो फिर बंदा सिंघ, उसके पुत्र अजय सिंघ, बाबा बाज सिंघ, बाबा फतेह सिंघ, भाई आली सिंघ और बख्शी गुलाब सिंघ इत्यादि को कत्ल करने के लिए किले से बाहर लाया गया। उनको एक जुलूस के रूप में किले में से निकाला गया। बंदा सिंघ को लाल पोशाक एवं लाल तिलेदार पगड़ी बँधवाई हुई थी। बेड़ियों से जकड़े हुए बाबा बंदा सिंघ को हाथी पर बैठाया हुआ था। शेष 26 सिंघ बेड़ियों से जकड़े हुए बाबा बंदा सिंघ का पीछा कर रहे थे। शहर की गलियों में से होते हुए इनको कुतुबमीनार के निकट बख्त्यार काकी के मकबरे के पास ले जाया गया। यहाँ उसे बहादर शाह के मकबरे की परिक्रमाएँ करवाई गईं। फिर बंदा सिंघ को हाथी से उतार लिया और कहा गया या तो मुस्लिम धर्म कबूल कर लो या मरने के लिए तैयार हो जाओ। परन्तु बंदा सिंघ ने उत्तर दिया, "मैं मरने के लिए ही आया हूँ, मैं गुरु गोबिंद सिंघ का सिक्ख हूँ और सिक्ख के तौर पर मरूँगा। मुझे मौत का कोई भय नहीं।" बंदा सिंघ के ये लफ्ज सुनकर उसका चार वर्षीय पुत्र अजय सिंघ उसकी गोद में बिठा दिया गया। एक लम्बे छुरे से बच्चे के टुकड़े कर दिए और उसका तड़पता दिल बंदा सिंघ के मुँह में डालने की कोशिश की। परन्तु जब बंदा सिंघ ने पूरे जोर से अपनी बेड़ियों को कड़ाका मारा तो वह जल्लाद डरता हुआ पीछे हट गया। बंदा सिंघ के चेहरे के तेज को वह देख न सका। कैदी हुआ भी वह अभी शेर की तरह गर्जता था। एक मुसलमान इतिहासकार लिखता है कि, "मुहम्मद अमीन खाँ ने जब बंदा सिंघ की ओर देखा तो उसके चेहरे के नूरी तेज को देखकर दंग रह गया और बंदा सिंघ को कहने लगा, "बड़ी अद्‌भुत बात है, जिस मनुष्य के चेहरे पर इतना तेज हो और जिसका चरित्र इतना ऊँचा हो, ऐसा मनुष्य नीच कारनामों का दोषी हो।" बंदा सिंघ ने उसकी बात को सुना और कहने लगा, "जब मनुष्य तुम्हारे सरीखे पापी एवं दुष्ट हो जाएँ और इंसाफ को तिलांजलि दे दें तो इस तरह के अत्याचारों से प्रजा को बचाने के लिए परमात्मा मुझ जैसे बंदे को पैदा करता है ताकि उन दुष्टों का नाश किया जाए और जब वह कार्य पूरा हो जाता है तो परमात्मा उसे वापिस बुला लेता है।"

बंदा सिंघ को बड़े निर्दयी ढंग से कत्ल करने का हुक्म हुआ। गर्म सरिए से पहले उसकी दाईं आँख निकाली गई। फिर बाईं आँख निकाल दी। उसके बाद उसका बायां पैर काट दिया और तदुपरांत उसके दोनों हाथ काट दिए। फिर लाल गर्म लोहे की चिमटी से उसके माँस को नोच-नोच कर खींचा गया। फिर उसके अंग-अंग काटकर सिर काट दिया। इस समूचे कार्य के समय बंदा सिंघ ने अपने श्वास दसम द्वार चढ़ा लिए थे और उसने किसी प्रकार की यातना देने पर भी उफ तक न की। वह प्रभु से एकरूप हुआ अडोल बैठा रहा।

बंदा सिंघ बहादर के कत्ल के नजारे को देखने बादशाह फरुखसियर भी आया। जब बंदा सिंघ शहीद हो गया तो उसकी भी जान में जान आई। वह अभी तक डरता था कि पता नहीं

अब भी बंदा सिंघ कोई करामात करके कैद में से न निकल जाए। जब शेष सिंघों को कत्ल करने की बारी आई तो वह कहने लगा, "सुना है आप में एक बाज सिंघ नामक सिक्ख है, जो बड़ा बहादुर है और जिसे अपने गुरु पर बहुत गर्व है।" बाज सिंघ ने फरुखसियर की बात सुनकर कहा, "मैं ही बाज सिंघ हूँ, अपने सच्चे गुरु का निमाना सिक्ख।" बादशाह कहने लगा, "इतना बहादुर सिक्ख था, किन्तु आज तो भीगी बिल्ली बना हुआ है।" बाज सिंघ कहने लगा यदि थोड़ी देर मेरी बेड़ियाँ खुलवा दो तो अभी शेर बन कर दिखा देता हूँ।" बादशाह ने उसकी बेड़ियाँ खोलने की आज्ञा दे दी। बाज सिंघ उसी वक्त शेर की तरह बादशाह के अहलकारों पर झपट पड़ा और तीनों को अपने हाथों की बेड़ियों से ही मौत के घाट उतार दिया। फिर वह जब बादशाह की ओर बढ़ा तो बादशाह डरता हुआ जब पीछे भागने लगा तो एक बुर्जी में लगकर गिर गया।



बाबा बंदा सिंघ बहादर का जीवन-आचरण

अगर हम बंदा सिंघ बहादर के जीवन का अध्ययन करें तो हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि बाबा बंदा सिंघ जी अपने गरीब भाइयों की भलाई के लिए अपना जीवन कुर्बान करने को तत्पर रहते थे। उनकी अपने गुरु साहिब पर पूर्ण निष्ठा थी और वह अपने धर्म एवं प्रेम के लिए सदा स्थिर एवं अडोल थे। उनके जीवन का यह पक्ष इतना उज्ज्वल एवं प्रकाशमयी था और इतिहास के विद्यार्थियों के लिए इतना दिलचस्प था कि हम उनका जीवन-वर्णन यहां समाप्त नहीं कर सकते।

उस समय के मुसलमान इतिहासकारों ने स. बंदा सिंघ बहादर के जीवन से पूर्ण न्याय नहीं किया है। हर प्रकार के जुल्मो-सितम उन्होंने बाबा बंदा सिंघ बहादर के नाम ही थोपने की कोशिश की है। यहाँ तक कि शाही पत्र प्रेरक भी ऐसे पक्षपात बेलाग नहीं रहे हैं। वर्तमान समय भी ऐसे पत्र-प्रेरकों की कोई कमी नहीं है।

यहां तक कि सिक्ख इतिहासकारों ने भी बाबा बंदा सिंघ जी का जीवन-वर्णन करते हुए उनके साथ किसी प्रकार का न्याय नहीं किया। वास्तव में बंदा सिंघ बहादर जिसे इतिहासकारों ने प्रस्तुत किया है, उनके कथनों से वे ऊँचे एवं उदार व्यक्ति थे। जिस बारे कई बार अनुमान लगाना भी मुश्किल हो जाता है। उनका निजी जीवन बड़ा पवित्र एवं दोषरहित था। वह खालसा मर्यादा का शत-प्रतिशत पालन करते थे।

यह समझा जाता है कि बाबा बंदा सिंघ बहादर एवं उनके कुछ साथियों के बीच मतभेद उत्पन्न हो गए थे, परन्तु ऐसे मतभेद पल भर के लिए ही रहते थे। बाबा जी स्वयं को गुरु का बंदा कहलवा कर अथवा अपने मालिक का नौकर बताकर बड़ा गर्व अनुभव करते थे और सदा अपने सिक्खों एवं साथियों को गुरु गोबिंद सिंघ जी के हुक्म का पालन करने का निर्देश किया करते थे और सदा ही गुरु साहिब जी के पंथ के समर्थक रहे।

बंदा सिंघ बहादर ने बहुसंख्या में हिन्दू-मुसलमानों को सिक्ख बनाया परन्तु सिक्ख धर्म में लाने के लिए उन्होंने किसी प्रकार की शक्ति का उपयोग नहीं किया।

बंदा सिंघ जी ने कभी भी अपनी गतिविधि को मजहबी झगड़ों तक महदूद नहीं किया था। उनका यह राजनीतिक संघर्ष था। अतः वह मुसलमानों पर किसी प्रकार की मजहबी पाबंदी नहीं लगाना चाहते थे, जिस कारण मुसलमान बहुसंख्या में उनकी छत्र-छाया के नीचे इकट्ठे हो रहे थे। बंदा सिंघ जी सबका हृदय जीत रहे थे और सभी मुसलमानों के हृदय उनकी ओर झुकते जा रहे थे। निःसंकोच वह किसी भी मजहब अथवा कौम से संबंधित हो, जो व्यक्ति भी उनके संपर्क में आता था, वह उसे सिंघ कहकर पुकारते थे।

अतः हम देखते हैं कि हमारे गुरु साहिबान जी ने जो मजहबी सहनशीलता की नीति चलाई थी, बाबा बंदा सिंघ जी ने उसे बरकरार रखा था। गुरु साहिब ने सिक्खों को संगठित किया था कि वे अपने अधिकारों की रक्षा कर सकें और पूजा, बोलने एवं धार्मिक गतिविधियों के लिए स्वतंत्रता पा सकें। अगर गुरु साहिबान ने हथियार उठाए थे तो केवल स्व-रक्षा के लिए उठाए थे। बंदा सिंघ जी ऐसे प्रथम व्यक्ति थे जिन्होंने राजनीतिक शक्ति कायम की थी।

बंदा सिंघ जी के समय दौरान लोगों के मन आंदोलनकारी प्रभाव अधीन थे, जिस बारे इतिहास ध्यान देने से विफल रहा है। लोगों के मन में अत्याचार का मुकाबला करने की एक रुचि जाग्रत हुई थी और देशहित वे मर-मिटने को तैयार हो गए थे। बंदा सिंघ बहादर एवं उनके साथियों द्वारा एक ऐसी उदाहरण कायम की गई थी जो आगामी दिनों में नई पीढ़ी को प्रकाशस्तंभ का काम दे सकती थी।

एक राष्ट्रीय राज्य का संकल्प, जो कि सदियों पहले मिट गया था, एक बार पुनः नया जोश एवं नया उत्साह लेकर प्रफुल्लित हुआ और कुछ समय के लिए शक्तिशाली मुकाबले का भी सामना करता रहा और फिर भूमिगत चिंगारी को कायम रखता रहा और तदन्तर चालीस वर्ष पश्चात् एक शक्तिशाली ज्वाला बनकर प्रगट हुआ और फिर कभी भी दबाया न जा सका।

भाई मनी सिंघ जी शहीद

गुरु हरिराय जी से साक्षात्कार

भाई मनी सिंघ का जन्म चैत्र शुदि द्वादशी सम्वत 1701 को राजपूत घराने के माई दास पुत्र भाई बलू के घर, माता मधरी बाई के उदर से गाँव अलीपुर ज़िला मुजफ्फरगढ़ (पाकिस्तान) में हुआ। उनके दादा और पिता जी गुरुघर के अनन्य श्रद्धालु थे। घर में हर वक्त गुरु और गुरुवाणी की महिमा गाई जाती थी। भाई मनी सिंघ ने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा घर में ही प्राप्त की। वह गुरमुखी पढ़ना अति शीघ्र सीख गए और पाँच-छः वर्ष की आयु में पाठ करना सीख गए। उनके मन में हर वक्त यह चाव रहता था कि वह गुरु साहिब के दर्शन करें। जिस साल गुरु हरिराय साहिब गुरुगद्दी पर विराजमान हुए थे उसी साल भाई मनी सिंघ पैदा हुए थे।

एक बार इलाके की संगतों ने गुरु हरिराय साहिब के दर्शनों को जाने का मन बनाया। जब मनी राम (भाई मनी सिंघ का पूर्व नाम) को यह पता लगा तो उन्होंने भी अपने पिता से विनती की कि वह भी गुरु जी के दर्शन करने जाएँगे। भाई मनी राम की इतनी श्रद्धा देखकर पिता माई दास पुत्र को मना न कर सके और जत्थे के साथ मनी राम को भी साथ ले गए।

कुछ दिन के पश्चात् जत्था कीरतपुर पहुँचा। उन्होंने वहाँ जाकर देखा कि कीरतपुर में बड़ी चहल-पहल थी और बड़ी दूर-दूर से सिक्ख संगतें गुरु जी के दर्शनार्थ आई थीं। गुरु जी का अटूट लंगर चल रहा था और संगतें लंगर ग्रहण करके तम्बुओं में विश्राम कर रही थीं। उनके जत्थे ने भी लंगर ग्रहण किया और जत्थे के सभी लोग विश्राम करने चले गए। भाई मनी राम यह सारा दृश्य देखकर बहुत प्रभावित हुए।

अगले दिन प्रातः वह गुरु जी के दरबार में गए। उस समय कीर्तनीए 'आसा दी वार' का कीर्तन कर रहे थे। गुरु जी तख्त पर विराजमान थे। संगतें बारी-बारी जाकर उनके आगे कोई भेंट रखकर शीश नवाती थीं। गुरु जी सब को दया-दृष्टि से देखकर आशीर्वाद देते थे। फिर संगतें दरबार में बड़े आदर से बैठ जाती थीं। जब भाई मनी राम की बारी आई तो उन्होंने बड़े प्रेम से शीश नवाया। वह काफी समय गुरु जी की ओर देखते रहे। गुरु जी भी अपनी दिव्य-दृष्टि से जान गए कि वह कोई आलौकिक बालक था। जब भाई मनी राम जत्थे के साथ कुछ दिन वहाँ ठहरे तो उन्होंने मन बना लिया कि वह गुरु जी की सेवा में रहेंगे।

एक दिन उनका गुरु जी से साक्षात्कार हो गया। गुरु हरिराय साहिब ने उनको अपने पास बुलाया और कहा, "बेटा! तुम्हारा क्या नाम है?" "मेरा नाम जी मनी राम है", उसने उत्तर दिया। गुरु जी उसका नाम सुनकर मुस्कुरा दिए और कहने लगे, "ठीक ही तू मनी (भाव एक हीरा) ही है। क्या तूने कुछ गुरुवाणी भी सीखी है?" भाई मनी राम ने कहा, "हजूर! मैंने नितनेम की वाणियाँ जपुजी साहिब, रहरासि, कीरतन सोहिला और आरती कंठ की हुई हैं।"

गुरु जी यह सुनकर बहुत खुश हुए और फिर पूछने लगे, "तू घर में क्या काम करता है?" भाई मनी राम ने विनम्रतापूर्वक बताया कि वह घर में अपने पिता जी के साथ कृषि के

कामकाज में सहायता करता है। कुछ दिन बाद जब जत्था वापिस जाने लगा तो मनी राम ने अपने पिता जी से आग्रह किया कि वह गुरु की सेवा में ही रहना चाहता है।

उसके पिता जी गुरु जी के अनन्य श्रद्धालु थे। मनी राम की यह इच्छा सुनकर वे बहुत खुश हुए। वे गुरु जी को मिले और मनी राम की इच्छा के बारे में उनको बताया। गुरु जी ने कहा, "मैं खुद ही आपको मिलकर मनी राम को आपसे माँगने वाला था। यह बड़ा लायक एवं होनहार बालक है। यह एक दिन बड़ा विद्वान बनेगा। हम इसे गुरुवाणी लिखने का काम देंगे। इसे काफी वाणी कंठ भी है।"

गुरु जी की यह बात सुनकर भाई माई दास अपने जत्थे के साथ वापिस अपने गाँव को चले गए और मनी राम को गुरु जी के पास ही छोड़ गए। गुरु जी ने अगले दिन ही भाई किरपाल चन्द जी जो माता गुजरी के भाई थे और गुरु हरिराय के बाईस सौ घुड़सवारों के कमांडर थे, को अपने पास बुलाया और उसे कहा कि वह मनी राम को शस्त्र विद्या एवं घुड़सवारी में निपुण कर दे। भाई मनी राम शीघ्र ही इस विद्या में माहिर हो गया। फिर उसकी पढ़ाई का भी प्रबंध कर दिया गया।



भाई मनी सिंघ के दो विवाह हुए थे। उनका पहला विवाह गाँव खैरपुर ज़िला मुजफ्फरपुर में हुआ। उनकी पत्नी का नाम सीतो बाई था जो कि लक्खी राय की पुत्री थी। लक्खी राय एक बड़ा व्यापारी था और वह पश्चिम पंजाब का माल दिल्ली में बेचा करता था। उसका दूसरा विवाह गुरिया चौहान की पुत्री खेमी बाई से हुआ। भाई मनी सिंघ के घर दस पुत्रों ने जन्म लिया।

उनके दसों पुत्रों का ही सिक्ख इतिहास में बड़ा ऊँचा स्थान है। गुरबख्श सिंघ और चित्र सिंघ भाई मनी सिंघ के साथ ही अमृतसर में रहते थे। जब भाई मनी सिंघ ने लाहौर के हाकिम जकरिया खाँ से यह समझौता किया कि यदि अमृतसर में सिक्खों को वह सम्वत 1791 की वैसाखी मनाने की अनुमति दे देंगे तो वे सरकार को पाँच हजार रुपए अदा करेंगे। किन्तु जकरिया खाँ तत्पश्चात् अपने वायदे से मुकर गया और उसने वैसाखी नहाने आ रहे सिक्खों को मारने की योजना बना ली। जब मनी सिंघ को इसका पता लगा तो उसने गुरबख्श सिंघ और चित्र सिंघ तथा कुछ अन्य सिक्खों को मुख्य रास्तों पर भेज दिया ताकि वैसाखी नहाने आ रहे सिक्खों को रोक सकें। जब वैसाखी के त्योहार का आयोजन न हुआ तो चढ़ावा भी न चढ़ा इस कारण भाई मनी सिंघ पाँच हजार की रकम सरकार को दे न सका। जकरिया खाँ ने इस पूर्ति के बदले भाई मनी सिंघ, गुरबख्श सिंघ एवं चित्र सिंघ को बंदी बना लिया और उन तीनों को 24 जून, सन् 1734 को शहीद कर दिया। भाई उदय सिंघ एक बड़ा शूरवीर योद्धा था और उसने लोहगढ़ की लड़ाई में राजा केसरी चन्द का वध किया था। भाई बचित्र सिंघ भी बड़ा बलवान योद्धा था। जब पहाड़ी राजाओं ने लोहगढ़ किले का दरवाजा तोड़ने के लिए एक मस्त हाथी को भेजा तो बचित्र सिंघ ने हाथी के सिर में इतना जोर से बर्छा मारा था कि हाथी चिल्लाता हुआ पीछे को भाग गया और उसने पहाड़ी राजाओं की फौज को कुचल दिया था।

भाई मनी सिंघ के तीन पुत्र अनिक सिंघ, अजब सिंघ एवं अजायब सिंघ 7 दिसंबर सम्वत 1762 को चमकौर की लड़ाई में शहीदी पा गए थे। भाई बचित्र सिंघ 8 दिसम्बर 1705 ई. को कोटला निहंग खाँ में शहीद हुए। भाई भगवान सिंघ 30 भाद्रों 1757 विक्रमी को आनंदपुर की लड़ाई के समय शहीद हुआ।

इस तरह भाई मनी सिंघ जी के दस पुत्रों में से सातों ने शहीदी जाम पान किया। उनके दस पौत्रे भी सिक्ख पंथ की सेवा करते हुए शहीद हुए। उनके एक पुत्र भाई देसा सिंघ ने रहितनामा लिखा था। उसका रहितनामा भी सिक्ख जगत में बहुत प्रसिद्ध हुआ।

जब गुरु हरिकृष्ण साहिब गुरगद्दी पर विराजमान हुए तो भाई मनी सिंघ उनके दर्शन करने गए। बालगुरु जी के दर्शन करके वे अति प्रसन्न हुए। वे हर वक्त गुरु साहिब की सेवा में तत्पर रहते थे। गुरु जी से उनका इतना प्रेम हो गया कि उन्होंने फिर कीरतपुर में ही रहने का फैसला

कर लिया। वे अपने समूचे परिवार को भी कीरतपुर ले गए। गुरुवाणी लिखने की सेवा उन्होंने पुनः आरम्भ कर दी। वे गुरु जी के मुख्य सलाहकार बन गए। गुरु जी जब भी कोई काम आरम्भ करते तो भाई मनी सिंघ जी को अपने पास बुलाकर सलाह-मशविरा करते।

गुरु हरिकृष्ण साहिब के बड़े भाई बाबा राम राय ने औरंगजेब के साथ मधुर संबंध बना लिए थे। वह हर वक्त औरंगजेब को गुरु हरिकृष्ण के खिलाफ भड़काता रहता था। औरंगजेब ने राजा जय सिंघ को यह जिम्मेदारी सौंपी कि गुरु हरिकृष्ण साहिब को दिल्ली लाए। राजा जय सिंघ ने दीवान परस राम को एक चिट्ठी देकर गुरु जी के पास भेजा। भाई किरपाल चन्द और भाई मनी सिंघ उस समय गुरु जी के पास ही बैठे थे। गुरु जी ने भाई परस राम से चिट्ठी पकड़ ली और भाई मनी सिंघ को पढ़ने के लिए कहा। भाई मनी सिंघ ने जब चिट्ठी पढ़ी तो गुरु जी ने परस राम और उसके साथियों को आराम करने के लिए कहा। उनके जाने के पश्चात् उन्होंने अपने अन्य विश्वसनीय सिक्खों, जिनमें बाबा गुरदित्ता एवं दरघा मल्ल भी शामिल थे, को बुलाया। भाई मनी सिंघ एवं अन्य सिक्खों ने गुरु जी को सलाह दी कि उनको दिल्ली जाना चाहिए। गुरु जी ने फिर परस राम को बुलाकर कहा कि वह दिल्ली जाने को तैयार हैं, परन्तु वह औरंगजेब के सम्मुख नहीं होंगे। परस राम ने वायदा किया कि वह राजा जय सिंघ के बंगले में ठहरेंगे। जब गुरु हरिकृष्ण जी दिल्ली को रवाना हुए तो भाई मनी सिंघ भी उनके साथ ही गए।



गुरु तेग बहादर जी की सेवा में

गुरु हरिकृष्ण साहिब घोड़ों एवं बग्घियों पर सवार होकर दिल्ली को चल दिए। जो चुनिंदा सिक्ख उन्होंने अपने साथ लिए उन में भाई मनी सिंघ भी था। पंजोखड़े में कुछ दिन ठहर कर वे दिल्ली पहुँच गए। दिल्ली में राजा जय सिंघ उनको खुद लेने आया। गुरु हरिकृष्ण साहिब राजा जय सिंघ के बंगले में ठहरे। भाई मनी सिंघ, भाई दरघा मल्ल, बाबा गुरदित्ता एवं भाई किरपाल चंद भी गुरु जी के साथ ही ठहरे, शेष सिक्ख मजनू के टिल्ले में ही ठहर गए।

औरंगजेब ने गुरु को मिलने का भरसक प्रयास किया, किन्तु वे औरंगजेब के सम्मुख न हुए। जब उन्होंने यह अनुभव किया कि औरंगजेब किसी समय भी जय सिंघ के बंगले में आ सकता है तो उन्होंने अपना ठिकाना ही बदल लिया और उन्होंने भाई कल्याणे की धर्मशाला में आवास कर लिया। इस धर्मशाला में आम लोग गुरु जी के दर्शनों को आने लग गए। भाई मनी सिंघ दोनों समय वाणी का पाठ पढ़कर सुनाया करते थे। यहाँ उस समय चेचक की बीमारी फैल गई। गुरु जी बीमारों की सेवा संभाल एवं उपचार करने लगे। भाई मनी सिंघ एवं अन्य सिक्ख हर वक्त उनके साथ रहते।

कुछ समय बाद गुरु हरिकृष्ण को भी चेचक की बीमारी ने ग्रस लिया। गुरु जी को बहुत बुखार हो गया और वे मूर्छित भी हो गए। सिक्खों को बहुत चिंता हो गई। जब एक दिन उनको होश आई तो वे कहने लगे, "हम अब ईश्वर के पास जाने वाले हैं। आप ईश्वरेच्छा मानना! किसी प्रकार का विलाप नहीं करना! मैं यह प्रण करके चला था कि औरंगजेब के सम्मुख नहीं होना! ईश्वर ने यह प्रण निभाने में मेरी सहायता की है।"

जब सिक्खों ने गुरु जी की यह बात सुनी तो वे बहुत दुखी हुए। बाबा गुरदित्ता जी कहने लगे, "महाराज! हमें किस के हवाले करके चले हो?" श्री हरिकृष्ण ने कहा, "गुरु बाबा बकाले।"

फिर उन्होंने हुक्म किया कि एक नारियल एवं पाँच पैसे लेकर आओ। बाबा गुरदित्ता जी थाली में एक नारियल व पाँच पैसे लेकर आया। गुरु जी ने नारियल एवं पैसों को स्पर्श किया। फिर तीन बार उन पर गोलाकार रूप में हाथ फेरा। उन्होंने सिर झुकाया एवं पुनः बोले, "गुरु बाबा बकाले।" यह वचन कहकर आपकी समाधि लग गई और कुछ समय पश्चात् वे प्रभु में विलीन हो गए। सभी संगतों ने मिलकर यमुना के तट पर संस्कार कर दिया। अन्तिम रस्म अदा करके भाई मनी सिंघ ने बाबा गुरदित्ता एवं दरघा मल्ल को बकाले जाने के लिए कहा ताकि वे श्री तेग बहादर को गुरुगद्दी पर सुशोभित करें। भाई मनी सिंघ समझ गए थे कि (गुरु) तेग बहादर ही बकाले रहते थे और गुरु हरिकृष्ण का उनकी तरफ ही इशारा था क्योंकि (गुरु) तेग बहादर जी उनके बाबा (दादा) लगते थे।

गुरु हरिकृष्ण की माता कृष्ण कौर एवं अन्य सेवकों को लेकर वे कीरतपुर आ गए। माता

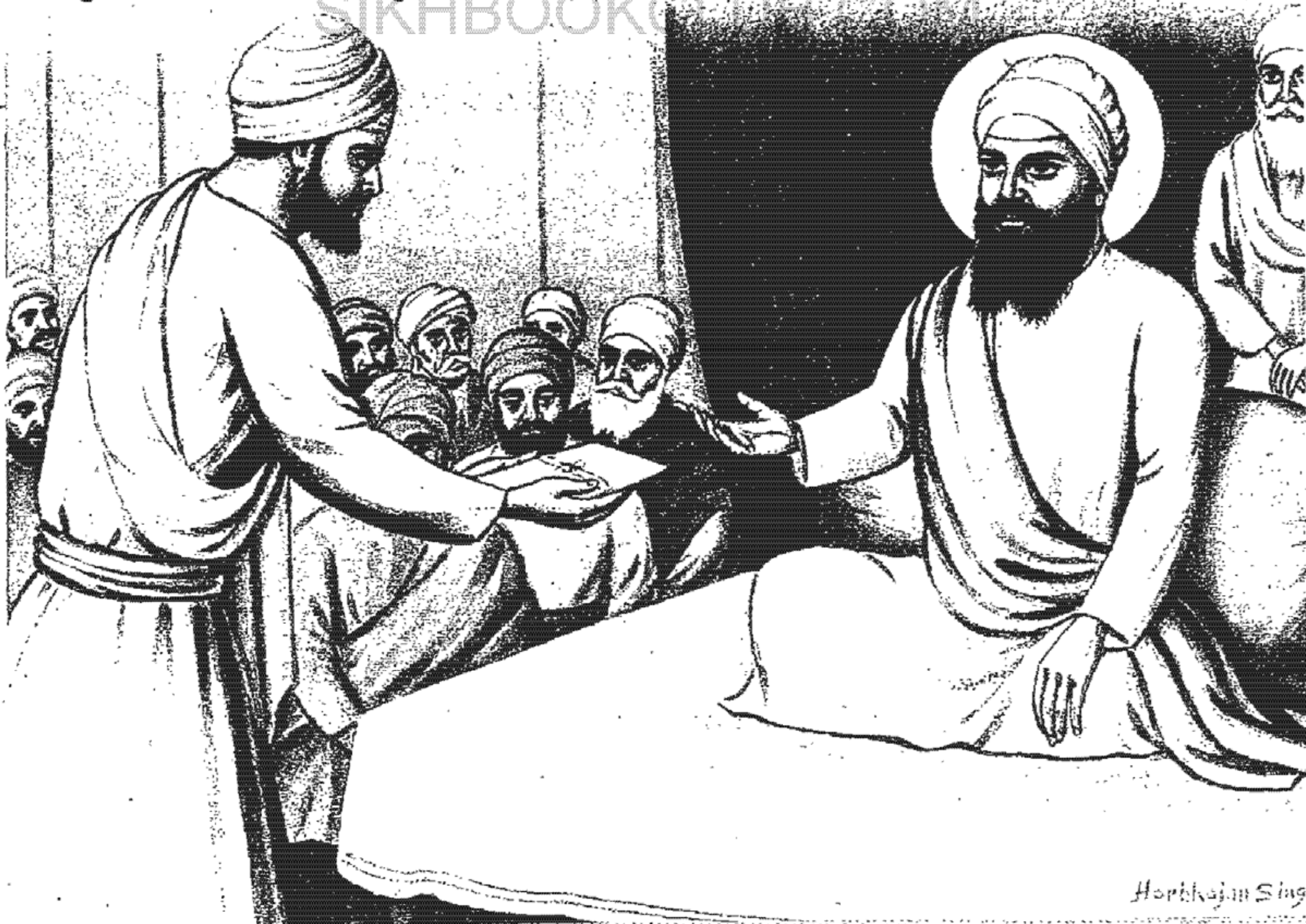
कृष्ण कौर चूँकि बहुत उदास थे, इसलिए वे उनका पूरा ध्यान रखते थे।

जब गुरु तेग बहादर जी गुरुगद्दी पर विराजमान हो गए तो भाई मनी सिंघ ने माता कृष्ण कौर को विनती की कि गुरु तेग बहादर जी को कीरतपुर बुलाया जाए ताकि उनको गुरु हरिकृष्णा साहिब का तख्त, कलगी एवं अन्य सामान सौंपा जा सके। माता कृष्ण कौर ने भाई मनी सिंघ को ही इस काम हेतु योग्य समझा। उन्होंने एक चिट्ठी लिखकर भाई मनी सिंघ को दी और उनको बकाले भेजा।

भाई मनी सिंघ जब बकाले पहुँचे तो उस समय वहाँ बिल्कुल शांतमयी वातावरण था। बाबा धीरमल को मक्खन शाह लुबाने ने भगा दिया था और शेष दंभी गुरु भी चंपत हो गए थे।

भाई मनी सिंघ गुरु जी के घर गए और गुरु तेग बहादर जी के दर्शन करके आनंदित हो गए। उन्होंने गुरु जी को शीश नवाया। फिर उन्होंने अपनी जेब में से चिट्ठी निकाल कर गुरु जी को दी। गुरु जी ने चिट्ठी पढ़ ली। गुरु तेग बहादर जी की माता नानकी जी भी पास आकर बैठ गईं। गुरु जी ने जब उनको चिट्ठी के बारे में बताया तो उन्होंने कहा, "हमें कीरतपुर जाना चाहिए। मैं अन्य सिक्खों को भी सन्देश भेज देती हूँ।"

भाई मनी सिंघ कुछ दिन बाबा बकाला ही ठहरे। जब चलने का प्रबंध हो गया तो वे भी गुरु जी के साथ ही कीरतपुर को चल पड़े।



आनंदपुर साहिब में

जब सिक्खों को यह पता लगा कि गुरु तेग बहादर जी कीरतपुर स्थाई तौर पर रहने लग गए हैं तो वे अपनी समर्थानुसार भेंट लेकर गुरु जी के दर्शनों को आने लगे। पर आपकी महिमा एवं बेअन्त चढ़ावे को उनका बड़ा भाई सूरज मल एवं उसका परिवार बर्दाश्त न कर सका। सूरज मल के पास किसी चीज की कमी नहीं थी। गुरु घर की सारी जायदाद का वह वारिस था और कीरतपुर की सारी जमीन पर भी उसका कब्जा था। पर फिर भी गुरु तेग बहादर उसकी एवं माता कृष्ण कौर की काफी सहायता करते थे। कोमल हृदय वाले गुरु जी सूरज मल की ईर्ष्या को सहन न कर सके। उन्होंने कीरतपुर के समीप कोई अन्य नगर बसाने की योजना बनाई। भाई मनी सिंघ को साथ लेकर वे कहलूर गए और वहाँ के राजा दीप चंद से सतलुज नदी के किनारे माखोवाल का सारा इलाका खरीद लिया। माखोवाल कीरतपुर से आठ मील दूर था। जब माखोवाल मकानों का निर्माण हो गया तो इस नगर का नाम 'नानकी चक्क' रखा गया। जब गुरु जी एवं अन्य सिक्खों ने 'नानकी चक्क' जाकर निवास किया तो भाई मनी सिंघ भी परिवार सहित वहाँ जाकर रहने लग गए।

आनंदपुर नगर का अभी निर्माण चल ही रहा था कि गुरु जी ने प्रचार हेतु देश की यात्रा करने का मन बना लिया। नगर के निर्माण कार्य का दायित्व उन्होंने भाई मनी सिंघ, भाई भागू, भाई रामा और भाई साधु मुलतानी को सौंप दिया। भाई मनी सिंघ चूँकि गुरुघर के पुराने सिक्ख थे, इसलिए उसे उन्होंने कोषाध्यक्ष बना दिया और हिदायत की कि जो धन आए उससे मकानों का निर्माण किया जाए और लंगर चलाया जाए।

नगर वासियों को हिदायतें करके गुरु जी अपने परिवार एवं चुनिंदा सिक्खों को साथ लेकर मालवा की यात्रा के लिए चले गए।

गुरु द्वारा दिए हुए मानचित्र अनुसार भाई मनी सिंघ नगर का निर्माण करवाते गए। पानी के अभाव को पूरा करने के लिए उन्होंने एक कुआं भी लगवाया। इमारतों के अलावा जो जमीन खाली पड़ी थी वहाँ वे खेती करवाने लग गए। कुछ समय में अच्छी फसल होने लग गई। इस तरह लंगर के लिए गेहूँ, मकई, दालें तैयार होने लग गईं। सिक्खों की रिहायश के लिए भी उन्होंने अनेक मकान बनवाए।

गुरु जी मालवा देश से होते हुए कुरुक्षेत्र, दिल्ली, आगरा, बनारस इत्यादि नगरों में प्रचार करते हुए पटना पहुँचे। पटना पहुँच कर उन्होंने अपने परिवार को वही छोड़ दिया और स्वयं ढाका की ओर चले गए। गुरु जी पाँच साल भारत की यात्रा करते रहे और फरवरी 1671 ई. को आनंदपुर वापिस आ गए। जब भाई मनी सिंघ और उसके साथियों को गुरु जी के आगमन का पता लगा तो वे चार मील चलकर गुरु जी का अभिनंदन करने आए। गुरु जी को मिलकर वे बहुत प्रसन्न हुए और सभी गुरु जी के चरणों पर नतमस्तक हो गए।

गुरु जी जब आनंदपुर नगर पहुँचे तो उनके आगमन की खुशी में रात को दीपमाला की गई। गुरु जी नगर का नव-निर्माण देखकर अति प्रसन्न हुए। जब उनको पता लगा कि बंजर भूमि पर भी कृषि होने लग गई थी तो उन्होंने भाई मनी सिंघ की भूरि-भूरि प्रशंसा की। जब उन्होंने एक अन्य खुशखबरी सुनी कि भाई मनी सिंघ के घर तीन अन्य पुत्रों ने जन्म लिया था तो उन्होंने भाई मनी सिंघ को बधाई दी।

जब क्षेत्र की संगतों को यह पता लगा कि गुरु तेग बहादर जी पाँच साल बाद आनंदपुर साहिब वापिस आ गए हैं तो वह गुरु जी के दर्शन करने और (गुरु) गोबिंद राय के अवतार धारण की खुशी में बधाई देने के लिए आने लगीं। (गुरु) गोबिंद राय ने 2 दिसंबर सन् 1666 ई. को पटना में अवतार धारण किया था। वह अब पाँच साल के हो गए थे। परन्तु गुरु तेग बहादर जी उनको पटना ही छोड़ आए थे।

कुछ समय बाद गुरु जी ने पटना संदेश भेजकर अपने परिवार को बुला लिया। बालक गोबिंद राय को जब भाई मनी सिंघ ने देखा तो वे अति प्रसन्न हुए। आनंदपुर पहुँच कर (गुरु) गोबिंद राय को पढ़ाने-सिखाने का कार्य आरंभ हुआ। गुरु तेग बहादर जी ने भाई मनी सिंघ को (गुरु) गोबिंद राय को पंजाबी पढ़ाने की जिम्मेदारी सौंपी। भाई मनी सिंघ उनको बड़े प्रेम से पढ़ाते थे।



पवित्र गुरुवाणी का लेखन

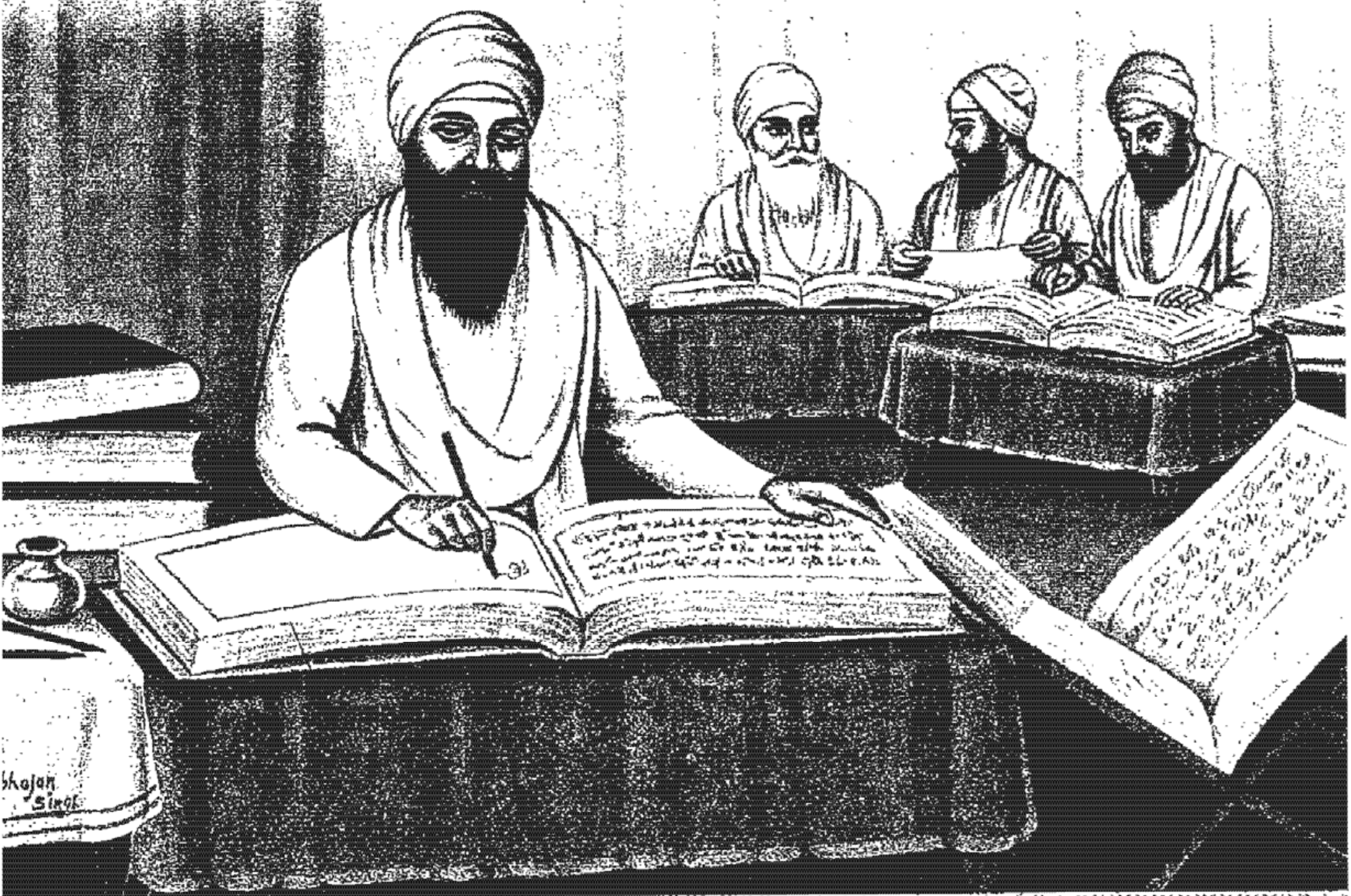
जब गुरु तेग बहादर जी को औरंगजेब के हुक्म से दिल्ली में शहीद कर दिया गया तो गुरु गोबिंद राय जी गुरुगद्दी पर विराजमान हुए। गद्दी पर विराजमान होते ही उन्होंने सिक्खों को यह आदेश कर दिया कि वे उनके लिए हथियार, घोड़े इत्यादि भेंट के रूप में लाया करें। उन्होंने शूरवीर सिक्खों को भी अपनी सेना में भर्ती करना शुरु कर दिया। कुछ समय पश्चात् ही एक हथियारबंद सेना तैयार हो गई। उन दिनों ही नाहन के राजा मेदनी प्रकाश ने गुरु जी को संदेश भेजा कि वे कुछ समय के लिए उसकी रियासत में आकर ठहरें। उसकी रियासत के रमणीय दृश्यों को मुख्य रखकर गुरु जी ने उसकी विनती स्वीकार कर ली और यमुना नदी के तट पाऊँटा साहिब में चले गए। राजा मेदनी प्रकाश की सहायता से उन्होंने वहाँ अनेक रिहायशी मकान बनवाए। जहाँ वे अपने शूरवीरों को सैन्य प्रशिक्षण देते थे, वहाँ आत्मिक बल की वृद्धि हेतु साहित्य की रचना भी करते थे। उन्होंने दूर-निकट के कवियों को अपने पास बुला लिया। इतिहास बताता है कि उनके पास 52 कवि थे, जो कविता लिखते थे और कवि दरबार में भाग भी लेते थे। गुरु जी स्वयं भी एक उच्चकोटि के कवि थे जिन्होंने अनेक ग्रंथ लिखे, जिनका संकलन करके बाद में भाई मनी सिंघ ने दसम ग्रंथ साहिब का नाम दिया। गुरु गोबिंद सिंघ जी ने भाई मनी सिंघ को यह जिम्मेदारी सौंपी थी कि वह आदि ग्रंथ जो गुरु अर्जुन देव जी ने तैयार किया था, उसकी प्रतिलिपियाँ तैयार किया करें। भाई मनी सिंघ आदि ग्रंथ की मूल कापी करतारपुर में लेने आए किन्तु बाबा धीरमल के उत्तराधिकारियों ने ग्रंथ देने से इन्कार कर दिया। पर एक पोथी उनको किसी सिक्ख प्रेमी से मिल गई। उस पोथी से भाई मनी सिंघ ने अनेक प्रतिलिपियाँ तैयार कीं और बाहर की संगतों को भेंट कीं। इस प्रकार गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अपनी वाणी की प्रतिलिपियाँ तैयार करने के लिए अनेक लेखक रखे हुए थे। भाई मनी सिंघ और इन लेखकों की कृपा से गुरु गोबिंद सिंघ की समस्त वाणी एवं आदि ग्रंथ साहिब की वाणी सुरक्षित रह सकी। चूँकि आनंदपुर साहिब का किला खाली करने के बाद जब सरसा नदी पार की थी तो सभी ग्रंथ दरिया में ही बह गए थे।

उन दिनों ही बाबा राम राय की पत्नी पंजाब कौर गुरु गोबिंद सिंघ जी को मिलने आईं। उन्होंने बताया कि बाबा राम राय को उनके मसंदों ने समाधिस्थ ही मृत समझ कर जला दिया है। जब गुरु जी को यह पता लगा तो वे भाई मनी सिंघ एवं अन्य सिंघों को साथ लेकर देहरादून गए। वहाँ जाकर उन्होंने जांच-पड़ताल की और जो मसंद दोषी पाए गए उनको यथायोग्य दण्ड दिया गया। अगले साल बाबा राम राय की बरसी पर गुरु गोबिंद सिंघ स्वयं न जा सके, परन्तु उन्होंने भाई मनी सिंघ एवं दीवान नंद चंद को भेज दिया। जब भाई मनी सिंघ एवं दीवान नंद चंद देहरादून पहुँचे तो वहाँ एक पुराना मसंद गुरबख्श राय भी पहुँचा हुआ था। उस मसंद ने जब गुरु गोबिंद सिंघ जी की शान के विरुद्ध कुछ शब्द बोले तो भाई मनी सिंघ ने

तलवार के एक वार से ही उसका शीश काट कर रख दिया।

18 अस्सू सम्वत् 1745 को पहाड़ी राजाओं ने गढ़वाल के राजा फतेह शाह के नेतृत्व में गुरु जी पर हमला किया। जब गुरु जी को पता लगा तो वे पाऊँटा साहिब छोड़कर भंगानी में आ गए। इस लड़ाई में भाई मनी सिंघ ने हिस्सा लिया और वीरता के ऐसे जौहर दिखाए कि देखने वाले दंग रह गए। लड़ाई में भाई मनी सिंघ का भाई हरी चंद शहीद हो गया। भाई मनी सिंघ के लड़कों ने भी इस लड़ाई में भाग लिया और बड़ी वीरता से लड़े। सम्वत् 1748 विक्रमी को जब नादौन का युद्ध हुआ तो उस में भाई मनी सिंघ एवं उसके लड़कों ने भी भाग लिया। इस युद्ध में भाई मनी सिंघ बड़ी बहादुरी से लड़े। गुरु गोबिंद सिंघ जी आपकी बहादुरी पर सुप्रसन्न हुए और उन्होंने भाई मनी सिंघ को 21 मार्च को दीवान की पदवी पर नियुक्त कर दिया।

भंगानी का युद्ध जीतने के बाद गुरु जी आनंदपुर साहिब आ गए और आकर उन्होंने किलों का निर्माण करना शुरु कर दिया। भाई मनी सिंघ भी अपने परिवार सहित आनंदपुर साहिब आ गए। यहाँ आकर भी उनका मुख्य कार्य ग्रंथ साहिब की प्रतिलिपियाँ लिखना ही था। भाई मनी सिंघ की आयु उस समय लगभग पचास वर्ष से ऊपर हो गई थी। गुरु गोबिंद सिंघ जहाँ भी यात्रा पर जाते थे तो वे भाई मनी सिंघ को साथ ही रखते थे। जब फरवरी 1694 ई. को गुरु जी हरिद्वार गए तो भाई मनी सिंघ भी उनके साथ थे।



लोहगढ़ की जंग

जब हरिगोबिंद साहिब अमृतसर छोड़कर कीरतपुर चले गए थे तो मीणे मेहरबान के पुत्र हरि जी ने दरबार साहिब पर अधिकार कर लिया था। जब सम्वत् 1753 विक्रमी में सोढी हरि जी का देहांत हो गया तो मीणे अमृतसर छोड़कर चले गए। फिर अमृतसर की सिक्ख संगत गुरु गोबिंद सिंघ जी को मिली और उनसे विनती की कि दरबार साहिब का प्रबंध वे अपने हाथों में लें। उनकी माँग अनुसार गुरु जी ने भाई मनी सिंघ को योग्य समझ कर दरबार साहिब का मुख्य ग्रंथी नियुक्त कर दिया और समूचा प्रबंध करने की भी उनकी जिम्मेदारी लगा दी। इतिहासकारों के अनुसार भाई मनी सिंघ 3 मई 1696 ई. को अमृतसर पहुँचे और वहाँ जाकर उन्होंने निशान साहिब झुलाया और गुरु ग्रंथ साहिब का प्रकाश किया। गुरु गोबिंद सिंघ जी ने भाई जी के साथ पाँच सिक्ख भी भेजे थे जिन्होंने भाई मनी सिंघ के नेतृत्व में श्री अकाल तख्त साहिब और श्री हरिमन्दिर साहिब की सेवा-संभाल करनी थी।

श्री हरि जी पुत्र मेहरबान ने दरबार साहिब की पुरानी मर्यादा जो गुरु अर्जुन देव जी के समय से चली आ रही थी, बदल दी थी। भाई मनी सिंघ ने उस मर्यादा को पुनः गुरमत के आशयानुसार जारी किया। वह मर्यादा आज भी चल रही है।

जब 1699 ई. को वैसाखी वाले दिन गुरु जी ने खालसा पंथ की सृजना की तो मनी सिंघ भी अपने भाइयों एवं पुत्रों सहित वहाँ पहुँचे। खण्डे बाटे का अमृतपान करके उनका नाम मनीराम से मनी सिंघ हो गया। भाई जी के दसों पुत्रों ने भी अमृतपान किया। इन दस पुत्रों में भाई उदय सिंघ और भाई बचित्र सिंघ भी शामिल थे।

भाई बचित्र सिंघ भाई मनी सिंघ के दूसरे पुत्र थे। आप ने गुरु तेग बहादर जी की निगरानी में अपना बचपन बिताया था और बड़े होकर गुरु गोबिंद सिंघ की सेना में भर्ती हो गए थे। वह गुरु गोबिंद सिंघ जी के बड़े लाडले योद्धा थे। जब पहाड़ी राजाओं ने लोहगढ़ के किले पर हमला कर दिया तो भाई बचित्र सिंघ बड़ी वीरता से लड़े। पहाड़ी राजाओं ने एक ताकतवर हाथी को मदिरा से मस्त करके, जिरह-बख्तरों से सुसज्जित करके किले के दरवाजे को तोड़ने के लिए भेजा। गुरु जी ने हाथी का मुकाबला करने के लिए भाई बचित्र सिंघ को चुना। गुरु जी ने उसे आशीष दिया और एक बर्छी देकर मुकाबला करने के लिए भेजा। पहाड़ी सेना बहुसंख्या में थी। पहाड़ी राजा केसरी चन्द घोड़े को उछालता हुआ हाथी के पीछे-पीछे आ रहा था। जब बचित्र सिंघ हाथी का मुकाबला करने के लिए निकला तो भाई मनी सिंघ और उनका दूसरा लड़का उदय सिंघ भी पहाड़ियों का मुकाबला करने के लिए चल दिए।

जब मस्त हाथी किले के निकट आया तो बचित्र सिंघ ने घोड़े की रकाबों पर पूरा भार डालकर पंजों के बल पूरे जोर से हाथी के माथे में ऐसा बर्छा मारा जो तवे को भेदता हुआ उसके सिर में धँस गया। हाथी बड़ा क्रोध में आया और चिल्लाता हुआ पीछे की ओर भाग

गया। महावत भी स्वयं को काबू न रख सका और हाथी से गिरकर मौत की नींद सो गया। हाथी अपनी फौज को कुचलने लग गया और पहाड़िए भेड़ों–बकरियों की तरह जान बचाने के लिए चारों तरफ भागने लगे। उधर राजा केसरी चन्द जो हाथी की तरह ही मस्त हुआ घोड़ा नचा रहा था, भाई उदय सिंघ के काबू आ गया। भाई उदय सिंघ ने ऐसा वार किया कि उसका सिर उतर कर धरती पर गिर गया। भाई उदय सिंघ ने राजा केसरी चंद के सिर को उठाया और गुरु गोबिंद सिंघ के चरणों पर रख दिया। भाई मोहकम सिंघ ने मस्त हाथी की सूंड ही काट दी और शेर सिंघ ने हाथी की टांग उतार दी और वह धरती पर गिर पड़ा। राजा अजमेर चंद और हंडूरिया हिम्मत सिंघ भी तीर लगने से सख्त घायल हो गए। इस लड़ाई में भाई मनी सिंघ भी सख्त घायल हो गए। सिक्ख उनको उठाकर किले में ले आए। जब पहाड़ी सैनिकों ने देखा कि उनके अनेक राजा मृत्यु को प्राप्त हो गए हैं और अनेक घायल हो गए हैं तो वे भी जिधर मुँह हुआ उधर को ही भाग गए। सिक्खों ने उनका पीछा न किया। इस लड़ाई के पश्चात् जब भाई मनी सिंघ तंदरुस्त हो गए तो फिर वे अमृतसर आ गए। भाई मनी सिंघ एवं उसके परिवार की सेवाओं को मुख्य रखकर गुरु जी ने उनको "फरज़ंदह खानेजाद" (गुरु का प्रिय पुत्र) का खिलाब प्रदान किया।



माता सुंदरी जी और माता साहिब कौर जी को दिल्ली पहुँचाना

मुगल सेना एवं पहाड़ी राजाओं की सेना ने आनंदपुर के किले को छः-सात माह घेरा डालकर रखा परन्तु गुरु जी ने किला खाली न किया।

किन्तु जब राशन समाप्त होता देखा तो गुरु जी को विवश होकर किला खाली करना पड़ा।

गुरु जी ने किला खाली करने से पूर्व यह योजना बनाई कि माता गुजरी एवं छोटे साहिबजादों और माता सुंदरी व माता साहिब कौर को सिंघ सेना से भिन्न तौर पर भेज दिया जाए ताकि यदि मुगल पीछा भी करें तो उनको रोक लिया जाए। इस तरह छोटे साहिबजादे और दोनों माताएँ सुरक्षित निकल जाएँगी। उन्होंने माता गुजरी एवं छोटे साहिबजादों को एक घोड़े पर चढ़ाया और उनके साथ कुछ सूरमे सिंघ दिए। माता सुंदरी एवं माता साहिब कौर के साथ उन्होंने बाबा दीप सिंघ और भाई मनी सिंघ को भेजा। दरिया में उस समय बाढ़ आई हुई थी और शीत ऋतु के कारण पानी भी बहुत ठंडा था। पर माताएँ और बाबा दीप सिंघ एवं भाई मनी सिंघ के घोड़े ठीक ढंग से दरिया पार कर गए। बाहर निकलते ही उन्होंने घोड़ों को गति दी और कुछ समय में ही रोपड़ पहुँच गए। पर माता गुजरी का घोड़ा अपने सहायक सिंघों से भिन्न हो गया और किसी अनजान स्थान की ओर निकल गया।

रोपड़ में एक सिक्ख गुरु गोबिंद सिंघ जी का परम श्रद्धालु था। वे सीधा उसके घर में गए और उसे पूरी बात से परिचित करवाया। उस सिक्ख ने उनकी बड़ी सेवा की। उसने एक बैलगाड़ी पर सुन्दर कपड़े पहना दिए और माता सुंदरी जी और माता साहिब कौर को बीच बैठा दिया। बाबा दीप सिंघ और भाई मनी सिंघ ने मुसलमानी वेशभूषा धारण कर ली और वे बैलगाड़ी के पीछे-पीछे चल पड़े।

उस सिक्ख का एक रिश्तेदार दिल्ली में रहता था। वहाँ उसकी बड़ी हवेली थी जिसे भाई जवाहर सिंघ की हवेली कहते थे। भाई मनी सिंघ व बाबा दीप सिंघ को उसने भाई जवाहर सिंघ की हवेली का पूरा पता दे दिया।

उस समय मुगल फौज चूँकि गुरु गोबिंद सिंघ के पीछे लगी हुई थी, इसलिए उन्हें दिल्ली जाते मार्ग में किसी ने न रोका और वे सकुशल जवाहर सिंघ की हवेली पहुँच गए। भाई जवाहर सिंघ भी गुरु घर का परम श्रद्धालु था। उसने दोनों माताओं को शीश नवाया और घर की महिलाओं को उनकी सेवा में लगा दिया। भाई मनी सिंघ एवं भाई दीप सिंघ की रिहायश हेतु उसने एक कमरा दे दिया।

एक दिन बाबा दीप सिंघ ने माता सुंदरी से विनती की, "माता जी! गुरु जी के बारे में अभी कुछ पता नहीं लगा। हमें भी चिंता है, इसलिए मैं उनका पता करता हूँ और साथ ही अपने

माता-पिता का पता लाता हूँ।" माता सुंदरी जी ने बाबा दीप सिंघ को आज्ञा दे दी और वह चला गया।

पर भाई मनी सिंघ दोनों माताओं की सेवा में ही जुटा रहा। वह नगर में भेष बदलकर जाता और कुछ विश्वसनीय सिंघों को मिलता पर गुरु जी के बारे में उसे कोई सूचना न मिली। कई महीनों के पश्चात् उसे पता लगा कि गुरु जी लक्खी जंगल में ठहरे हुए हैं। भाई मनी सिंघ को कुछ उम्मीद हुई तो वह घोड़ा लेकर लक्खी जंगल की ओर रवाना हो गया। वहाँ जाकर उसे पता लगा कि गुरु जी ने भाई डल्ले के पास साबो की तलवंडी में निवास किया हुआ है।

जब उसने गुरु जी के दर्शन किए तो वह उनके चरणों पर झुक गया। गुरु जी ने पूछा, "भाई मनी सिंघ! सुंदरी और साहिबां का क्या हाल है?" भाई मनी सिंघ ने बताया कि वे बिल्कुल सकुशल हैं और दिल्ली में रह रही हैं। पर जब भाई मनी सिंघ ने साहिबजादों और माता गुजरी के बारे में सुना तो वह खुद पर काबू न पा सका और फूट-फूट कर रोने लग गया। गुरु जी ने उसे दिलासा दिया और समझाया, "हमारा इस में क्या है? सब कुछ उस प्रभु का है। वह स्वयं ही देता है और स्वयं ही ले जाता है। तुम अब इस तरह करो, दिल्ली को वापिस लौट जाओ और अपनी दोनों माताओं को यहाँ ले आओ।" भाई मनी सिंघ गुरु जी का हुक्म मानकर दिल्ली आ गया। पर वह माताओं को साहिबजादों के बारे में कुछ न बात सका। उसने कहा, "माता जी! गुरु जी महाराज ने आपको तलवंडी साबो में आने को कहा है।" कुछ दिन बाद वह दोनों माताओं को लेकर गुरु जी के पास पहुँच गया।



श्री गुरु ग्रंथ साहिब का पुनः संपादन

जब गुरु गोबिंद सिंघ जी गुरु की कांशी दमदमा साहिब में ठहरे हुए थे तो उस समय वातावरण शांतमयी हो गया था। बादशाह औरंगजेब ने अपने उच्चाधिकारियों को संदेश भेज दिए थे कि वे गुरु जी को तंग न करें। इस शांतमयी माहौल का लाभ लेने के लिए गुरु जी ने यह फैसला किया कि गुरु ग्रंथ साहिब जिसका संपादन गुरु अर्जुन देव जी ने किया है, उस में गुरु तेग बहादर साहिब की वाणी भी शामिल की जाए। यह एक बड़ा कार्य था और समूचे श्री गुरु ग्रंथ साहिब का पुनः संपादन होना था।

भाई मनी सिंघ आनंदपुर साहिब में श्री गुरु ग्रंथ साहिब की प्रतिलिपियाँ तैयार करता रहा था, इसलिए इस कार्य हेतु उन्होंने भाई मनी सिंघ को ही लेखक बनाने की तजवीज बनाई। भाई मनी सिंघ श्री (गुरु) ग्रंथ साहिब की अनेक प्रतिलिपियाँ माझा, मालवा एवं दुआबा की श्रेष्ठ संस्थाओं को दे चुका था। इसलिए उसने कुछ प्रतिलिपियाँ एकत्र कर लीं। गुरु साहिब को विनती करके उसने बाबा दीप सिंघ जी को भी संदेश भेजकर गाँव पहूविंड से दमदमा साहिब बुला लिया।

बाबा दीप सिंघ जी को जब यह पता लगा कि गुरु साहिब सकुशल दमदमा साहिब में रह रहे हैं तो वे बहुत प्रसन्न हुए और शीघ्र ही दर्शनों के लिए पहुँच गए। साहिबजादों के बारे में सुन कर वे भी बहुत दुखी हुए, पर गुरु साहिब के मनोबल ने सभी को ढाढस दिया।

गुरु साहिब ने एक तम्बू लगवाया और वे भाई मनी सिंघ एवं बाबा दीप सिंघ को वाणी लिखवाते जाते थे। इस तरह (गुरु) ग्रंथ साहिब के दो स्वरूप साथ ही साथ तैयार हो रहे थे। गुरु गोबिंद सिंघ जी एक दिन में जो भी लिखवाते थे, उस गुरुवाणी के सायंकाल के दीवान में सभी संगतों को अर्थ करके बताते थे। बाबा दीप सिंघ और भाई मनी सिंघ तो अर्थ लिखते भी जाते थे। यदि किसी बात की बाबा दीप सिंघ अथवा भाई मनी सिंघ को शंका भी होती थी तो वह गुरु जी से पूछ लेते थे।

गुरु गोबिंद सिंघ जी ने गुरु तेग बहादर की वाणी रागों अनुसार गुरु ग्रंथ साहिब में शामिल कर ली। यह जो बीड़ तैयार हुई, इसे दमदमी बीड़ कहा जाता है। जब गुरु गोबिंद सिंघ जी नांदेड़ को जाने लगे तो वे दमदमा साहिब वाली बीड़ अपने साथ ले गए। दूसरी बीड़ जो बाबा दीप सिंघ ने तैयार की वह दमदमा साहिब में ही रही और बाबा दीप सिंघ ने इसकी चार प्रतिलिपियाँ और तैयार कीं। बाबा दीप सिंघ द्वारा तैयार की गई ये प्रतिलिपियाँ चार तख्तों पर मौजूद हैं। जब बीड़ तैयार हो गई तो गुरु जी ने भाई मनी सिंघ की जिम्मेदारी लगा दी कि वे संगत को गुरु ग्रंथ साहिब के अर्थ समझाया करें। भाई मनी सिंघ काफी समय अर्थ समझाते रहे।

जब गुरु जी बहादर शाह को मिलने के लिए दिल्ली चले गए तो उन्होंने भाई मनी सिंघ एवं चार अन्य सिक्खों को अमृतसर जाने का आदेश किया। अमृतसर आकर भाई मनी सिंघ दीवान लगाते और वाणी के अर्थ समझाते। इस तरह भाई मनी सिंघ की गुरु ग्रंथ साहिब के

अर्थों की सम्प्रदाई टकसाल का आरम्भ हुआ। भाई मनी सिंघ श्री हरिमन्दिर साहिब में मुख्य ग्रंथी की जिम्मेदारी के साथ गुरुवाणी के अर्थ भी करते रहे।

आप द्वारा अर्थ पढ़ने वाले विद्वान सिक्खों ने इस सम्प्रदाई अर्थों की टकसाल को जारी रखा। तदुपरांत इसकी कई अन्य शाखाएँ भी बन गईं। इसकी दो प्रमुख शाखाएँ बनीं। एक शाखा संत सुन्दर सिंघ भिंडरावालों ने कायम की और दूसरी शाखा संत अमीर सिंघ गली सत्तोवाली ने चलाई। जहाँ संत सुंदर सिंघ भिंडरावालों के मुख्य चेले संत गुरबचन सिंघ भिंडरावाले बहुत बड़े विद्वान हुए हैं, वैसे ही संत अमीर सिंघ जी के चेले संत कृपाल सिंघ बड़े ज्ञानी हुए हैं। उन्होंने श्री गुरु ग्रंथ साहिब का दस जिल्दों में टीका लिखा है और अन्य प्रमुख वाणियों के टीके भी किए हैं। भाई मनी सिंघ ने दसम ग्रंथ की वाणी को एकत्र करके एक ग्रंथ के रूप में संकलन करके उसे दसम ग्रंथ का नाम दिया। इस तथ्य का पता हमें भाई मनी सिंघ द्वारा माता सुंदरी जी को लिखी चिट्ठी से लग जाता है। यह बीड़ भाई मनी सिंघ के आदेशानुसार भाई शीहा ने दिल्ली में 1711 ई. को लिखनी आरंभ की थी और इसकी समाप्ति साल 1712 ई. को हुई। यह बीड़ अफगानिस्तान के प्रसिद्ध शहर काबुल में भाई गुरदास जी के गुरुद्वारे में सुरक्षित पड़ी है।



दीवान लखपत राय

अमृतसर नगर पर सख्ती करने और सरोवर की रक्षा के लिए दीवान लखपत राय को अमृतसर का हाकिम नियुक्त किया गया। वह बड़ा जालिम और निर्दयी था।

पद संभालते ही उसने नगर में यह हुक्म कर दिया कि कोई भी व्यक्ति सिक्खों को पनाह न दे। उसने फौजदार को हुक्म दिया कि जो भी सिक्ख स्नान करने आए उसे मौके पर ही मार दिया जाए।

पर फिर भी सिक्ख स्नान करने आते रहते थे। एक बार एक सिक्खों का जत्था घोड़ों पर सवार होकर अमृतसर आया। उस जत्थे को पता लगा था कि लखपत राय ने दरबार साहिब पर अधिकार कर लिया है और दरबार साहिब को ताले लगा दिए हैं और सिक्ख मर्यादा को भंग कर दिया गया है।

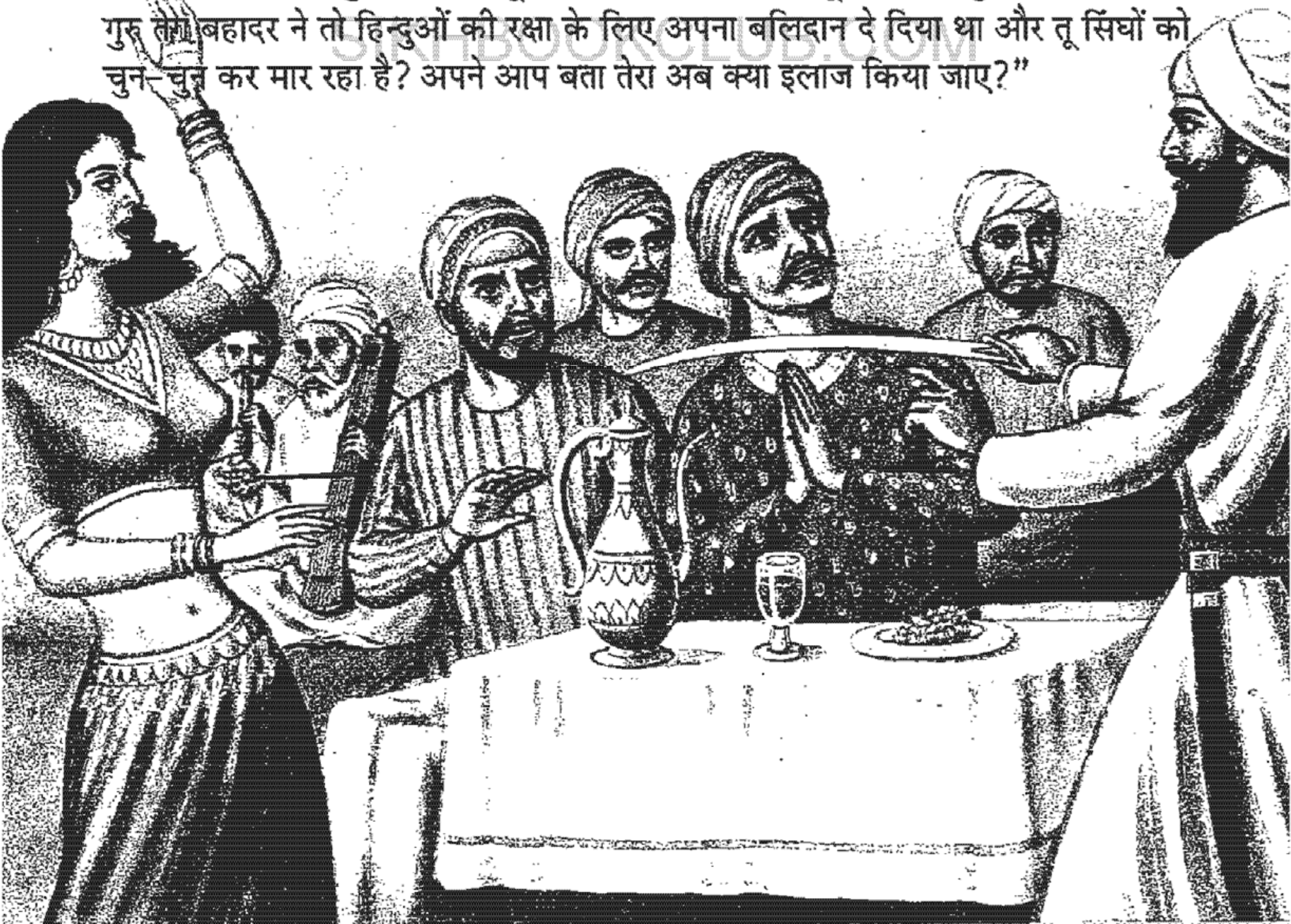
जत्थेदार कुछ साथियों को लेकर भाई मनी सिंघ के आवास पहुँच गया। भाई मनी सिंघ के आवास पहुँच कर उसे पता लगा कि दीवान लखपत राय लोगों पर बहुत अत्याचार कर रहा है। रात को शराब का दौर चलता है, मुजरा होता है और नगर में से कुछ लड़कियाँ भी बलपूर्वक उठाकर लाई जाती हैं। भाई मनी सिंघ ने बताया, "हमारे आवास में पढ़ रहे एक विद्यार्थी की बहन को भी आज उठाकर ले गए हैं, पर उसका अब तक कोई पता नहीं लगा। कल दो सिंघ स्नान करने आए थे तो उनकी हत्या करके लाशों को पेड़ों से लटकाया है। नगर में लोग बहुत सहमे हुए हैं और कुछ तो नगर छोड़कर बाहर जा रहे हैं। अगर इस तरह चलता रहा तो नगर बर्बाद हो जाएगा।" जत्थेदार ने कहा, "हमारे जत्थे में दो सौ सिंघ हैं, किसी ढंग से हम लखपत राय को तो खत्म कर सकते हैं।" पर भाई मनी सिंघ ने असहमति व्यक्त करते हुए कहा, "यह तो सीधा आत्मघात होगा, दस हजार की शस्त्रबद्ध फौज के साथ दो सौ बंदों का क्या मुकाबला?" पर वह सिंघ कहने लगा, "हम बंदे नहीं सिंघ हैं, एक सिंघ सवा लाख से मुकाबला कर सकता है। भाई मनी सिंघ ने उस सिंघ की बात मान ली और अपने दो पुत्रों व तीन सिंघों को उनका नेतृत्व करने एवं स्थिति बताने के लिए भेज दिया ताकि वार करके भागने के लिए कोई सुरक्षित रास्ता ढूँढ सकें।

उसने जत्थेदार को समझा दिया कि रात के नौ बजे हमला करना उचित होगा। रात के आठ बजे वे मदिरापान शुरु कर देते हैं और वेश्याएँ नचाने लग जाते हैं। उस समय उसके पास खास-खास आदमी ही होते हैं। शेष फौज नगर में और दरबार के इर्द पहरा दे रही होती है। आप घोड़ों को किसी गुप्त स्थान पर बाँध जाना और फिर भागकर घोड़ों पर सवार होकर चंपत हो जाना।

उस सिंघ को भाई मनी सिंघ की बात पसंद आई। भाई मनी सिंघ के पाँच सूरमे भी उनके साथ मिल गए। जिस लड़की को उस दिन लखपत राय के आदमी उठाकर लाए थे, उसके भाई धर्मपाल ने भी उनके साथ जाने की जिद की। भाई मनी सिंघ ने उसे अन्य सिंघों के साथ

भेज दिया। सिंघ पेड़ों के झुण्ड में अपने घोड़े बाँध आए और हथियार लेकर भाई गुरबख्श सिंघ और भाई चित्र सिंघ के पीछे चल दिए। भाई मनी सिंघ के पुत्रों को लखपत राय के तम्बू का पता था। जब वे रात के अन्धेरे में तम्बू के पास पहुँचे तो उन्होंने संगीत यंत्रों की ध्वनि सुनी। साथ ही साथ कुछ गाने की आवाज भी आई। वे समझ गए कि यही दीवान लखपत राय का तम्बू है। सिंघों ने मिनटों में बाहर खड़े पहरेदारों को दबोच लिया। जब वे भीतर गए तो उन्होंने देखा लखपत राय पलंघ पर बैठा मदिरापान कर रहा था। भीतर शमादान जग रहे थे। चित्र सिंघ ने इशारा किया कि वही लखपत राय है। जब लखपत राय ने शोर मचाने की कोशिश की तो जत्थेदार ने कृपाण उसकी छाती पर रखते हुए कहा, "लखू! अगर शोर मचाया तो यह तलवार तेरी छाती में से निकल जाएगी। हम तुझे मारने नहीं आए, अपितु वे लड़कियाँ लेने आए हैं जिन्हें तू उठाकर लाया है।"

लखपत राय ने उसी समय लड़कियाँ उनके हवाले करने का इशारा किया। विद्यार्थी धर्मपाल ने अपनी बहन को पहचान लिया और वह लड़की भागकर उसके पास आ गई। अन्य लड़कियाँ भी आ गईं। जत्थेदार ने उस विद्यार्थी को इशारा किया कि वह लड़कियाँ लेकर चला जाए। उनकी हिफाजत करने के लिए उसने कुछ सिंघ भी साथ दिए। फिर वह सिंघ चिल्लाकर बोला, "गुरु के घर में तू वेश्याएँ नचा रहा है? हिन्दू होकर भी तुझे शर्म नहीं आई! गुरु तेग बहादर ने तो हिन्दुओं की रक्षा के लिए अपना बलिदान दे दिया था और तू सिंघों को चुन-चुन कर मार रहा है? अपने आप बता तेरा अब क्या इलाज किया जाए?"



वैसाखी मनाने की योजना

फिर जत्थेदार कहने लगा, "लखू! तुझे हमने इतनी जल्दी नहीं मारना है, अपने बड़े जत्थेदार के सामने पेश करना है।" जत्थेदार ने सिंघों को इशारा किया कि वे लखपत राय को पकड़कर तम्बू से बाहर ले जाएँ। फिर उसने अपने सिंघों को इशारा किया कि वे दोनों तम्बुओं के अफसरों एवं वादकों का वध कर दें। सिंघों ने कुछ मिनटों में ही दोनों तम्बू साफ कर दिए। इससे पूर्व कि कोई चिल्लाता उसका सिर धड़ से अलग होता था। फिर जब सिंघ तम्बू से बाहर निकले तो बाहर घोर अंधेरा था। लखपत राय को जब दोनों सिंघ उसकी पगड़ी से बाँधने लगे तो वह हाथ छुड़ाकर भाग गया। वह इतनी जोर से भागा कि उसे पता भी न लगा कि अगली तरफ सरोवर था। दुखभंजनी बेरी के पास जाकर वह सरोवर में गिर गया। फौजियों ने समझा कि कोई सिक्ख स्नान करने के लिए आया है। इसलिए वह ध्वनि वाली दिशा की ओर भाग गए। सरोवर में से जब उन्होंने यह आवाज सुनी, "बचाओ, बचाओ" तो उन्होंने भी सरोवर में छलांगें लगा दीं और एक डूबते आदमी को बाहर निकाल लाए। एक फौजी कड़क कर बोला, "कौन है तू, सिक्ख तो लगता नहीं।"

लखपत राय के पेट में काफी पानी भर गया था। इसलिए उससे बात नहीं थी हो रही। वे उसे उठाकर लखपत राय के तम्बू की ओर ले गए ताकि लखपत राय को अपनी वीरता के बारे में बता सकें और उस आदमी का चेहरा भी देख सकें।

परन्तु जब वे तम्बुओं के बाहर जाकर ठहरे तो भीतर से गाने-बजाने की ध्वनि नहीं आ रही थी। लखपत राय से डरते वे तम्बू में भी नहीं जा सकते थे। इसलिए जब उन्होंने बाहर पड़े पहरेदारों की जांच की तो वे देखकर दंग रह गए कि वे रक्त में लथपथ मृत पड़े थे। अब उन्होंने तुरन्त तम्बू में दृष्टि की और मोमबत्तियों की रोशनी में देखकर दंग रह गए कि तम्बू के भीतर वाले सभी व्यक्ति मृत पड़े हैं। एक फौजी कहने लगा, "देखो, दीवान जी इनके बीच में ही हैं?"

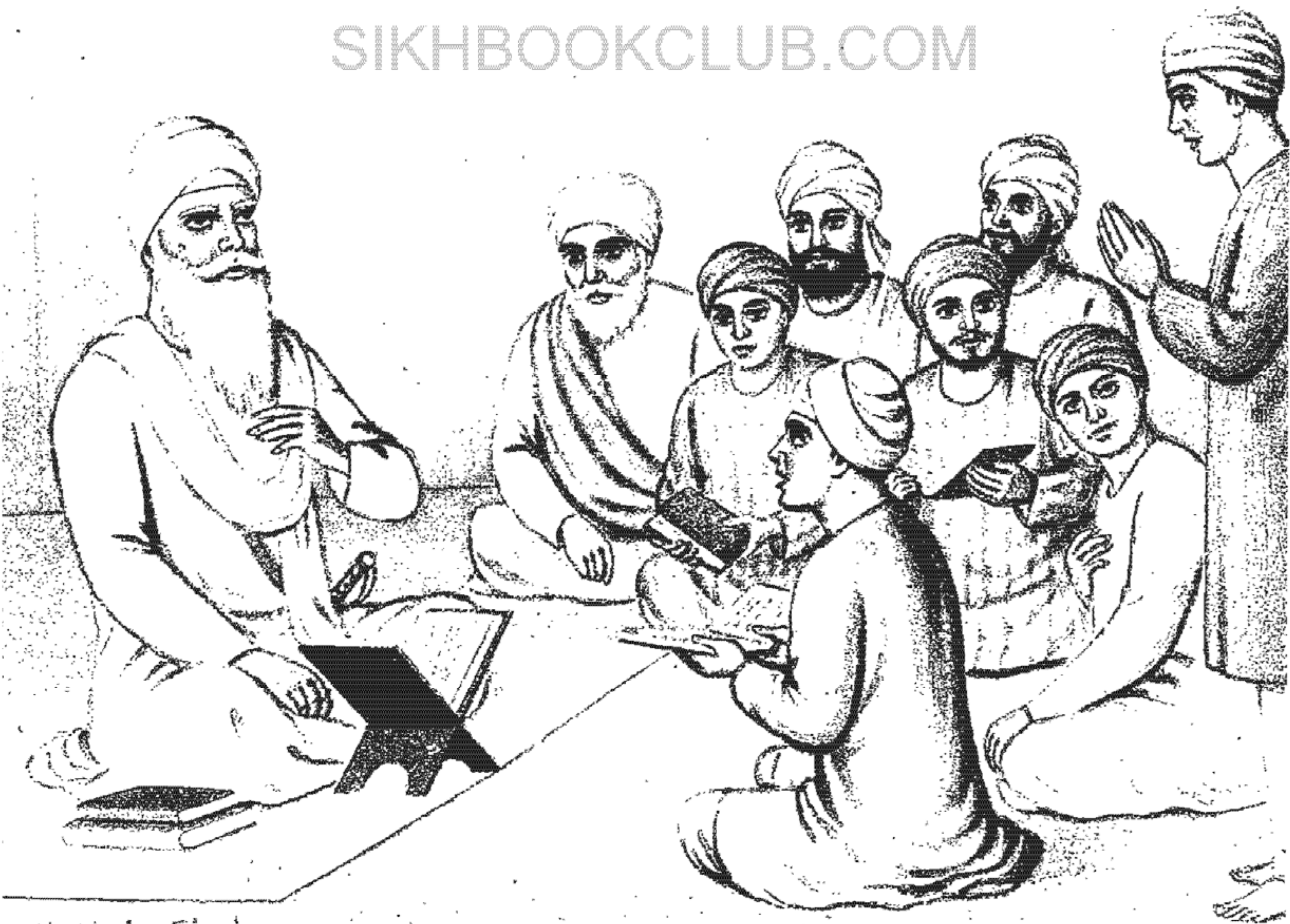
परन्तु उतनी देर को बाहर पड़ा दीवान बोल पड़ा और कहने लगा, "मैं यहाँ हूँ, मेरी मदद करो! मुझे तुरंत कोतवाल अब्दुल रज़ाक के घर ले चलो और किसी हकीम को भी बुलाकर लाओ! शेष, सिक्खों का पीछा करो वे पैदल ही थे और यहाँ कहीं निकट ही होंगे।"

फौजी उसे अब्दुल रज़ाक के घर ले गए, उसके पेट में से फालतू पानी निकाला गया और हकीम ने उसे औषधि दी। पर लखपत राय को अब चैन कहाँ था? वह बहुत डरा और सहमा हुआ था। वह यह शुक्र कर रहा था कि वह बच गया था, सिंघ तो उसके सभी साथियों को मौत के घाट उतार गए थे।

फौज ने सिंघों की बड़ी तलाश की पर उनका कोई पद्चिन्ह न मिल सका। लखपत राय इतना डर गया था कि वह अमृतसर छोड़कर लाहौर चला गया। जब कुछ माह बीत गए और

दीवान लखपत राय के जाने से अमृतसर में कुछ शांति हुई तो भाई मनी सिंघ के विद्यार्थियों ने विनती की कि पहले की तरह दीवाली, वैसाखी का मेला लगना चाहिए। इस बहाने सिंघों के दर्शन हो जाएँगे। इस कार्य हेतु भाई मनी सिंघ, भाई सूरत सिंघ सूरी व भाई सुबेग सिंघ जकरिया खाँ को मिले। उन्होंने पाँच हजार रुपए देना तय करके लाहौर के सूबे जकरिया खाँ से वैसाखी का मेला मनाने की स्वीकृति ले ली।

वास्तव में जकरिया खाँ ऐसा मौका चाहता था जहाँ वह इकट्ठे हुए सिक्खों का सफाया कर सके। दीवान लखपत राय की कहानी उसके सामने थी। यदि सिक्खों का एक जत्था दस हजार फौज की परवाह न करता हुआ लखपत राय को खत्म कर सकता था तो उसे भी खत्म करने में उनको मुश्किल नहीं थी। उसने सिक्खों को मारने के लिए वनों, पहाड़ों एवं पोखरों में अपने फौजी भेजे थे किन्तु सिक्खों की अपेक्षा उसकी फौज का अधिक नुक्सान हुआ था। परन्तु जब सिक्खों के जत्थे दरबार साहिब में इकट्ठे होंगे तो उनको घेर कर मारना बहुत सरल था। उसने इस बात के बारे में भी विचार कर लिया कि सिक्ख मारे या पकड़े जाएँगे तो मेला नहीं लगेगा तो भाई मनी सिंघ रकम भी नहीं दे सकेगा जिससे उसको मारना भी सरल होगा।



गिरफ्तारी

वैसाखी का मेला लगने में अभी पाँच माह रहते थे, इसलिए जकरिया खाँ ने पूरी तैयारी शुरु कर दी। जकरिया खाँ औपचारिक तौर पर सिक्खों से बड़ी नरमी से पेश आने लगा। उसने दरबार साहिब के ताले भी खुलवा दिए और भाई मनी सिंघ को रहित मर्यादा चलाने की अनुमति भी दे दी। सरोवर के बाहर फौज का पहरा लगा होने के कारण कोई भी सिक्ख स्नान करने नहीं आता था, पर अगर कोई भूला भटका नगर वासी आ भी जाता था तो उसे डांट डपट कर छोड़ दिया जाता था। कोमल हृदय के मालिक भाई मनी सिंघ यह समझ गए कि जकरिया खाँ ने ठीक ही अपना बर्ताव बदल लिया था। जो स्वयं अच्छा हो वह अन्यों को भी अच्छा ही समझता है।

जब वैसाखी का त्योहार निकट आया तो भाई मनी सिंघ ने सब सिक्ख जत्थों को संदेश भेज दिए और साथ यह भी कह दिया कि जकरिया खाँ का बर्ताव अब बहुत बदला हुआ है। पर जब वैसाखी का समय निकट आया तो लाहौर के सिंघों ने भाई मनी सिंघ को आकर बताया कि इस बार मुगलों ने बहुत बड़ी तैयारी की है और वे धोखे से सिक्खों को मारना चाहते हैं।

भाई मनी सिंघ ने फिर सिंघों को संदेश भेज दिए कि वे मेले पर न आएँ, क्योंकि इस बार जकरिया खाँ बड़ी चाल से सिक्खों को खत्म करने वाला है।

वैसाखी पर कोई सिक्ख भी न आया। जब जकरिया खाँ को पता लगा कि उसकी सारी योजना विफल हो गई है तो वह बहुत क्रोधित हुआ। उसने अपने कुछ सिपाही भाई मनी सिंघ से पाँच हजार रुपए वसूलने या अगर वह रकम न दे तो गिरफ्तार करके लाने की हिदायत करके भेज दिए। अमृतसर के कोतवाल को भी सख्ती से हिदायत कर दी कि वह हरिमन्दिर साहिब को फिर ताले लगा दे और दरबार साहिब के इर्द-गिर्द पहरा और सख्त कर दे।

पाँच सवार अमृतसर के कोतवाल एवं पुलिस सहित भाई मनी सिंघ को मिलने के लिए आ गए।

"कैसे आना हुआ?" भाई मनी सिंघ ने फौजी सवारों एवं कोतवाल को कहा।

लाहौर से आया बड़ा अफसर कहने लगा, "हमें नवाब साहिब ने भेजा है। आपने वैसाखी का मेला मनाने के लिए उनको पाँच हजार रुपए देना तय किए थे। इसलिए हम पाँच हजार की रकम वसूलने के लिए आए हैं।"

उसकी बात सुनकर भाई मनी सिंघ को बड़ा दुख हुआ। पर वे शांतचित्त बोले, "जब मेला ही नहीं लगने दिया गया तो पैसे किस चीज के? यहाँ तो एक यात्री भी नहीं आया, न ही कोई चढ़ावा चढ़ा है। हम तो साधुजन हैं। हमारे पास रकम कहाँ से? अगर मेला लगता, चढ़ावा चढ़ता तो हम सहर्ष रकम अदा करते।"

पर अफसर कहने लगा, "हमें इस में बहस करने की आवश्यकता नहीं। हमें हुक्म हुआ है कि पाँच हजार रुपए लेकर आओ, अन्यथा भाई मनी सिंघ को गिरफ्तार करके लाओ।" जब भाई मनी सिंघ के भाई जगत सिंघ एवं पुत्र गुरबख्श सिंघ एवं चित्र सिंघ तथा अन्य साथियों ने यह सुना तो वे तत्काल आवेश में आ गए और कहने लगे, "यह कैसा इन्साफ है? मेला लगने नहीं दिया, पाँच हजार माँगने आ गए हो! यदि हमारे पास पाँच हजार नहीं तो हमारे बुजुर्ग को कैदी बनाने लगे हो!"

भाई मनी सिंघ के साथियों की यह बात सुनकर अफ़सर बड़ा क्रोधी हो गया और कहने लगा, "आपने हकूमत से गद्दारी की है, इस जुर्म में आप सभी को गिरफ्तार किया जाता है।" फिर उसने कोतवाल को कहा कि भाई मनी सिंघ और उसके सभी साथियों को गिरफ्तार कर लिया जाए।" जब नगर के लोगों को यह पता लगा तो वे भाई मनी सिंघ के पास आए और कहने लगे, "पाँच हजार रुपए की क्या बात है? हम सभी नगरवासी इकट्ठे करके दे देते हैं। इस संत महाराज को इस उम्र में क्यों कैद करते हो?"

पर भाई मनी सिंघ कहने लगे, "हमने किसी से पैसे इकट्ठे करके इनको नहीं देने। हमने झूठ के आगे झूठे नहीं बन जाना। हमारा सरकार से समझौता हुआ है कि छः दिन मेला लगने दिया जाएगा तो हम पाँच हजार रुपए दे देंगे पर इन्होंने इसी मेले के बहाने सभी सिक्खों को पकड़ने अथवा मारने का फैसला कर लिया था। हमें अपने प्राणों की परवाह नहीं, परन्तु हमें यह खुशी जरूर हुई है कि हम प्यारे सिंघों के प्राण बचा सके हैं।"



जकरिया खाँ की कचहरी में

कचहरी में बड़े भारी शरीर का ऊँचा लम्बा जवान जकरिया खाँ ऊँचे स्थान पर शाही कुर्सी पर बैठा हुआ था। उसके पास एक तरफ दीवान लखपत राय और दूसरी तरफ काजी एवं कोतवाल बैठे हुए थे। जब भाई मनी सिंघ को कटघरे में खड़ा किया तो उस समय एक सूफी फकीर जो साईं मियां मीर के शागिर्दों में से था, भी कचहरी में आ गया। जकरिया खाँ उस फकीर को जानता था इसलिए उसके आदर के लिए वह उठकर खड़ा हो गया और कोतवाल को इशारा करके साईं जी हेतु कुर्सी मँगवाई। पर साईं जी ने कुर्सी पर बैठने से इन्कार कर दिया और कहने लगा, "मैं भी अन्य लोगों की तरह महात्मा मनी सिंघ के दर्शन ही करने आया हूँ, इसलिए अल्लाह के पीर के खड़े होते मैं कैसे बैठ सकता हूँ?"

यह बात सुनकर जकरिया खाँ को गुस्सा तो आया पर वह शांत रहा। पर लखपत राय से रहा न गया और वह कहने लगा, "इस फकीर को कचहरी में से बाहर निकाल दो।" जब कोतवाल उठने लगा तो जकरिया खाँ ने उसे रोक दिया। साईं फकीर फिर बोल पड़ा, "इस काफिर को क्या पता कि अल्लाह एवं अल्लाह के बंदे क्या होते हैं! यह मूर्तियों के आगे ही माथे रगड़ने वाला है।"

लखपत राय यह सुनकर दिल में बड़ा दुखी हुआ। पर वह कुछ बोल न सका। फिर जकरिया खाँ ने कहा, "कार्रवाई शुरु करो।" लखपत राय उठकर खड़ा हो गया और भाई मनी सिंघ को संबोधित करता हुआ बोला, "आपने मेला लगाने का पाँच हजार रुपए कर देना माना था। पर आपने वायदा पूरा नहीं किया।"

भाई मनी सिंघ बड़ी शान से बोले, "देख लखपत राय वायदा मैंने पूरा नहीं किया कि तेरी हकूमत ने या तूने जो अमृतसर का हाकिम बना था? आप मेले की बात करते हो? मेला तो आपने लगने ही नहीं दिया, इसके विपरीत आप चाल से इकट्ठे हुए सिक्खों को मारना चाहते थे। यह कैसी हकूमत है जो अपनी प्रजा की रक्षा की जगह उसकी हत्या करती है!"

"किस प्रजा की बात करते हो?" लखपत राय बोला, "क्या सिक्ख हमारी प्रजा हैं? वे तो हमारे वैरी हैं और वैरी को मारना कोई पाप नहीं होता।"

"सिक्ख किसी निर्दोष को नहीं मारते, वे गरीबों एवं मजलूमों की रक्षा करते हैं।" भाई मनी सिंघ ने उत्तर दिया। "पर मुझे वे सोए हुए को मारने आ गए, मैंने उनका क्या बिगाड़ा था?" लखपत राय बोला। "तूने कुछ बिगाड़ा ही नहीं था?" भाई मनी सिंघ ने उसे कहा, "तूने तो अमृतसर के सिंघों को ढूँढ–ढूँढ कर मारा, दरबार साहिब की परिक्रमा में मदिरापान करता था, वेश्याएँ नचाता था और नगर में जो भी सुन्दर लड़की देखता था, उठवा कर ले आता था। क्या तूने उन लड़कियों के बारे में कभी पूछा था कि वे किस फिरके से संबंधित थीं। जब सिक्खों ने हमला किया, "कितनी लड़कियाँ तेरे कब्जे में निकली थीं।"

यह बातें सुनकर लखपत राय लाला पीला हो गया और कड़क कर बोला, "बकवास बंद कर!" साईं फकीर कहने लगा, "सच हमेशा कड़वा होता है, एक पाकदामन इन्सान के लिए ऐसे लफ्ज बोलते तुझे शर्म नहीं आती?"

फिर भाई मनी सिंघ ने ऊँची कुर्सी पर बैठे नवाब जकरिया खाँ की ओर बड़े ध्यान से देखा। जकरिया खाँ भाई मनी सिंघ का ऐसा ताकना सहन न कर सका और बोला, "मेरी तरफ क्या देख रहे हो?" भाई मनी सिंघ कहने लगे, "मैं यह देख रहा हूँ कि इन्साफ की कुर्सी पर बैठा व्यक्ति इन्सान है कि शैतान। इस कुर्सी पर बैठने वाला कभी इन्साफ नहीं करता।"

"बकवास बंद कर!" लखपत राय फिर कड़का। भाई मनी सिंघ भी उतने ही जोर से बोला, "ओए लक्खू! मैं तुझसे डरता नहीं। तुम क्या कर सकते हो? अधिक से अधिक मुझे कत्ल ही कर दोगे। यह कोई नई बात नहीं। यहाँ जो भी आया, कत्ल हुआ।"

मुकद्दमे का फैसला पहले ही लिखकर रखा हुआ था। जकरिया खाँ कहने लगा, "मेला लगाने के लिए भाई मनी सिंघ महंत गुरुद्वारा गुरु का चक्क ने पाँच हजार रुपए देने का वायदा किया था, पर रकम समय पर अदा नहीं की। इसलिए सूबेदार लाहौर का हुक्म है कि या पाँच हजार रुपए अदा करे, या इस्लाम दीन में आ जाए। यदि यह दोनों बातें परवान न हों तो कत्ल किया जाए।"

यह फैसला सुनकर अदालत में सन्नाटा छा गया। साईं पीर कहने लगा, "धिक्कार है इस फैसले पर!"



शहादत

जकरिया खाँ का फैसला सुनकर भाई मनी सिंघ हँस पड़े और कहने लगे, "खान! इससे कोई बड़ी सजा नहीं? सिंघ तो अब तक खुशी खुशी शहीदियाँ देते आए हैं। बाबा बंदा बहादर और उसके सिंघ एक दूसरे से पहले शहीदियाँ देने के लिए तैयार थे। तुमने अब सिक्खों को चुन-चुन कर मारा है, उनके सिरों के मूल्य डाले हैं, पर क्या सिंघ खत्म हो गए हैं? वे अभी भी जिंदा हैं और किसी समय आपका खात्मा करके यहाँ लोकतंत्र भाव सिक्ख राज कायम करेंगे। आप सिक्ख राज देख नहीं सकेंगे, पर आपके पुत्र अवश्य देखेंगे। मैं भी नहीं देख सकूँगा, पर मुझे भविष्य दिखाई देता है।"

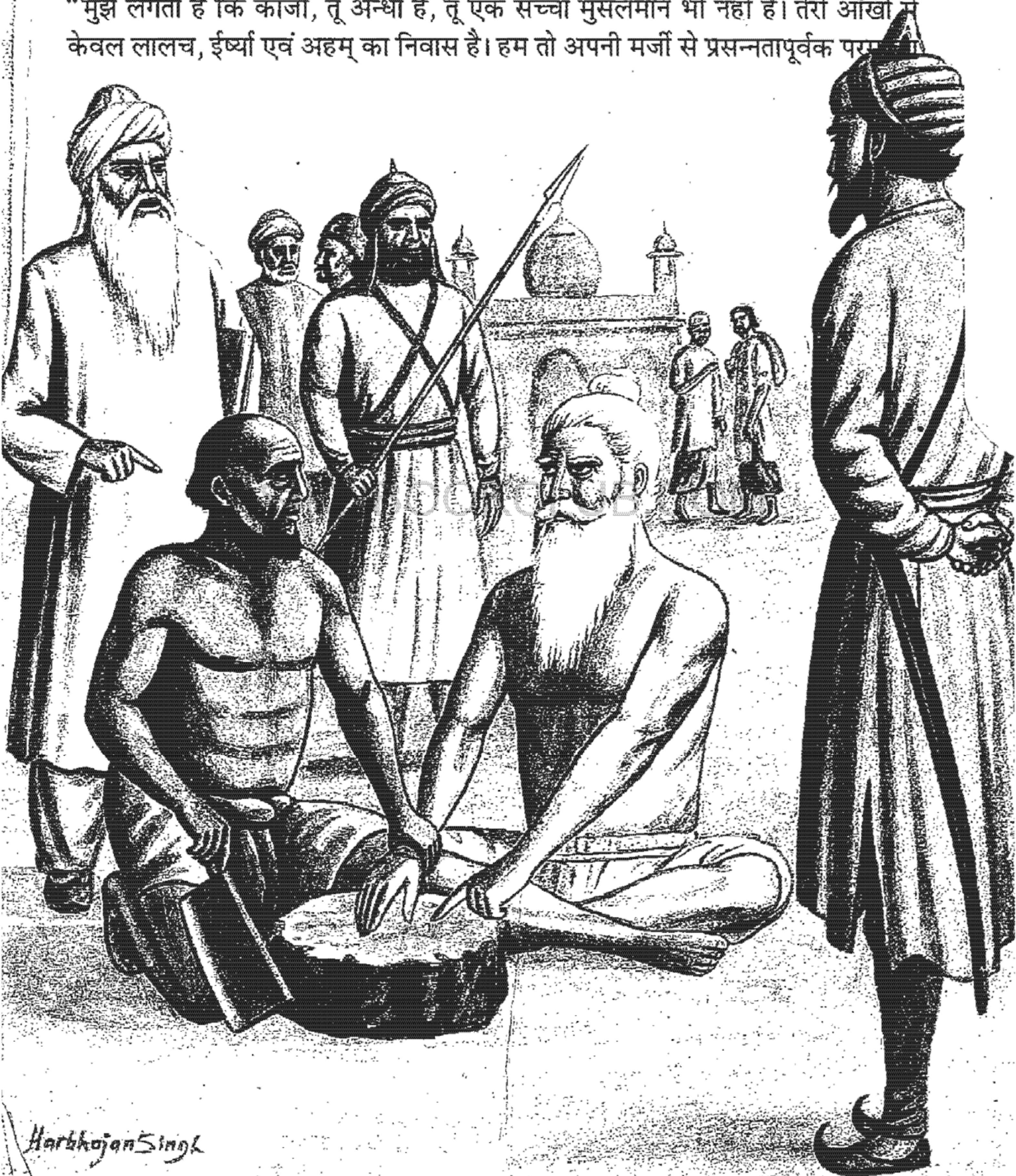
जकरिया खाँ भाई मनी सिंघ की बात सुनकर बौखला गया। वह कुछ और समय कचहरी में बैठना नहीं चाहता था। वह आग बबूला होकर बोला, "इसकी बोटी बोटी करके कत्ल किया जाए!" यह कहकर वह उठकर चला गया। फिर काजी की बारी आई। वह भाई जी के पास आकर कहने लगा, "आपको जोड़ जोड़ कटवा कर मरने की क्या आवश्यकता है? आपके पास अन्य दो रास्ते भी तो हैं। पाँच हजार रुपए अदा कर दो या सच्चा मजहब इस्लाम परवान कर लो, आपकी जान बच सकती है।"

भाई मनी सिंघ कहने लगे, "मैंने पाँच हजार रुपए किसलिए अदा करने हैं? क्या आपने सिक्खों को कत्ल करने की यह सारी चाल नहीं बनाई थी? शुक्र है मुझे समय पर पता लग गया। आपके इस कपट एवं फरेब की मैं कीमत अदा करूँ? यह कभी नहीं हो सकता। दूसरा, आप कहते हो मैं मुसलमान बन जाऊँ। मैं कैसे मुसलमान बन सकता हूँ? मेरे पास अपना तो कुछ भी नहीं। मेरा शरीर, मेरी आत्मा सब मेरे गुरु की है, यह मैं तेरह साल की उम्र में ही गुरु को सौंप चुका हूँ। किसी की वस्तु को मैं अन्य किसी को कैसे दे सकता हूँ? इसलिए मुझे बार बार कहने की आवश्यकता नहीं। न मैंने महसूल अदा करना है, न मैंने इस्लाम में आना है। मुझे तो शहीदी चाहिए, चाहे जोड़ जोड़ काटो चाहे कोई अन्य ढंग इस्तेमाल करो।"

आषाढ़ शुदि पंचमी सम्वत् 1791 को भाई मनी सिंघ को नौलखा चौक में ले गए। वहाँ पहले ही हजारों स्त्री-पुरुष भाई मनी सिंघ के दर्शन करने के लिए इकट्ठे हुए थे। सिपाही भीड़ को धक्के देकर दूर-दूर कर रहे थे। सारी खलकत के चेहरे मुरझाए हुए थे। सब की आँखों में आँसू थे, पर वे आँसू बाहर नहीं आ रहे थे। उनके आँसू भी सहम कर सूख गए थे।

भाई मनी सिंघ जी को मैदान के मध्य बिठा दिया गया। बैठते समय भाई मनी सिंघ ने कहा, "मेरी जंजीरें खोल दो, मैं भागने वाला नहीं, मैं स्वयं मरने के लिए आया हूँ। मैं अपने देश, अपनी कौम के लिए खुशी-खुशी मरने को तैयार हूँ। मैं मौत से डरता नहीं, क्योंकि मौत के बाद ही 'पूर्ण परमानंद' की प्राप्ति होती है। मैं भाग्यशाली हूँ कि मैं अपने धर्म और कौम के लिए शहीद हो रहा हूँ।"

जब जंजीरें खोल दीं तो फिर काजी पास आया और कहने लगा, "हे फकीर! अभी भी वक्त है, इस्लाम कबूल कर ले। मुफ्त में अपनी जान मत गंवा।" भाई मनी सिंघ कहने लगे, "मुझे लगता है कि काजी, तू अन्धा है, तू एक सच्चा मुसलमान भी नहीं है। तेरी आँखों में केवल लालच, ईर्ष्या एवं अहम् का निवास है। हम तो अपनी मर्जी से प्रसन्नतापूर्वक परमात्मा



के घर जा रहे हैं, पर तू बीच में आकर रुकावट डाल रहा है। इन जल्लादों से दूर हो जा।"

काजी यह बात सुनकर पीछे हट गया। फिर जल्लाद निकट आ गए। भाई मनी सिंघ उनको कहने लगे, "जैसे आपको हुक्म हुआ है, जोड़ जोड़ ही काटना है।"

फिर वह अन्तर्ध्यान हो गए और अपनी वृत्ति उन्होंने प्रभु से लगा ली। जल्लाद ने पहले उंगलियों के पोरों से काटना आरम्भ किया पर भाई मनी सिंघ ने चीत्कार तक न किया। उनकी वृत्ति प्रभु से लगी हुई थी। इसलिए वे किसी प्रकार के दुख अथवा दर्द से विशेषकर शांतचित्त बैठे हुए थे। जब हाथ पैर काटे गए तो जल्लादों ने उनका शीश उतार दिया। भाई मनी सिंघ के पंचभूत शरीर में से पवित्र आत्मा निकल कर परम आत्मा में समा गई।

भाई मनी सिंघ की शहादत के बाद उनके भाई जगत सिंघ एवं दोनों पुत्रों गुरबख्श सिंघ और चित्र सिंघ को शहीद कर दिया गया। दूसरे सिंघ जो उनके साथ गिरफ्तार करके लाए गए थे, उन में से भाई गुलजारा सिंघ की उल्टी चमड़ी उतारी गई और भूपत सिंघ की आँखें निकालकर चरखी पर चढ़ाया। जो अन्य सिंघों को यातनाएँ देकर शहीद किया गया, वे थे – मोहकम सिंघ, चैन सिंघ, कीरत सिंघ, आलम सिंघ, औलिया सिंघ, संगत सिंघ और कान्ह सिंघ।

कुछ लोगों का विचार है कि भाई मनी सिंघ ने गुरु ग्रंथ साहिब की वाणी गुरु वार अंग छेद की थी इसलिए संगत ने उनको श्राप दिया था कि वे अंग-भंग कटवा कर शहीद होंगे। पर इस तथ्य में कोई सच्चाई नहीं है। यह बात ठीक है कि भाई मनी सिंघ ने आदि ग्रंथ एवं दसम ग्रंथ का इकट्ठा संपादन भी किया है। इस ग्रंथ में हर गुरु साहिब की वाणी इकट्ठी कर ली गई है और एक जगह लिख दी गई है और उसे गुरु क्रमानुसार रखा गया है। गुरु तेग बहादर की वाणी के बाद गुरु गोबिंद सिंघ की सारी वाणी दी गई है और बाद में भगतों की वाणी दी गई है। हर भगत की पूरी वाणी एक स्थान इकट्ठी कर दी गई है। जहाँ आदि ग्रंथ में महला 1, महला 2 आता है, वहाँ इस ग्रंथ में पातशाही 1, 2, 3, 4, 5, 9 एवं 10 लिखा गया है। इस बीड़ में कुछ अधिक वाणियाँ भी दर्ज हैं। इस बीड़ के इतिहास के बारे में लिखते हैं कि यह बीड़ पहले भाई मगन सिंघ ग्रंथी, तख्त श्री हजूर साहिब के पास होती थी। परन्तु उन से राजा गुलाब सिंघ सेठी लाहौर वाले छापने के लिए ले आए। इसकी छपी प्रतिलिपि तो कोई नहीं मिलती पर वह हस्तलिपि उनके वारिसों के पास दिल्ली में मौजूद है।

☆☆